गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका अक्टूबर-2019 | अंक 1

गुरुत्व ज्योतिष

नवरात्र विशेष

NOT FOR SALE

Free Edition (Nonprofit Publications)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
अक्टूबर 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग
गुरुत्व कार्यालय
92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते॥

नवरात्र अर्थात माँ दुर्गा की उपासना में समर्पित नौ रात। **दुर्गा का अर्थ हैं,** दुर्गति नाशिनी हैं, जगत्की उत्पत्ति, पालन एवं संचालन तीनों व्यवस्थाएं जिस शक्ति के आधीन सम्पादित होती है वह जगत जननी माँ आदिशक्ति भगवती हैं।

माँ दुर्गा के रुप अनंत हैं, लेकिन देवी को प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा के नाम से जाना जाता हैं। आदि शक्ति माँ दुर्गा समग्र लोक में अपनी कृपा और करूणा वर्षाती है, माँ दुर्गा अपने भक्तों में सद्द गुणों का विकास करके उनमें अपनी शक्ति का संचार करते हुवे संसार के समग्र प्राणियों का संचालन करती है।

नवरात्र को शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं। मार्कण्डेयपुराण के अनुशार देवी माहात्म्य में स्वयं मां जगदम्बा का वचन हैं-।

शरत्काले महापूजा क्रियतेया चवार्षिकी।

तस्यांममैतन्माहात्म्यंश्रुत्वाभक्तिसमन्वितः॥

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोधनधान्यसुतान्वितः।

मनुष्योमत्प्रसादेनभविष्यतिन संशयः॥

अर्थातः शरद ऋतु के नवरात्रमें जब मेरी वार्षिक महापूजा होती हैं, उस काल में जो मनुष्य मेरे माहात्म्य (दुर्गासप्तशती) को भक्तिपूर्वकसुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न हो जायेगा।

नवरात्र में दुर्गासप्तशती को पढने या सुनने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। सप्तशती का पाठ उसकी मूल भाषा संस्कृत में करने पर ही पूर्ण प्रभावी होता हैं।

इस वर्ष नवरात्र आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, **13 अक्टूबर** शारदीय नवरात्र आरंभ हो रहे हैं। जो अश्विन शुक्ल नवमी को समाप्त होते हैं, इन नौ दिनों देवि दुर्गा की विशेष आराधना करने का विधान हमारे शास्त्रो में बताया गया हैं। परंतु इस वर्ष 2015 प्रथमा तिथि की वृद्धि होने के कारण नवरात्र नौ दिन की जगह दस दिनो के होंगे।

नवरात्र में मां दुर्गा देवी का आह्वान, स्थापना व पूजन का समय प्रात:काल होता हैं। घट स्थापना का समय से संबंधित जानकारी इस अंक में उपलब्ध हैं। चर लग्न के चौघड़िए अथवा अभिजित काल में भी घट स्थापना की जा सकती है। शारदीय नवरात्र देवी उपासना के लिए अधिक अति उत्तम माना गया है।

नवरात्र के नौ दिनों में तीन देवियों क्रमशः पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती और देवी के नौ रुपों का कमशः शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का पूजन

किया जाता हैं।, नवरात्रे के प्रथम तीन दिन पार्वती के तीन स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं, अगले तीन दिन माँ लक्ष्मी के स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं और आखिरी के तीन दिन सरस्वती माता के स्वरुपों की पूजा की जाती हैं। उसी प्रकार नौ देवीयों को क्रमशः प्रथम दिन शैलपुत्री, द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी, तृतीय दिन चन्द्रघण्टा, चतुर्थ दिन कुष्माण्डा, पंचम् दिन स्कन्द माता, षष्ठम् दिन कात्यायिनी, साप्तम् दिन कालरात्रि, अष्टम् दिन महागौरी और नौवें दिन सिद्धिदात्री के रुप का पूजन किया जाता हैं।

नवरात्रे के नौ दिनों तक भक्त के मन में यह कौतुहल होता हैं, कि वह माता को भोग में क्या चढ़ाये, जिससे माँ शीघ्र प्रसन्न हों जाये. हिन्दू धर्म में कोई भी त्यौहार, व्रत-उपवास देवी-देवताओं को भोग, प्रसाद अर्त्पण किये बिना संपन्न नहीं होता है। नवरात्रे के नौ दिन में नौ देवियों को अलग-अलग भोग लगाने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं। पाठकों के मार्गदर्शन हेतु इसकी विस्तृत जानकारी अंक में उपलब्ध हैं।

मां दुर्गा का पूजन हिन्दू संस्कृती में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं यहीं कारण हैं की सैकड़ों वर्षो से देवी दुर्गा का पूजन छोटे-बड़े सभी प्रादेशिक क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रचलित रहा हैं। देवी दुर्गा को आद्य शक्ति भगवती का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। देवी दुर्गा की महिमा अपरंपार हैं, जो अपने भक्तों के दुःखों का नाश करने वाली, दुष्टों से रक्षा करने वाली एवं अपने भक्तों के सकल मनोरथ को सिद्ध करने वाली साक्षात देवी हैं।

नवरात्र में दस महाविद्या की उपासना विशेष लाभप्रद हैं क्योकि, दस महाविद्या को देवी दुर्गा के ही दस रूप माने जाते हैं। दसों महाविद्या में हर महाविद्या अपनी अद्वितीय शक्ति से मनुष्य के समस्त संकटों को दूर करने वाली हैं। इन दस महाविद्याओं के महत्व को विभिन्न धर्मशास्त्रों में अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण माना गया हैं।
दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से शारदीय नवरात्र की शुभकामनाएं ..

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो माँ आद्य शक्ति दुर्गा की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। माँ दुर्गा से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुसंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

प्रथम शैलपुत्री

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के प्रथम दिन मां के शैलपुत्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं।

भगवती नंदी नाम के वृषभ पर सवार हैं। माता शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल पुष्प सुशोभित हैं।

मां शैलपुत्री को शास्रों में तीनो लोक के समस्त वन्य जीव-जंतुओं का रक्षक माना गया हैं। इसी कारण से वन्य जीवन जीने वाली सभ्यताओं में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना की जाती हैं जिस सें उनका निवास स्थान एवं उनके आस-पास के स्थान सुरक्षित रहे।

मूल मंत्र:-

वन्दे वांछितलाभाय चन्दार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्।।

ध्यान मंत्र:-

वन्दे वांछितलाभायाचन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढांशूलधरांशैलपुत्रीयशस्विनीम्।
पूणेन्दुनिभांगौरी मूलाधार स्थितांप्रथम दुर्गा त्रिनेत्रा।
पटाम्बरपरिधानांरत्नकिरीठांनानालंकारभूषिता।
प्रफुल्ल वंदना पल्लवाधंराकातंकपोलांतुगकुचाम्।
कमनीयांलावण्यांस्मेरमुखीक्षीणमध्यांनितम्बनीम्।

स्तोत्र:-

प्रथम दुर्गा त्वंहिभवसागर तारणीम्। धन ऐश्वर्य दायनींशैलपुत्रीप्रणमाम्हम्।
चराचरेश्वरीत्वंहिमहामोह विनाशिन। भुक्ति मुक्ति दायनी,शैलपुत्रीप्रणमाम्यहम्।

कवच:-

ओमकार: मेशिर: पातुमूलाधार निवासिनी। हींकारपातुललाटेबीजरूपामहेश्वरी। श्रींकारपातुवदनेलज्जारूपामहेश्वरी। हुंकार पातुहृदयेतारिणी शक्ति स्वघृत। फट्कार:पातुसर्वागेसर्व सिद्धि फलप्रदा।

मां शैलपुत्री का मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को सदा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख साधनो को कमी महसुस नहीं होतीं।

नवरात्र के प्रथम दिन की उपासना से योग साधना को प्रारंभ करने वाले योगी अपने मन से 'मूलाधार' चक्र को जाग्रत कर अपनी उर्जा शक्ति को केंद्रित करते हैं, जिससे उन्हें अनेक प्रकार कि सिद्धियां एवं उपलब्धियां प्राप्त होती हैं।

***

द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के दूसरे दिन मां के ब्रह्मचारिणी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। मां ब्रह्मचारिणी तप का आचरण करने वाली भगवती हैं इसी कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया।

शास्त्रो में मां ब्रह्मचारिणी को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया हैं। शास्त्रो में ब्रह्मचारिणी देवी के स्वरूप का वर्णन पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यंत दिव्य दर्शाया गया हैं।

मां ब्रह्मचारिणी श्वेत वस्त्र पहने उनके दाहिने हाथ में अष्टदल कि जप माला एवं बायें हाथ में कमंडल सुशोभित रहता हैं। शक्ति स्वरुपा देवी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर तपस्या रत रहीं और 3000 साल तक शिव कि तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर कि, उनकी इसी कठिन तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी नाम से जाना गया।

मंत्र:

दधानापरपद्माभ्यामक्षमालाककमण्डलम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित लाभायचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
जपमालाकमण्डलुधरांब्रह्मचारिणी शुभाम्।
गौरवर्णास्वाधिष्ठानस्थितांद्वितीय दुर्गा त्रिनेत्राम्।
धवल परिधानांब्रह्मरूपांपुष्पालंकारभूषिताम्।
पदमवंदनांपल्लवाधरांकातंकपोलांपीन पयोधराम्।
कमनीयांलावण्यांस्मेरमुखींनिम्न नाभिंनितम्बनीम्।।

स्तोत्र:-

तपश्चारिणीत्वंहितापत्रयनिवारणीम्।
ब्रह्मरूपधराब्रह्मचारिणींप्रणमाम्यहम्।।
नवचग्रभेदनी त्वंहिनवऐश्वर्यप्रदायनीम्।
धनदासुखदा ब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्॥
शंकरप्रियात्वंहिभुक्ति-मुक्ति दायिनी शांतिदामानदाब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्।

कवच:-

त्रिपुरा मेहदयेपातुललाटेपातुशंकरभामिनी। अर्पणासदापातुनेत्रोअधरोचकपोलो॥ पंचदशीकण्ठेपातुमध्यदेशेपातुमाहेश्वरी षोडशीसदापातुनाभोगृहोचपादयो। अंग प्रत्यंग सतत पातुब्रह्मचारिणी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

***

तृतीयं चन्द्रघण्टा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के तीसरे दिन मां के चन्द्रघण्टा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं । इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। चन्द्रघण्टा के देह का रंग स्वर्ण के समान चमकीला हैं और देवि उपस्थिति में चारों तरफ अद्भुत तेज दिखाई देता हैं।

मां तीन नेत्र एवं दस भुजाए हैं, जिसमें कमल, धनुष-बाण, खड्ग, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा आदि अस्त्र-शस्त्र, बाण आदि सुशोभित रहते हैं। मां के कंठ में सफेद पुष्पों कि माला और शीर्ष पर रत्नजड़ित मुकुट शोभायमान हैं। चन्द्रघण्टा का वाहन सिंह हैं, इनकी मुद्रा युद्ध के लिए तैयार रहने की होती हैं। इनके घण्टे सी भयानक प्रचंड ध्वनि से अत्याचारी दैत्य, दानव, राक्षस व दैव भयभित रहते हैं।

मंत्र:

पिण्डज प्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते महयं चन्दघण्टेति विश्रुता।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित लाभायचन्द्रार्धकृतशेखराम्।
सिंहारूढादशभुजांचन्द्रघण्टायशस्वनीम्॥
कंचनाभांमणिपुर स्थितांतृतीय दुर्गा त्रिनेत्राम्।
खंग गदा त्रिशूल चापहरंपदमकमण्डलु माला वराभीतकराम्।
पटाम्बरपरिधांनामृदुहास्यांनानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, हार, केयूर किंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वंदना बिबाधाराकातंकपोलांतुंग कुचाम्।
कमनीयांलावण्यांक्षीणकंटिनितम्बनीम्॥

स्त्रोत:-

आपदुद्वारिणी स्वंहिआघाशक्तिः शुभा पराम्।
मणिमादिसिदिधदात्रीचन्द्रघण्टेप्रणभाम्यहम्॥
चन्द्रमुखीइष्टदात्री इष्ट मंत्र स्वरूपणीम्। धनदात्रीआनंददात्रीचन्द्रघण्टेप्रणमाम्यहम्॥
नानारूपधारिणीइच्छामयीऐश्वर्यदायनीम्। सौभाग्यारोग्यदायनीचन्द्रघण्टेप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

रहस्यं श्रुणुवक्ष्यामिशैवेशीकमलानने। श्री चन्द्रघण्टास्यकवचंसर्वसिद्धि दायकम्॥ बिना न्यासंबिना विनियोगंबिना शापोद्धारबिना होमं। स्नानंशौचादिकंनास्तिश्रद्धामात्रेणसिद्धिदम्॥ कुशिष्यामकुटिलायवंचकायनिन्दाकायच। न दातव्यंन दातव्यंपदातव्यंकदाचितम्॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने से व्यक्ति का मणिपुर चक्र जाग्रत हो जाता हैं। उपासना से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

चतुर्थ कूष्माण्डा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के चतुर्थ दिन मां के कूष्माण्डा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया।

शास्त्रोक्त उल्लेख हैं, कि जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार हि था। उस समय कूष्माण्डा देवी ने अपने मंद सी हास्य से ब्रह्मांड कि उत्पत्ति कि। कूष्माण्डा देवी सूरज के घेरे में निवास करती हैं। इसलिये कूष्माण्डा देवी के अंदर इतनी शक्ति हैं, जो सूरज कि गरमी को सहन कर सकें। कूष्माण्डा देवी को जीवन कि शक्ति प्रदान करता माना गया हैं।

कूष्माण्डा देवी का स्वरुप अपने वाहन सिंह पर सवार हैं, मां अष्ट भुजा वाली हैं। उनके मस्तक पर रत्न जड़ित मुकुट सुशोभित हैं, जिस्से उनका स्वरूप अत्यंय उज्जवल प्रतित होता हैं। उनके हाथमें हाथों में क्रमश: कमण्डल, माला, धनुष-बाण, कमल, पुष्प, कलश, चक्र तथा गदा सुशोभित रहती हैं।

मंत्र:

सुरासम्पूर्णकलशं रूधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कुष्मांडा शुभदास्तुमे।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित कामर्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहरूढाअष्टभुजा कुष्माण्डायशस्वनीम्॥
भास्वर भानु निभांअनाहत स्थितांचतुर्थ दुर्गा त्रिनेत्राम्।
कमण्डलु चाप, बाण, पदमसुधाकलशचक्र गदा जपवटीधराम्॥
पटाम्बरपरिधानांकमनीयाकृदुहगस्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर हार केयूर किंकिणरत्नकुण्डलमण्डिताम्।
प्रफुल्ल वदनांनारू चिकुकांकांत कपोलांतुंग कूचाम्।
कोलांगीस्मेरमुखींक्षीणकटिनिम्ननाभिनितम्बनीम्॥

स्त्रोत:-

दुर्गतिनाशिनी त्वंहिदारिद्रादिविनाशिनीम्। जयंदाधनदांकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥
जगन्माता जगतकत्रीजगदाधाररूपणीम्। चराचरेश्वरीकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यसुंदरीत्वंहिदु:ख शोक निवारिणाम्। परमानंदमयीकूष्माण्डेप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

हसरै मेशिर: पातुकूष्माण्डेभवनाशिनीम्। हसलकरींनेत्रथ,हसरौश्चललाटकम्॥ कौमारी पातुसर्वगात्रेवाराहीउत्तरेतथा। पूर्वे पातुवैष्णवी इन्द्राणी दक्षिणेमम। दिग्दिधसर्वत्रैवकूंबीजंसर्वदावतु॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का अनाहत चक्र जाग्रत हो हैं। मां कूष्माण्डाका के पूजन से सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

***

पंचम स्कंदमाता

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के पांचवें दिन मां के स्कंदमाता स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं।स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय कि माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। सिंह और मयूर स्कंदमाता के वाहन हैं।

देवी स्कंदमाता कमल के आसन पर पद्मासन कि मुद्रा में विराजमान रहती हैं, इसलिए उन्हें पद्मासन देवी के नाम से भी जाना जाता हैं। स्कंदमाता का स्वरुप चार भुजा वाला हैं। उनके दोनों हाथों में कमलदल लिए हुए हैं, उनकी दाहिनी तरफ कि ऊपर वाली भुजा में ब्रह्मस्वरूप स्कन्द्र कुमार को अपनी गोद में लिये हुए हैं। और स्कंदमाता के दाहिने तरफ कि नीचे वाली भुजा वरमुद्रामें हैं। स्कंदमाता यह स्वरुप परम कल्याणकारी मनागया हैं।

मंत्र:

सिंहासानगता नितयं पद्माश्रितकरद्वया। शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित कामर्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्। सिंहारूढाचतुर्भुजास्कन्धमातायशस्वनीम्॥ धवलवर्णाविशुद्ध चक्रस्थितांपंचम दुर्गा त्रिनेत्राम। अभय पदमयुग्म करांदक्षिण उरूपुत्रधरामभजेम्॥ पटाम्बरपरिधानाकृदुहज्ञसयानानालंकारभूषिताम्। मंजीर हार केयूर किंकिणिरत्नकुण्डलधारिणीम।। प्रभुल्लवंदनापल्लवाधरांकांत कपोलांपीन पयोधराम्। कमनीयांलावण्यांजारूत्रिवलींनितम्बनीम्॥

स्तोत्र:-

नमामि स्कन्धमातास्कन्धधारिणीम्। समग्रतत्वसागरमपारपारगहराम्॥
शिप्रभांसमुल्वलांस्फुरच्छशागशेखराम्। ललाटरत्नभास्कराजगतप्रदीप्तभास्कराम्॥
महेन्द्रकश्यपार्चितांसनत्कुमारसंस्तुताम्। सुरासेरेन्द्रवन्दितांयथार्थनिर्मलादभुताम्॥
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितांविशेषतत्वमूचिताम्। नानालंकारभूषितांकृगेन्द्रवाहनाग्रताम्।।
सुशुद्धतत्वातोषणांत्रिवेदमारभषणाम्। सुधार्मिककौपकारिणीसुरेन्द्रवैरिघातिनीम्॥
शुभांपुष्पमालिनीसुवर्णकल्पशाखिनीम्। तमोअन्कारयामिनीशिवस्वभावकामिनीम्॥
सहस्त्रसूर्यराजिकांधनज्जयोग्रकारिकाम्। सुशुद्धकाल कन्दलांसुभृडकृन्दमज्जुलाम्॥
प्रजायिनीप्रजावती नमामिमातरंसतीम्। स्वकर्मधारणेगतिंहरिप्रयच्छपार्वतीम्॥
इनन्तशक्तिकान्तिदांयशोथमुक्तिदाम्। पुन:पुनर्जगद्धितांनमाम्यहंसुरार्चिताम॥
जयेश्वरित्रिलाचनेप्रसीददेवि पाहिमाम्॥

कवच:-

ऐं बीजालिंकादेवी पदयुग्मधरापरा। हृदयंपातुसा देवी कातिकययुता॥ श्रींहीं हुं ऐं देवी पूर्वस्यांपातुसर्वदा। सर्वांग में सदा पातुस्कन्धमातापुत्रप्रदा॥ वाणवाणामृतेहुं फट् बीज समन्विता। उत्तरस्यातथाग्नेचवारूणेनेत्रतेअवतु॥ इन्द्राणी भैरवी चैवासितांगीचसंहारिणी। सर्वदापातुमां देवी चान्यान्यासुहि दिक्षवै॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का विशुद्ध चक्र जाग्रत होता हैं। व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

***
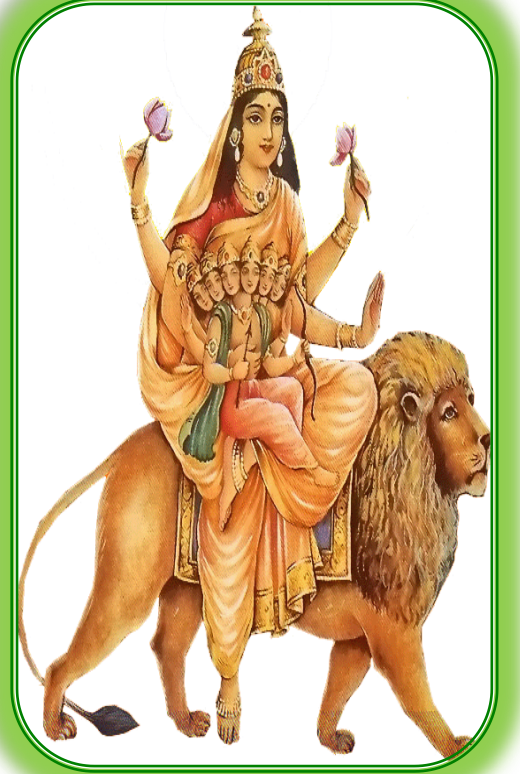
षष्ठम् कात्यायनी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के छठें दिन मां के कात्यायनी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महर्षि कात्यायन कि पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नामसे जाना जाता हैं। कात्यायनी माता का जन्म आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को हुवा था, जन्म के पश्चयाता मां कात्यायनी ने शुक्ल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक तीन दिन तक कात्यायन ऋषि कि पूजा ग्रहण किथी एवं विजया दशमी को महिषासुर का वध किया था।

देवी कात्यायनी का वर्ण स्वर्ण के समान चमकीला हैं, इस कारण देवी कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत ही भव्य एवं दिव्य प्रतित होता हैं। कात्यायनी कि चार भुजाएं हैं। उनेके दाहिनी तरफ का ऊपर वाला हाथ अभय मुद्रामें है, तथा नीचे वाला वरमुद्रामें, बाई तरफ के ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित हैं, नीचे वाले हाथमें तलवार सुशोभित रहती हैं। कात्यायनी देवी अपने वाहन सिंह विराजन होती हैं।

मंत्र:

चंद्रहासोज्जवलकरा शाइलवरवाहना। कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित मनोरथार्थचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहारूढचतुर्भुजाकात्यायनी यशस्वनीम्॥
स्वर्णवर्णाआज्ञाचक्रस्थितांषष्ठम्दुर्गा त्रिनेत्राम।
वराभीतंकरांषगपदधरांकात्यायनसुतांभजामि॥
पटाम्बरपरिधानांस्मेरमुखींनानालंकारभूषिताम्।
मंजीर हार केयुरकिंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्।।
प्रसन्नवंदनापज्जवाधरांकातंकपोलातुगकुचाम्।
कमनीयांलावण्यांत्रिवलीविभूषितनिम्न नाभिम्॥

स्तोत्र:-

कंचनाभां कराभयंपदमधरामुकुटोज्वलां। स्मेरमुखीशिवपत्नीकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
पटाम्बरपरिधानांनानालंकारभूषितां। सिंहास्थितांपदमहस्तांकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
परमदंदमयीदेवि परब्रह्म परमात्मा। परमशक्ति,परमभक्ति्कात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
विश्वकर्ती,विश्वभर्ती,विश्वहर्ती,विश्वप्रीता। विश्वाचितां,विश्वातीताकात्यायनसुतेनमोअस्तुते॥
कां बीजा, कां जपानंदकां बीज जप तोषिते। कां कां बीज जपदासक्ताकां कां सन्तुता॥
कांकारहर्षिणीकां धनदाधनमासना। कां बीज जपकारिणीकां बीज तप मानसा॥
कां कारिणी कां मूत्रपूजिताकां बीज धारिणी। कां कीं कूंकै क:ठ:छ:स्वाहारूपणी॥

कवच:-

कात्यायनौमुख पातुकां कां स्वाहास्वरूपणी। ललाटेविजया पातुपातुमालिनी नित्य संदरी॥ कल्याणी हृदयंपातुजया भगमालिनी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का आज्ञा चक्र जाग्रत होता हैं। देवी कात्यायनी के पूजन से रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

***

सप्तम कालरात्रि

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के सातवें दिन मां के कालरात्रि स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं, सिर के बाल फैलाकर रखने वाली हैं।

कालरात्रि का स्वरुप तीन नेत्र वाला एवं गले में चमकने वाली माला धारण करने वाली हैं। कालरात्रि कि आंखों से अग्नि की वर्षा होती है एवं नासिका के श्वास में अग्नि की भंयकर ज्वालाएं निकलती रहती हैं। कालरात्रि के ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ के वरमुद्रासे सभी मनुष्यो को वर प्रदान करती हैं। दाहिनी तरफ का नीचे वाला हाथ अभयमुद्रामें हैं। एक हाथ से शत्रुओं की गर्दन पकडे हुए हैं, दूसरे हाथ में खड्ग-तलवार शस्त्र से शत्रु का नाश करने वाली कालरात्रि विकट रूप में अपने वाहन गर्दभ(गधे) विराजमान हैं।

मंत्रः

एक वेधी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपदोल्लसल्लोहलताकण्टक भूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयंकरी॥

ध्यान:-

करालवदनां घोरांमुक्तकेशींचतुर्भुताम्।
कालरात्रिंकरालिंकादिव्यांविद्युत्मालाविभूषिताम्॥
दिव्य लौहवज्रखड्ग वामाघोर्ध्वकराम्बुजाम्।
अभयंवरदांचैवदक्षिणोध्वाघ:पाणिकाम्॥
महामेघप्रभांश्यामांतथा चैपगर्दभारूढां।
घोरदंष्टाकारालास्यांपीनोन्नतपयोधराम्॥
सुख प्रसन्न वदनास्मेरानसरोरूहाम्।
एवं संचियन्तयेत्कालरात्रिंसर्वकामसमृद्धिधदाम्॥

स्तोत्र:-

हीं कालरात्रि श्रींकराली चक्लींकल्याणी कलावती। कालमाताकलिदर्पध्नीकमदींशकृपन्विता॥
कामबीजजपान्दाकमबीजस्वरूपिणी। कुमतिघनीकुलीनार्तिनशिनीकुल कामिनी॥
क्लींहीं श्रींमंत्रवर्णेनकालकण्टकघातिनी। कृपामयीकृपाधाराकृपापाराकृपागमा॥

कवच:-

 क्लींमें हदयंपातुपादौश्रींकालरात्रि। ललाटेसततंपातुदुष्टग्रहनिवारिणी॥ रसनांपातुकौमारी भैरवी चक्षुणोर्मम हौपृष्ठेमहेशानीकर्णोशंकरभामिनी। वर्जितानितुस्थानाभियानिचकवचेनहि। तानिसर्वाणिमें देवी सततंपातुस्तम्भिनी॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का भानु चक्र जाग्रत होता हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

***

अष्टम महागौरी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के आठवें दिन मां के महागौरी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी हैं। महागौरी मस्तक पर चन्द्र का मुकुट धारण किये हुए हैं। कान्तिमणि के समान कान्ति वाली देवी जो अपनी चारों भुजाओं में क्रमशः शंख, चक्र, धनुष और बाण धारण किए हुए हैं, उनके कानों में रत्न जडितकुण्डल झिलमिलाते रहते हैं। महागौरीवृषभ के पीठ पर विराजमान हैं। महागौरी गायन एवं संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' माना जाता हैं।

मंत्र:

श्वेते वृषे समरूढ़ा श्वेताम्बराधरा शुचि:।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा।।

ध्यान:-

वन्दे वांछित कामार्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
सिंहारूढाचतुर्भुजामहागौरीयशस्वीनीम्॥
पुणेन्दुनिभांगौरी सोमवक्रस्थितांअष्टम दुर्गा त्रिनेत्रम।
वराभीतिकरांत्रिशूल ढमरूधरांमहागौरींभजेम्॥
पटाम्बरपरिधानामृदुहास्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, कार, केयूर, किंकिणिरत्न कुण्डल मण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनांपल्लवाधरांकांत कपोलांचैवोक्यमोहनीम्।
कमनीयांलावण्यांमृणालांचंदन गन्ध लिप्ताम्॥

स्तोत्र:-

सर्वसंकट हंत्रीत्वंहिधन ऐश्वर्य प्रदायनीम्।
ज्ञानदाचतुर्वेदमयी,महागौरीप्रणमाम्यहम्॥
सुख शांति दात्री, धन धान्य प्रदायनीम्।
डमरूवाघप्रिया अघा महागौरीप्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यमंगलात्वंहितापत्रयप्रणमाम्यहम्।
वरदाचैतन्यमयीमहागौरीप्रणमाम्यहम्॥

कवच:-

ओंकार: पातुशीर्षोमां, हीं बीजंमां हृदयो। क्लींबीजंसदापातुनभोगृहोचपादयो॥
ललाट कर्णो,हूं, बीजंपात महागौरीमां नेत्र घ्राणों। कपोल चिबुकोफट् पातुस्वाहा मां सर्ववदनो॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का सोमचक्र जाग्रत होता हैं। महागौरी के पूजन से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी हैं।

***

नवम् सिद्धिदात्री

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के नौवें दिन मां के सिद्धिदात्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं।
देवी सिद्धिदात्री का स्वरूप कमल आसन पर विराजित, चार भुजा वाला, दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा, बाई तरफ से नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित रहते हैं।

मंत्र : सिद्धगंधर्वयक्षाद्यैरसुरैररमरैरपि। सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

ध्यान:-

वन्दे वांछितमनरोरार्थेचन्द्रार्घकृतशेखराम्।
कमलस्थिताचतुर्भुजासिद्धि यशस्वनीम्॥
स्वर्णावर्णानिर्वाणचक्रस्थितानवम् दुर्गा त्रिनेत्राम।
शंख, चक्र, गदा पदमधरा सिद्धिदात्रीभजेम्॥
पटाम्बरपरिधानांसुहास्यानानालंकारभूषिताम्।
मंजीर, हार केयूर, किंकिणिरत्नकुण्डलमण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनापल्लवाधराकांत कपोलापीनपयोधराम्।
कमनीयांलावण्यांक्षीणकटिंनिम्ननाभिंनितम्बनीम्॥

स्तोत्र:-

कंचनाभा शंखचक्रगदामधरामुकुटोज्वलां।
स्मेरमुखीशिवपत्नीसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
पटाम्बरपरिधानांनानालंकारभूषितां।
नलिनस्थितांपलिनाक्षींसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
परमानंदमयीदेवि परब्रह्म परमात्मा।
परमशक्ति,परमभक्तिसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
विश्वकर्तीविश्वभर्तीविश्वहर्तीविश्वप्रीता। विश्वर्चिताविश्वतीतासिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥
भुक्तिमुक्तिकारणीभक्तकष्टनिवारिणी। भवसागर तारिणी सिद्धिदात्रीनमोअस्तुते।।
धर्माथकामप्रदायिनीमहामोह विनाशिनी। मोक्षदायिनीसिद्धिदात्रीसिद्धिदात्रीनमोअस्तुते॥

कवच:-

ओंकार: पातुशीर्षोमां, ऐं बीजंमां हृदयो। हीं बीजंसदापातुनभोगृहोचपादयो॥ ललाट कर्णोश्रींबीजंपातुक्लींबीजंमां नेत्र घ्राणो। कपोल चिबुकोहसौ:पातुजगत्प्रसूत्यैमां सर्व वदनो॥

मंत्र-ध्यान-कवच- का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का निर्वाण चक्र जाग्रत होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

***
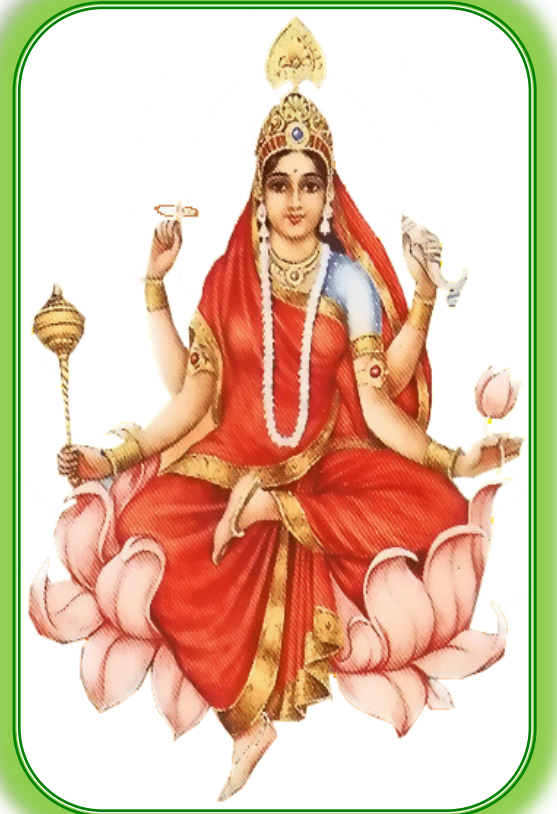
नवरात्र में दुर्गा उपासना का आध्यात्मिक महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

अर्थातः देवी को नमस्कार हैं, महादेवी को नमस्कार हैं। महादेवी शिवा को सर्वदा नमस्कार हैं। प्रकृति एवं भद्रा को मेरा प्रणाम हैं। हम लोग नियमपूर्वक देवी जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

उपरोक्त मंत्र से देवी दुर्गा का स्मरण कर प्रार्थना करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करती हैं। समस्त देव गण जिनकी स्तुति प्राथना करते हैं। माँ दुर्गा अपने भक्तो की रक्षा कर उन पर कृपा द्रष्टी वर्षाती हैं और उसको उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। इस लिये ईश्वर में श्रद्धा विश्वार रखने वाले सभी मनुष्य को देवी की शरण में जाकर देवी से निर्मल हृदय से प्रार्थना करनी चाहिये।

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
पसीद विश्वेतरि पाहि विश्वं त्वमीश्चरी देवी चराचरस्य।

अर्थातः शरणागत कि पीड़ा दूर करने वाली देवी आप हम पर प्रसन्न हों। संपूर्ण जगत माता प्रसन्न हों। विश्वेश्वरी देवी विश्व कि रक्षा करो। देवी आप हि एक मात्र चराचर जगत कि अधिश्वरी हो।

सर्वमंगल-मांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः हे देवी नारायणी आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थो को सिद्ध करने वाली शरणा गतवत्सला तीन नेत्रों वाली गौरी हो, आपको नमस्कार हैं। आप सृष्टि का पालन और संहार करने वाली शक्तिभूता सनातनी देवी, आप गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

इस मंत्र के जप से माँ कि शरणागती प्राप्त होती हैं। जिस्से मनुष्य के जन्म-जन्म के पापों का नाश होता है। मां जननी सृष्टि कि आदि, अंत और मध्य हैं।

देवी से प्रार्थना करें –

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

अर्थातः शरण में आए हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब कि पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी आपको नमस्कार है।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हाश्रयतां प्रयान्ति।

अर्थातः देवी आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके है। उनको विपत्ति आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रेलोक्यस्याखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्यमस्यध्दैरिविनाशनम्।

अर्थातः हे सर्वेश्वरी आप तीनों लोकों कि समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे सभी शत्रुओं का नाश करती रहो।

शांतिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्रदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु महात्मयं शणुयात्मम।

अर्थातः सर्वत्र शांति कर्म में, बुरे स्वप्न दिखाई देने पर तथा ग्रह जनित पीड़ा उपस्थित होने पर माहात्म्य श्रवण करना चाहिए। इससे सब पीड़ाएँ शांत और दूर हो जाती हैं।

यहि कारण हैं सहस्त्रयुगों से मां भगवती जगतजननी दुर्गा की उपासना प्रति वर्ष वसंत, आश्विन एवं गुप्त नवरात्री में विशेष रुप से करने का विधान हिन्दु धर्म ग्रंथो में हैं।

***

शारदीय नवरात्र व्रत सुख-समृद्धि दायक हैं

संकलन गुरुत्व कार्यालय

इस दौरान ऋतुओं के परिवर्तन के साथ नवरात्रों का तौहार मनुष्य के जीवन में बाहय और आंतरिक परिवर्तन में एक विशेष संतुलन स्थापित करने में सहायक होता हैं। जिस तरह बाहय जगत में परिवर्तन होता है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन होता है। इस लिये नवरात्र उत्सव को आयोजित करने का उद्देश्य मनुष्य के भीतर में उपयुक्त परिवर्तन कर उसे बाहय परिवर्तन के अनुकूल बनाकर स्वयं के और प्रकृति के बीच में संतुलन बनाये रखना होता हैं।

नवरात्रों के दौरान किए जाने वाली पूजा-अर्चना, व्रत इत्यादि से पर्यावरण की शुद्धि होती हैं। उसीके साथ-साथ मनुष्य के शरीर और आंतरिक भावना की भी शुद्धि हो जाती हैं। क्योकि व्रत-उपवास शरीर को शुद्ध करने का पारंपरिक तरीका हैं जो प्राकृतिक-चिकित्सा का भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। यही कारण हैं की विश्व के प्रायः सभी प्रमुख धर्मो में विभिन्न अवसरों पर व्रत का महत्व हैं। यहि कारण हैं की हिन्दू संस्कृति में युगो-युगो से नवरात्रों के दौरान व्रत करने का विधान हैं। क्योकी व्रत के माध्यम से पहले मनुष्य का शरीर शुद्ध होता हैं, और यदि शरीर शुद्ध हो, तो मनुष्य का मन एवं भावनाएं भी शुद्ध होती हैं। शरीर की शुद्धि के बिना मन एवं भावना की शुद्धि संभव नहीं हैं। इस लिए नवरात्रों के दौरान सभी प्रकार के व्रत-उपवास शरीर और मन की शुद्धि में सहायक होते हैं।

नवरात्रों में किये गये व्रत-उपवास का सीधा असर हमारे अच्छे स्वास्थ्य और रोगमुक्ति के लिये भी सहायक होता हैं। बड़ी धूम-धाम से किया गया नवरात्रों का आयोजन हमें सुखानुभूति एवं आनंदानुभूति प्रदान करता हैं।

मनुष्य के लिए आनंद की अवस्था सबसे अच्छी अवस्था हैं। जब व्यक्ति आनंद की अवस्था में होता हैं तो उसके शरीर में तनाव उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कोष समाप्त हो जाते हैं और जो सूक्ष्म कोष उत्सजिर्त होते हैं वे हमारे शरीर के लिए अत्यंत लाभदायक होते हैं। जो हमें नई व्याधियों से बचाने के साथ ही रोग होने की दशा में शीघ्र रोगमुक्ति प्रदान करने में भी सहायक होते हैं।

नवरात्र को शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं। मार्कण्डेयपुराण के अनुशार देवी माहात्म्य में स्वयं मां जगदम्बा का वचन हैं-।

शरत्काले महापूजा क्रियतेया चवार्षिकी।
तस्यांममैतन्माहात्म्यंश्रुत्वाभक्तिसमन्वितः ॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोधनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्योमत्प्रसादेनभविष्यतिन संशयः ॥

अर्थातः शरद ऋतु के नवरात्रमें जब मेरी वार्षिक महापूजा होती हैं, उस काल में जो मनुष्य मेरे माहात्म्य (दुर्गासप्तशती) को भक्तिपूर्वकसुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न हो जायेगा।

नवरात्र में दुर्गासप्तशती को पढने या सुनने से देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।

सप्तशती का पाठ उसकी मूल भाषा संस्कृत में करने पर ही पूर्ण प्रभावी होता हैं।

व्यक्ति को श्रीदुर्गासप्तशती को भगवती दुर्गा का ही स्वरूप समझना चाहिए। पाठ करने से पूर्व श्रीदुर्गासप्तशती कि पुस्तक का इस मंत्र से पंचोपचारपूजन करें-

नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततंनमः। नमः प्रकृत्यैभद्रायैनियताः प्रणताः स्मताम्॥

जो व्यक्ति दुर्गासप्तशतीके मूल संस्कृत में पाठ करने में असमर्थ हों तो उस व्यक्ति को सप्तश्लोकी दुर्गा को पढने से लाभ प्राप्त होता हैं। क्योकि सात श्लोकों वाले इस स्तोत्र में श्रीदुर्गासप्तशती का सार समाया हुवा हैं।

जो व्यक्ति सप्तश्लोकी दुर्गा का भी न कर सके वह केवल नर्वाण मंत्र का अधिकाधिक जप करें।

देवी के पूजन के समय इस मंत्र का जप करे।

जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते॥

देवी से प्रार्थना करें-

विधेहिदेविकल्याणंविधेहिपरमांश्रियम्। रूपंदेहिजयंदेहियशोदेहिद्विषोजहि॥

अर्थातः हे देवि! आप मेरा कल्याण करो। मुझे श्रेष्ठ सम्पत्ति प्रदान करो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध इत्यादि शत्रुओं का नाश करो।

विद्वानो के अनुशार सम्पूर्ण नवरात्रव्रत के पालन में जो लोगों असमर्थ हो वह नवरात्र के सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री का व्रत भी करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नवरात्र में नवदुर्गा की उपासना करने से नवग्रहों का प्रकोप शांत होता हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्रेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

क्या किसी के शरीर में देवी-देवता आ सकते हैं ?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

क्या इस आधुनिक युग में किसी मानव शरीर में देवी-देवता आ सकते हैं?

क्या देवी-देवता के मानव शरीर में प्रवेश से स्त्री-पुरुष का अंगारों पर चलना, उपलते दूध या तेल में हाथ डालना, अपने शारीर में कील या नुकीली चीजे फ़साना, इत्यादि अनेको उदाहरण हमें आए दिन देखने को मिल जाते हैं।

क्या देवी-देवता मानव शरीर में प्रवेश कर अजीब तरीके से व्यवहार करते हैं।

इस संसार में एसे लोग हैं जो मानते है या जिनका दावा हैं कि किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में किसी एक निश्चित समय, वार, तिथि अथवा व्यक्ति के बुलाने पर उसके शरीर में देवी-देवता प्रवेश करेते हैं, और लोगों के दुःख, दर्द, बीमारी इत्यादी को दूर करते हैं। जिसमे कुछ का मानना हैं देवी-देवता पीड़ित व्यक्ति के मन के सवालों या अथवा उनकी समस्याओं को जान लेते हैं और उनके द्वारा उसके सवाल पुछने से पहले हैं देवी-देवता उसके प्रश्नों का हल बता देते है ?

कुछ जानकारों का यह मानना हैं कि जो लोग अपने शरीर में देवी-देवता आने का दावा करते हैं, और जब उनके शरीर में देवी-देवता का प्रवेश होता हैं या शरीर में होते हैं तब वह लोग स्वयं देवी-देवता की आराधना करते हैं और वहां पर उपस्थित भक्त गणों को देवी-देवता के रुपमें आशीर्वाद भी प्रदान करते हैं। यदि उसके शरीर में स्वयं देवी-देवता का प्रवेश होता हैं तो वह देवी-देवता अपने चित्र या मूर्ति या स्वयं की आराधना या उपासना क्यों करते हैं ?

क्या यह संभब हैं कोई देवे-देवता स्वयं की आराधना या उपासना करते हो?

हमारे देश में कुछ एसी जगहें हैं जहा लोगों का मानना हैं की किसी निश्चित समय, दिन, तिथि को किसी विशेष एक देवी-देवता प्रवेश किसी शरीर में अथवा एक से अधिक देवी-देवता का एक साथ में एकाधिक शरीर में प्रवेश होता हैं?

कुछ का कहना हैं की जब एकाधिक शरीर में देवी-देवता का प्रवेश होता हैं तो वह सब देवी-देवता मिलकर नृत्य करने लगते है?, खेलने लगते हैं?, अंगारों पर नंगे पैर चलने लगते है?, अजीब तरीके की हरकते करने लगते हैं? क्या यह संभव हैं?

कुछ जानकार विद्वानों एवं शोध कर्ता की माने तो यह संभव नहीं हैं, जो लोग यह दावा करते हैं की उनके शरीर में देवी-देवता का प्रवेश होता हैं उन लोगों का उद्देश केवल अन्य लोगों को अपनी और आकर्षित करना या पैसे निकालना अथवा अपना उल्लू सीधा करना ही होता हैं।

अधिकतर विद्वान साधकों के मतानुशार देवी-देवता यदि किसी मनुष्य के समक्ष भी हो तो केवल

मनुष्य को अनुभूति होती हैं। जैसे उस शक्ति की उपस्थिती से वातावरण में आकस्मिक परिवर्तन होना, उनके उपस्थित होने से किसी दिव्य तेज अथवा शक्ति पूंज, वातावरण में सुगंध का फैलना इत्यादि का आभास होता हैं एवं देवी-देवता किसी मनुष्य देह में प्रवेश नहीं करते या वह किसी भी तरह के भौतिक चिह्न नहीं छोड़ते!

कुछ विद्वानों का कथ हैं की देवी-देवता के दर्शन साधक को तब होता है, जब उसके अंतर मन के भाव गहन होते हैं, तब साधना के दौरान एक समय आता हैं जब साधक को यह अनुभव होता हैं की देवी-देवता उसके सामने प्रकट हो गये हैं या उन्हें दर्शन दे रहे हैं, उसी रुप में या आकृति मे होते हैं जो आकृति साधक के अंतर मन में अंकित होती हैं। साधक को अनुभूति होती हैं की वह देवी-देवता उनसे बाते कर रहा हैं, यह साधक की कल्पना का साकार होना है। वह देवी-देवता वास्तव में साधक से बात करती हैं उसके प्रश्नो का उत्तर देती है या उसे आशीर्वाद देकर दर्शन देती हैं। यह सब केवल साधक को ही अनुभूत होती हैं, वहां कोई और अन्य व्यक्ति भी हो तो साधक के अलावा किसी दूसरे को उसकी अनुभूति या दर्शन नहीं होता।

यह सब साधक के गहन भाव के अनुरुप ही प्रकट होती हैं लेकिन किसी दूसरे मनुष्य के शरीर में प्रवेश नहीं करती!

विशेष सूचना: यहा वर्णित लेख केवल लेखक के शोध एवं अनुभवों के आधार पर लिखा गया हैं। इस लेख का उद्देश्य केवल पाठको का मार्गदर्शन मात्र हैं, किसी सी भी व्यक्ति विशेष की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं हैं। इस विषय में भिन्न-भिन्न लोगों के विचार भिन्न हो सकते हैं।

***

पूजा में कलश स्थापन का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कलश सरल अर्थ है जल से भरा हुवा सुशोभित पात्र है। हिंदू धर्म में सभी मांगलिक कार्यों में कलश स्थापित करने का विशेष महत्व माना गया हैं।

हिंदू संस्कृति में कलश को एक विशेष आकार के पात्र को कहा जाता हैं, धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कलश के ऊपरी भाग में भगवान विष्णु, मध्य में भगवान शिव और मूल में ब्रह्माजी का निवास होता है। इसलिए पूजन में कलश को देवी-देवता की शक्ति, तीर्थस्थान आदि का प्रतीक मानकर कलश स्थापित किया जाता है। हिंदू धर्म में कलश को सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य और मंगल कामनाओं का प्रतीक माना जाता है। इसलिए विभिन्न धार्मिक कार्यों एवं गृहप्रवेश इत्यादि शुभ कार्यों में कार्य की शुभता में वृद्धि एवं मंगल कामनाके उद्देश्य से पूजन के दोरान कलश स्थापित किया जाता है।

कलश में प्रयुक्त होने वाली सामग्री

हिंदू शास्त्रों में उल्लेख हैं की कलश को बिना जल के स्थापित करना अशुभ होता है। इसीलिए कलश को हमेशा पानी इत्यादि सामग्री से भर कर रखना चाहिए। प्राय कलश में जल, पान के पत्ते, अक्षत, कुमकुम, केसर, दुर्वा-कुश, सुपारी, पुष्प, सूत, श्रीफल, अनाज इत्यादि का उपयोग पूजन हेतु किया जाता हैं। विभिन्न पूजन हेतु जल के साथ भिन्न सामग्रीयों का प्रयोग किया जाता है।

कलश का पवित्र जल मनुष्य के मन को स्वच्छ, निर्मल एवं शीतल बनाएं रखने का प्रतिक माना गया हैं। कलश पर स्वस्तिक चिह्न बनाने का प्रतिक को शास्त्रों में स्वस्तिक ब्रह्मांड का प्रतीक माना गया है। स्वस्तिक को भगवान श्री गणेश का साकार रूप है। मान्त्यता हैं, कि स्वस्तिक के मध्य भाग को भगवान विष्णु की नाभि, चारों रेखाओं को ब्रह्माजी के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप में प्रकट करने की भावना मानी जाती हैं।

कलश के ऊपर श्रीफल स्थापित करना भगवान श्री गणेश का प्रतीक माना जाता है। कलश में सुपारी, पुष्प, दुर्वा इत्यादि आदि सामग्री मनुष्य की जीवन शक्ति का प्रतिक माना जाता हैं।

यहि कारण हैं की हिंदू संस्कृति में सभी प्रकार के धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में कलश स्थापित करने का विशेष महत्व पौराणिक काल से ही रहा हैं।

शुभ कार्यों में श्रीफल चढ़ाने का महत्व?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नारियल शुभता का सूचक होने के कारण ही इसे "श्रीफल" कहा जाता हैं। श्रीफल का महत्व अत्याधिक एवं सर्वत्र रहा हैं। श्रीफल को हिंदी में नारियल, खोपरा, गरी, गोला आदि नाम से जाना जाता हैं, इस मराठी में नारळ, गुजराती में नारियर, श्रीफल, नारियेळ, बंगाली में, नारिकेल, डाबेर नारकेल, पयोधर, कन्नड में तेंगिनकायि, तेंगिन, कॊब्बरि, तेंगिनकायिय मलयालम में नाळिकेरं, वेळिच्चॆण्ण, तेण्णा, नेपालि में नरिवल, नरिवलको तमिल में तेंकाय, तेन्नै, तेनकु, तेलुगु कोब्बरि, आदि नामों से जाना जाता हैं।

नारियल को संस्कृत में श्रीफल कहा जाता हैं। हिंदू धर्म में सभी प्रकार के धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में श्रीफल अर्थात नारियल का विशेष महत्व पौराणिक काल से ही रहा है। हिंदू धर्म की परंपराओं के अनुशार जब किसी नये कार्या या शुभ कार्य का प्रारंभ या शुभारंभ करना हो तो देवी-देवता के सम्मुख श्रीफल अर्पण करने और उसे फोड़ने का विशेष महत्व रहा है।

यहि कारण हैं की सभी प्रकार के धार्मिक कार्यों में अन्य पूजन सामग्रीयों के साथ में श्रीफल भी विशेष रुप से होता हैं। धार्मिक मान्यता के अनुशार श्रीफल का उपयोग बलि कर्म के प्रतिक के रुप में भी किया जाता हैं। बलि कर्म अर्थात उपहार अथवा नैवेद्य की वस्तु। देवी-देवताओंको बलि अर्पण करने का तत्पर्य होता हैं उनकी विशेष कृपा प्राप्त करना या उनकी द्वारा प्राप्त हुई कृपा के प्रति कृतज्ञता अर्थात आभार व्यक्त करना।

श्रीफल फोड़ने की परंपरा

मान्यता हैं की पुरातन काल में हिंदू धर्म में मनुष्य और जानवरों की बलि देने कि परंपरा एक सामान्य प्रथा थी। विद्वानों के मतानुशार जगदगुरु आदि शंकराचार्य जी ने इस बलि परंपरा को तोड़ा और मनुष्य-जानवरों के स्थान पर श्रीफल चढ़ाने की परंपरा शुरु हुई।

श्रीफल को मनुष्य के मस्तक का प्रतिक मान कर बलि स्वरुप चढ़ाया जाता हैं। श्रीफल की जटा को मनुष्य के बाल, श्रीफल की जटा के निकट दिखने वाले तीन गोलाकार चिह्नों को को मनुष्य की आंखों एवं नाक, श्रीफल के कठोर कवच को मनुष्य की खोपड़ी, श्रीफल के पानी को मनुष्य के खून, श्रीफल के गूदे को मनुष्य का दिमाग माना जाता है।

श्रीफल फोड़ने का महत्व

श्रीफल फोड़ने मुख्य उद्देश्य मनुष्य के अहंकार को दूर कर और स्वयं को भगवान समर्पित करने की भावना हैं। मान्यता हैं कि ऐसा करने पर मनुष्य की अज्ञानता एवं अहंकार का कठोर कवच टूट जाता है और यह आत्म शुद्धि और ज्ञान का द्वार खोलता है, जिससे नारियल के गूदे वाले सफेद हिस्से के रूप में देखा जाता है। श्रीफल को देवी-देवता को आर्पभ कर उसका प्रसाद बाँटने की प्रथा हिंदू संस्कृति में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। विद्वानों को मतानुशार श्रीफल के पानी को पीने से मनुष्य को अत्यधिक सुख एवं संतुष्टि की अनुभूति होती हैं।

नवरात्र व्रत की सरल विधि?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नव दिनों तक चलने वाले इस पर्व पर हम व्रत रखकर मां के नौ अलग-अलग रूप की पूजा की जाती हैं। इस दौरान घर में किया जाने वाला विधिवत हवन भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभप्रद हैं। हवन से आत्मिक शांति और वातावरण कि शुद्धि के अलावा घर नकारात्मक शक्तियों का नाश हो कर सकारात्मक शक्तियो का प्रवेश होता हैं।

नवरात्र व्रत

नवरात्र में नव रात्र से लेकर सात रात्री,पांच रात्री, दों रात्री और एक रात्री व्रत करने का भी विधान हैं।
नवरात्र व्रत के धार्मिक महत्व के अलावा वैज्ञानिक महत्व हैं, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक होता हैं। व्रत करने से शरीर में चुस्ती-फुर्ती बनी रहती हैं। रोजाना कार्य करने वाले पाचन तंत्र को भी व्रत के दिन आराम मिलता हैं। बच्चे, बुजुर्ग, बीमार, गर्भवती महिला को नवरात्र व्रत का नहीं रखना चाहिए।

नवरात्र व्रत से संबंधित उपयोगी सुझाव

- व्रत के दौरान अधिक समय मौन धारण करें।
- व्रत के शुरुआत में भूख काफी लगती हैं। ऐसे में नींबू पानी पिया जा सकता है। इससे भूख को नियंत्रित रखने में मदद मिलेगी।
- जहा तक संभव हो निर्जला उपवास न रखें। इससे शरीर में पानी कि कमी हो जाती हैं और अपशिष्ट पदार्थ शरीर के बाहर नहीं आ पाते। इससे पेट में जलन, कब्ज, संक्रमण, पेशाब में जलन जैसी कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं।
- एक साथ खूब सारा पानी पीने के बजाए दिन में कई बार नींबू पानी पिएं।
- ज्यादातर लोगो को उपवास में अक्सर कब्ज की शिकायत हो जाती हैं। इसलिए व्रत शुरू करने के पहले त्रिफला, आंवला, पालक का सूप या करेले के रस इत्यादि पदार्थो का सेवन करें। इससे पेट साफ रहता है।
- व्रत के दौरान चाय, काफी का सेवन काफी बढ़ जाता है। इस पर नियंत्रण रखें।

व्रत के दौरान कौनसे खाद्य पदार्थ ग्रहण करें?

- व्रत में अन्न का सेवन वर्जित हैं। जिस कारण शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाती हैं।
- अनाज कि जगह फलों व सब्जियों का सेवन किया जा सकता हैं। इससे शरीर को जरुरी ऊर्जा मिलती हैं।
- सुबह के समय आलू को फ्राई करके खाया जा सकता हैं। आलू में कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में होता है। इस लिए आलू खाने से शरीर को ताकत मिलती है।
- सुबह एक गिलास दूध पिलें। दोपहर के समय फल या जूस लें। शाम को चाय पी सकते हैं।

कई लोग व्रत में एक बार ही भोजन करते हैं। ऐसे में एक निश्चित अंतराल पर फल खा सकते हैं। रात के खाने में सिंघाड़े के आटे से बने पकवान खा सकते हैं।

सरल विधि-विधान से शारदीय नवरात्र व्रत उपासना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, **29 सितम्बर 2019** शारदीय नवरात्र आरंभ हो रहे हैं। नवरात्र में मां दुर्गा देवी का आह्वान, स्थापना व पूजन का समय प्रात:काल होता हैं। घट स्थापना का समय से संबंधित जानकारी इस अंक में उपलब्ध हैं। चर लग्न के चौघड़िए अथवा अभिजित काल में भी घट स्थापना की जा सकती है। शारदीय नवरात्र देवी उपासना के लिए अधिक अति उत्तम माना गया है।

जो भक्त नवरात्र के दौरान देवि का शास्त्रोक्त विधि-विधान से पूजन करना चाहें, उन्हें नवरात्र के एक दिन पूर्व सभी पूजन सामग्री को एकत्रित कर लेना चाहिये।

जिस स्थान पर मां भगवती को स्थापित करना हो वहां मंडप बनाने के लिये उस स्थान को समतल बनाले, उस स्थान या भूमिको मिट्टी या गाय के गोबर से लीपकर भूमि का शुद्धिकरण कर लें।

विद्वानो के मत अनुशार प्रतिमा स्थापित करने हेतु मंडप नौ हाथ लंबा और सात हाथ चौड़ा बनाने का शास्त्रोक्त विधान है। मंडप बनाकर उसे विभिन्न शृंगार सामग्री से सुसज्जित करें। मां भगवती की प्रतिमा स्थापित करने के लिए मंडप के मध्यम में चार हाथ लंबी और एक हाथ ऊंची वेदी बनालें। उस वेदी पर रेशमी लाल वस्त्र बिछाले।

देवी प्रतिमा हेतु मां भगवती की प्रतिमा चार भुजा वाली एवं सिंह पर सवारी किये हुए हो वैसी ही प्रतिमा स्थापित करना उत्तम होता हैं। इस के पीछे का आध्यात्मिक सिद्धांत होता हैं की भक्त की चारों दिशाओं से सुरक्षा हो सके और उसे समस्त प्रकार के सुख-समृद्धि व शांति प्राप्त हो।

कलश स्थापीत करने हेतु मंत्र उच्चारण करते हुए तीर्थ स्थलों के जल का आह्वान कर कलश की स्थापना करनी चाहिये।हवन वेदी त्रिकोण बनाएं और उसपर जुआरे उगाएं। पूजन सामग्री: चंदन, अगरू, कपूर, कमल, अशोक, सुगंधित पुष्प।

नवरात्र व्रत:

नवरात्र का व्रत सभी वर्ग के भक्तो के लिए उत्तम होता है। यदि कोई भक्त नौ दिन तक व्रत न रख सकें तो दो-रात्री के व्रत अवश्य करने चाहिये अर्थात पहला और अंतिम नवरात्र का व्रत करना उपयुक्त होता हैं।

सरल पूजन विधि:

सर्वप्रथम भक्त श्री गणेशजी का आह्वान करने के बाद अपनी कुलदेवी का पूजन करना चाहिये। उसके बाद माता भगवती का पूजन अपने कुल की परंपरा के अनुसार करना चाहिये।

नवरात्र में दुर्गा सप्तशती का पाठ पूर्ण पाठ करना अति उत्तम होता हैं।

आश्विन नवरात्रि घट स्थापना मुहूर्त, विधि-विधान 29 सितम्बर 2019

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा अर्थात नवरात्री का पहला दिन। इसी दिन से ही आश्विनी नवरात्र का प्रारंभ होता हैं। जो अश्विन शुक्ल नवमी को समाप्त होते हैं, इन नौ दिनों देवि दुर्गा की विशेष आराधना करने का विधान हमारे शास्त्रो में बताया गया हैं।

घटस्थापना हेतु शुभ मुहूर्त 29 सितम्बर 2019, रविवार के दिन सुबह 06:13 से 07:40 तक (अवधि 01 घण्टा 27 मिनट) हस्त नक्षत्र, ब्रहम योग, करण किंस्तुघ्न एवं द्वि-स्वभाव कन्या लग्न रहेगा।

इस लिए घट स्थापना सुबह 06:13 से 07:40 तक में करना शुभ रहेगा।

पारंपरिक पद्धति के अनुशास नवरात्रि के पहले दिन घट अर्थात कलश की स्थापना करने का विधान हैं। इस कलश में ज्वारे(अर्थात जौ और गेहूं) बोया जाता है।

घट स्थापनकी शास्त्रोक्त विधि इस प्रकार हैं।

घट स्थापना आश्विन प्रतिपदा के दिन कि जाती हैं। **घट स्थापना हेतु सबसे शुभ अभिजित मुहुर्त माना गया हैं। जो 29 सितम्बर 2019 को दोपहर 11:48 से दोपहर 12:35 बजे के बीच है।**

इस वर्ष प्रतिपदा तिथि प्रतिपदा तिथि प्रारम्भ - 28 सितम्बर 2019 को रात 11:56 से 29 सितम्बर 2019 को रात 08:14 बजे तक रहेगी जिस कारण घटस्थापना हेतु 29 सितम्बर 2019 के शुभ मुहूर्त उत्तम रहेंगे।

घट स्थापना के अन्य शुभ मुहूर्त सुबह 07:45 से सुबह 09:14 तक चर (चंचल) चौघडिया, सुबह 09:14 से दिन 10:42 तक लाभ चौघडिया, दिन 10:42 से दोपहर 12:11 तक अमृत चौघडिया, अभिजित मुहुर्त दोपहर 11:48 से दोपहर 12:35 बजे तक, दोपहर 01:41 से 03:09 तक शुभ चौघड़िया मुहूर्त रहेगा।

कुछ जानकार विद्वानो का मत हैं की नवरात्र स्वयं अपने आप में स्वयं सिद्ध मुहुर्त होने के कारण इस तिथि में व्याप्त समस्त दोष स्वतः नष्ट हो जाते हैं इस लिए घट स्थापना प्रतिपदा के दिन किसी भी समय कर सकते हैं।

यदि ऐसे योग बन रहे हो, तो घट स्थापना दोपहर में अभिजित मुहूर्त या अन्य शुभ मुहूर्त में करना उत्तम रहता हैं।

कलश स्थापना हेतु अन्य शुभ मुहूर्त

- चर (चंचल) चौघडिया सुबह 07:45 से सुबह 09:14 तक
- लाभ चौघडिया सुबह 09:14 से दिन 10:42 तक ,
- अमृत चौघडिया दिन 10:42 से दोपहर 12:11 तक,
- अभिजित मुहुर्त दोपहर 11:48 से दोपहर 12:35 बजे तक,
- शुभ चौघड़िया दोपहर 01:41 से 03:09 तक के मुहूर्त घट स्थापना का श्रेष्ठ मुहूर्त रहेंगे।

घट स्थापना हेतु सर्वप्रथम स्नान इत्यादि के पश्चयात गाय के गोबर से पूजा स्थल का लेपन करना चाहिए। घट स्थापना हेतु शुद्ध मिट्टी से वेदी का निर्माण करना चाहिए, फिर उसमें जौ और गेहूं बोएं तथा उस पर अपनी इच्छा के अनुसार मिट्टी, तांबे, चांदी या सोने का कलश स्थापित करना चाहिए।

यदि पूर्ण विधि-विधान से घट स्थापना करना हो तो पंचांग पूजन (अर्थात गणेश-अंबिका, वरुण, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, नवग्रह आदि देवों का पूजन) तथा पुण्याहवाचन (मंत्रोंच्चार) विद्वान ब्राह्मण द्वारा कराएं अथवा असमर्थता हो, तो स्वयं करें।

पश्चयात देवी की मूर्ति स्थापित करें तथा देवी प्रतिमाका षोडशोपचारपूर्वक पूजन करें। इसके बाद श्रीदुर्गासप्तशती का संपुट अथवा साधारण पाठ करना चाहिए। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन अथवा दशांश पाठ करना चाहिए।

घट स्थापना के साथ दीपक की स्थापना भी की जाती है। पूजा के समय घी का दीपक जलाएं तथा उसका गंध, चावल, व पुष्प से पूजन करना चाहिए।

पूजन के समय इस मंत्र का जप करें-

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ह्यन्धकारनिवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृहणंस्तेज: प्रवर्धय।।

नोट: उपरोक्त वर्णित मुहूर्त को सूर्योदय कालिन तिथि या समय का निरधारण नई दिल्ली के अक्षांश रेखांश के अनुशार आधुनिक पद्धति से किया गया हैं। इस विषय में विभिन्न मत एवं सूर्योदय ज्ञात करने का तरीका भिन्न होने के कारण सूर्योदय समय का निरधारण भिन्न हो सकता हैं। सूर्योदय समय का निरधारण स्थानिय सूर्योदय के अनुशार हि करना उचित होगा।

इस लिए किसी भी मुहूर्त का चयन करने से पूर्व किसी विद्वान व जानकार से इस विषय में सलाह विमर्श करना उचित रहेगा।

***

नवरात्र विशेष घट स्थापना विधि

संकलन गुरुत्व कार्यालय

दुर्गा पूजन सामग्री-

कलावा (मौली, रक्षा सूत्र), रोली, सिंदूर, १ श्रीफल (नारियल), अक्षत (बिना टूटे चावल), लाल वस्त्र, सगंधित फूल- माला, 5 पान के पत्ते , 5 सुपारी, लौंग, कलश, कलश हेतु आम के पल्लव, लकडी की चौकी, समिधा, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, कमल गट्टे, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शर्करा(चीनी)), फल, मिठाई, ऊन का आसन, साबूत हल्दी, अगरबत्ती, इत्र, घी, दीपक, आरती की थाली, कुशा, रक्त चंदन, श्वेत चंदन (श्रीखंड चंदन), जौ, तिल, सुवर्ण गणेश व दुर्गा की प्रतिमा 2 (सुवर्ण उप्लब्ध न हो तो पीतल, कई लोग मिट्टी की प्रतिमा से पूजन करते हैं।), आभूषण व श्रृंगार सामग्री, पंचमेवा, पंचमिठाई, रूई इत्यादि,

दुर्गा पूजन से पूर्व चौकी को शुद्ध करके श्रृंगार करके चौकी सजालें।

तत पश्चयात लाल कपडे का आसन बिछाकर गणपति एवं दुर्गा माता की प्रतिमाके सम्मुख बैठ जाए।

तत पश्चयात आसन को इस मंत्र से शुद्धि करण करें:

ॐ अपवित्र : पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि:॥

इन मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने ऊपर तथा आसन पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छींटें लगायें।

तत पश्चयात आचमन करें:

ॐ केशवाय नम:
ॐ नारायण नम:
ॐ मध्वाये नम:
ॐ गोविन्दाय नम:

तत पश्चयात हाथ धोकर, पुन: आसन शुद्धि मंत्र का उच्चारण करें:-

ॐ पृथ्वी त्वयाधृता लोका देवि त्यवं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शुद्धि करण और आचमन के पश्चयात चंदन लगाना चाहिए।

अनामिका उंगली से श्रीखंड चंदन लगाते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें:-

चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

पंचोपचार पूजन करने के पश्चयात संकल्प करना चाहिएं।

संकल्प में पुष्प, फल, सुपारी, पान, चांदी का सिक्का, श्रीफल (नारियल), मिठाई, मेवा, आदि सभी सामग्री थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर संकल्प मंत्र का उच्चारण करें:-

॥ संकल्प वाक्य॥

हरि ॐ तत्सत । नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय श्री मद भगवते महा पुरुषस्य विष्णो राज्ञाया प्रवर्त मान स्याद्य ब्राह्मणों द्वितीय प्रहरार्द्वे श्रीश्वेत्वाराह काले वै वस्तव -मन्वन्तरे अश्त्विश्तित्मे कल्युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्ड भारत वर्षे आर्या वर्तान्तर्गत देशैक पुण्य क्षेत्र षष्टि सम्वस्ताराणां मध्ये 'अमुक ' नामिन संवत्सरे 'अमुक ' अयने 'अमुक 'त्रृतौ .अमुक मासे 'अमुक पक्षे .अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे ,अमुक योग 'अमुक 'वासरे 'अमुक राशिस्ये सूर्ये, भौमें, बुधे, गुरौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुण विशिष्टाया तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्ने 'अमुक 'नाम्नि शर्मा (वर्मा इत्यादि) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये। तत्पूर्वागंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथामिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

विशेष सुझाव: उक्त संकल्प वाक्य में जहाँ-जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ क्रमशः वर्तमान संवत्सर, अयन, रुतु, मॉस, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, सूर्यादि की राशी तथा अपने गोत्र, अपनी राशी एवं अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए।

गणपति पूजन:-

भारतीय शास्त्रोक्त परंपरा के अनुशार किसी भी पूजा में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा की जाती हैं।

हाथ में पुष्प लेकर भगवान गणेश का ध्यान करें।

गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू
फलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि
विघ्नेश्वरपादपंकजम्।

तत पश्चयात आवाहन करें: आह्वान हेतु हाथ में अक्षत लेकर इस मंत्र का उच्चारण करें:-

आगच्छ देव देवेश, गौरीपुत्र विनायक।
तवपूजा करोमद्य, अत्रतिष्ठ परमेश्वर॥

ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः इहागच्छ इह तिष्ठ उच्चारण करते हुए अक्षत को गणेश जी पर चढा दें।

निम्न मंत्रो का उच्चारण करते हुवे संबंधित वस्तु श्री गणेश जी को अर्पित करें।

हाथ में फूल लेकर ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः आसनं समर्पयामि,

तत पश्चयात अर्घा में जल लेकर बोलें ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि,

तत पश्चयात आचमनीय-स्नानीयं ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः आचमनीयं समर्पयामि,

तत पश्चयात वस्त्र लेकर ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः वस्त्रं समर्पयामि,

तत पश्चयात यज्ञोपवीत-ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि,

तत पश्चयात पुनराचमनीयम्, ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः रक्त चंदन लगाएं: इदम रक्त चंदनम् लेपनम् ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः,

तत पश्चयात प्रकार श्रीखंड चंदन बोलकर श्रीखंड चंदन लगाएं,

तत पश्चयात सिन्दूर चढ़ाएं "इदं सिन्दूराभरणं लेपनम् ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः,

तत पश्चयात दूर्वा और विल्बपत्र भी गणेश जी को चढ़ाएं।

पूजन के पश्चयात गणेश जी को भोग अर्पित करें: ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः इदं नानाविधि नैवेद्यानि समर्पयामि, मिष्टान अर्पित करने के लिए मंत्र- शर्करा खण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च, आहारो भक्ष्य भोज्यं गृह्यतां गणनायक।

प्रसाद अर्पित करने के पश्चयात आचमन करायें, इदं आचमनीयं ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः, तत पश्चयात पान सुपारी चढ़ायें- ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि, तत पश्चयात फल लेकर गणपति पर चढ़ाएं ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः फलं समर्पयामि, तत पश्चयात दक्षिणा रखते हुवे इस मंत्र का उच्चारण करें ॐ श्री सिद्धि विनायकाय नमः द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, तत पश्चयात विषम संख्या (1,3,5,7,9,11,21 आदि) में दीपक जलाकर निराजन अर्थात आरति करें और भगवान की आरती गायें। तत पश्चयात हाथ में फूल लेकर गणेश जी को अर्पित करें, तत पश्चयात तीन प्रदक्षिणा करें।

इसी प्रकार से अन्य सभी देवताओं का पूजन करें। गणेश के स्थान जिस देवता की पूजा करनी हो पर उस देवता के नाम का उच्चारण करें।

कलश पूजन:-

घड़े अथवा लोटे पर कलावा (मौलि) बांधकर कलश के ऊपर आम का पल्लव रखें। कलश में सुपारी, अक्षत, मुद्रा रखें, दूर्वा, नारियल पर वस्त्र लपेट कर कलश पर स्थापित करें,हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर वरूण देवता का कलश में आवाहन करें।

ॐ ततत्वायामि ब्रहमणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहर्विभि:। अहेडमानोवरुणेह बोध्युरुशं समानऽआयु: प्रमोषी:। अस्मिन कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुध सशक्तिकमावाहयामि, ॐ भूर्भुव: स्व: भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि।

तत पश्चयात जिस प्रकार गणेश जी की पूजा की है उसी प्रकार वरूण देवता की विधिवत पूजा करें।

दुर्गा पूजन:

दुर्गा पूजन हेतु सबसे पहले माता दुर्गा का ध्यान करें:

सर्व मंगल मागंल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्येत्रयम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

तत पश्चयात आवाहन करें:

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:।
दुर्गादेवीमावाहयामि॥

तत पश्चयात फूल अर्पित करते हुए उच्चारण करें। श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आसानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

तत पश्चयात अर्घ्य दें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। हस्तयो: अर्घ्यं समर्पयामि॥

तत पश्चयात आचमन अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आचमनं समर्पयामि॥

तत पश्चयात स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। स्नानार्थं जलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात स्नानांग आचमन- स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात पंचामृत स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात गन्धोदक-स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात शुद्धोदक स्नान कराएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

तत पश्चयात आचमन दें- शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात वस्त्र अर्पित करें-- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। वस्त्रं समर्पयामि ॥ वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात सौभाग्य सूत्र अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात चन्दन अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। चन्दनं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात हरिद्राचूर्ण अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। हरिद्रां समर्पयामि ॥

तत पश्चयात कुंकुम अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। कुंकुम समर्पयामि ॥

तत पश्चयात सिन्दूर अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात कज्जल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। कज्जलं समर्पयामि ॥

तत पश्चयात दूर्वाकुंर अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दूर्वाकुंरानि समर्पयामि ॥

तत पश्चयात आभूषण अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आभूषणानि समर्पयामि ॥

तत पश्चयात पुष्पमाला अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। पुष्पमाला समर्पयामि ॥

तत पश्चयात धूप लगाएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। धूपमाघ्रापयामि॥

तत पश्चयात दीप जलाएं- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दीपं दर्शयामि॥

तत पश्चयात नैवेद्य अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। नैवेद्यं निवेदयामि॥

तत पश्चयात जल अर्पित करें- नैवेद्यान्ते त्रिबारं आचमनीय जलं समर्पयामि।

तत पश्चयात फल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। फलानि समर्पयामि॥

तत पश्चयात ताम्बूल अर्पित करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। ताम्बूलं समर्पयामि॥

तत पश्चयात दक्षिणा दें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। दक्षिणां समर्पयामि॥

तत पश्चयात आरती करें- श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नम:। आरार्तिकं समर्पयामि॥

पूजन में हुई त्रुटि के निवारण हेतु क्षमा प्राथना करें।

क्षमा प्रार्थना

न मंत्रं नोयंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥1॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापित्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदप कुमाता न भवति ॥4॥
परित्यक्तादेवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरण्॥5॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥6॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभव वांछापिचनमे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिवशिव भवानीति
जपतः ॥8॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिंतन परैर्नकृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥9॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे
करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता
जननीं स्मरन्ति॥10॥
जगदंब विचित्रमत्र किं परिपूर्ण करुणास्ति चिन्मयि ।
अपराधपरंपरावृतं नहि मातासमुपेक्षते सुतम् ॥11 ॥
मत्समः पातकी नास्तिपापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवियथायोग्यं तथा कुरु ॥12॥

***

मां के चरणों निवास करते समस्त हैं तीर्थ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम कि प्रति मूर्ति जन्म देने वाली मां अपनी संतान को नौ महिने गर्भ में उसका पोषण कर, असहनीय प्रसव कष्ट सहकर उसे जन्म देती हैं। मां के इस त्याग और नि:स्वार्थ प्रेम का बदला चाहकर भी कोई नहीं चुका सकता।

समस्त व्यक्ति कि प्रथन गुरु मां होती हैं। क्योकि मां से व्यक्ति को जीवन के आदर्श और संस्कार आदि ज्ञान प्राप्त होता हैं। हमारे धर्म शास्त्रो में उल्लेख मिलता हैं कि **उपाध्याओं से दस गुना श्रेष्ठ आचार्य होते हैं, एवं आचार्य से सौ गुना श्रेष्ठ पिता और पिता से हजार गुना श्रेष्ठ माता होती है।** क्योकि मां के शरीर में सभी देवताओं और सभी तीर्थों का वास होता है। इसी लिए विश्व कि सर्वश्रेष्ठ भारतीय संस्कृति में केवल मां को भगवान के समान माना गया हैं। इस लिये मां पूज्य, स्तुति योग्य और आह्वान करने योग्य होती हैं।

महाभारत में भी उल्लेख मिलता हैं कि जब यक्ष ने युधिष्ठिर से सवाल किया कि भूमि से भी भारी कौन हैं? तो युधिष्ठिर ने उत्तर दिया

माता गुरुतरा भूमेः।

अर्थातः मां इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती हैं।

आदि शंकराचार्य का कथन हैं '

कुपुत्रो जायेत यद्यपि कुमाता न भवति।

अर्थातः पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है, पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।

भगवान श्री रामका वचन हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थातः जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होते हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद् में उल्लेख किया गया हैं।

मातृ देवो भवः

शतपथ ब्राह्मण के वचन

मातृमान पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद

अर्थातः जिसके पास माता, पिता और गुरु जेसे तीन उत्तम शिक्षक हों वहीं मनुष्य सही अर्थ में मानव बनता हैं।

संसार में मातृमान वह होता है, जिसकी माता गर्भाधान से लेकर जब तक गर्भ के शेष विधि-विधान पूरे न हो जाएं, तब तक संयमीत और सुशील व्यवहार करे। क्योकि मातृ गर्भ में संस्कारित होने का सबसे बड़ा आदर्श उदाहरण महाभारत में अभिमन्यु का देखने को मिलता हैं, जिसने अपनी मां से गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ने का उपाय सीख लिया था।

इसी मां कि ममता और नि:स्वार्थ प्रेम को पाने के लिये मनुष्य हि नहीं देवता भी तरसते हैं। इस लिये बार-बार अवतार लेकर अपनी लीलाएं बिखेरने के लिये पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। इस्से ज्ञात होता हैं कि मां के चरणों में ही सभी तीर्थ का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

इस लिये बच्चा सबसे पहले जो बोल नीकलते हैं, वह मां शब्द होता हैं, एक बार में ही झटके से बच्चे के मुंह से मां निकल जाता है यानि मां का उच्चारण भी सबसे आसान। अन्य सभी सब्दो में उसे थोडी कठिनाई होती हैं जिस कारण वह उन शब्दो का उच्चराण धीरे-धीरे सिखता हैं। सबसे बडा उदाहरण हैं, जो आपने आये दिन देखा सुना और आजमाय होगा, व्यक्ति जब परेशानी में होता हैं, कष्ट झेल रहा होता हैं, या आकस्मिक संकट आने, किसी आघात से शरीर पर चोट लग जाये तो पर सबसे पेहले मां को याद करता हैं। इस लिये मां को कष्ट देने वाली संतान को दैवि आपदा, दु:ख, कष्ट भोगना पडता हैं। अपने मां का निरादर न करें और उनकी सेवा अवश्य करें।

***

देवी उपासना में उपयुक्त एवं निषिद्ध पत्र पुष्प

संकलन गुरुत्व कार्यालय

देवी के लिये उपयुक्त पत्र-पुष्प का चयन

- ❖ विद्वानों के मतानुशार जो पत्र-पुष्प भगवान शिवजी को प्रिय हैं या जो शिवजी को अर्पण किये जाते हैं वे सभी पत्र-पुष्प देवी भगवती को भी प्रिय हैं ।
- ❖ देवी भगवती को अपामार्ग अधिक प्रिय हैं, इस लिए अधिकतर देवी पूजन में अपामार्ग विशेष रुप से चढाया जाता हैं।
- ❖ इस के अलावा विद्वानो का कथन हैं की जो पत्र-पुष्प शास्त्रोक्त विधान से भगवान शिव की पूजा में निषेध हैं उसे भी देवी पूजन में चढ़ाये जा सकते हैं।
- ❖ देवी भगवती को सभी प्रकार के लाल फूल चढाएं जा सकते हैं क्योकि लाल रंग के सभी फूल भगवतीको प्रिय हैं तथा सुगन्धित समस्त श्वेत फूल भी भगवतीको अधिक प्रिय हैं।
- ❖ देवी भगवती के पूजन में चमेली, मदार, केसर, बेला, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजित (अर्थात शंखपुष्पी) आदिका उपयोग किया जा सकता हैं।
- ❖ कुछ जानकारों का कथन हैं की देवी भगवती के पूजन में आक और मदार यह दो फूलों को निषेध हैं।
- ❖ यहीं कारण हैं की उक्त दोनों फूल को विभिन्न मत के कारण देवी दुर्गा के पूजन मे उपयोग भी किय जाते हैं और निषिद्ध भी माने जाते हैं।
- ❖ यदि किसी कारण वश जब अन्य उपयुक्त फूल न मिले तब इन दोनोंका उपयोग किया जा सकता हैं ।
- ❖ देवी दुर्गा को छोड़कर देवियों पर इन दोनों को नहीं चढाना चाहिए। लेकिन देवी दुर्गा पर चढ़ाया जा सकता हैं। क्योंकि कुछ जानकारों का मत हैं की दुर्गाकी पूजामें इन दोनोंका विधान शास्त्रोक्त हैं।
- ❖ शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास), गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार, शल्लकी, माधव आदि लताएँ, कुशकी मंजरियाँ, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल ये फूल देवी भगवती को प्रिय हैं।
- ❖ आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल उपयुक्त एवं प्रतिषिद्ध हैं अर्थात ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं।

* विहित-प्रतिशिद्धके सम्बन्धके तत्त्वसागरसंहिताक में उल्लेख हैं कि जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कि जा सकती हैं।

मनोकामना पूर्ति हेतु नवरात्र में देवी को कैसे अर्पण करें भोग?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र के नौ दिनों में तीन देवियों क्रमशः पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती और देवी के नौ रुपों का कमशः शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का पूजन किया जाता हैं।, नवरात्रे के प्रथम तीन दिन पार्वती के तीन स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं, अगले तीन दिन माँ लक्ष्मी के स्वरुपों का पूजन किया जाता हैं और आखिरी के तीन दिन सरस्वती माता के स्वरुपों की पूजा की जाती हैं। उसी प्रकार नौ देवीयों को क्रमशः प्रथम दिन शैलपुत्री, द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी, तृतीय दिन चन्द्रघण्टा, चतुर्थ दिन कुष्माण्डा, पंचम् दिन स्कन्द माता, षष्ठम् दिन कात्यायिनी, साप्तम् दिन कालरात्रि, अष्टम् दिन महागौरी और नौवें दिन सिद्धिदात्री के रुप का पूजन किया जाता हैं।

नवरात्रे के नौ दिनों तक भक्त के मन में यह कौतुहल होता हैं, कि वह माता को भोग में क्या चढ़ाये, जिससे माँ शीघ्र प्रसन्न हों जाये. हिन्दू धर्म में कोई भी त्यौहार, व्रत-उपवास देवी-देवताओं को भोग, प्रसाद अर्त्पण किये बिना संपन्न नहीं होता है। नवरात्रे के नौ दिन में नौ देवियों को अलग-अलग भोग लगाने का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित हैं।

नवरात्र के प्रथम दिन देवी शैलपुत्री:

नवरात्र के प्रथम दिन मां के शैलपुत्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके नैवेद्य के रूप में देवी को गाय का घृत (घी) अर्पण करना चाहिए। मां को चरणों चढ़ाये गये घृत को ब्राम्हणों में बांटने से रोगों से मुक्ति मिलती है। देवी कृपा से व्यक्ति सदा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख साधनो को कमी महसुस नहीं होतीं।

नवरात्र के द्वितीय दिन ब्रह्माचारिणी:

नवरात्र के दूसरे दिन मां के ब्रह्मचारिणी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। मां ब्रह्मचारिणी तप का आचरण करने वाली भगवती हैं इसी कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को चीनी का भोग लगाकर दान करना चाहिए। चीनी का भोग लागाने से मनुष्य दीर्घजीवी होता हैं। देवी कृपा से व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

नवरात्र के तृतीय दिन चन्द्रघंटा:

नवरात्र के तीसरे दिन मां के चन्द्रघण्टा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं। इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को दूध का भोग लगाकर दान करना चाहिए। दूध का भोग लागाने से व्यक्ति को दुखों से मुक्ति मिलती हैं। देवी कृपा से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

नवरात्र के चतुर्थ दिन कूष्माण्डा:

नवरात्र के चतुर्थ दिन मां के कूष्माण्डा स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को मालपुआ भोग लगाकर दान करना चाहिए। मालपुए का भोग लागाने से व्यक्ति कि विपत्ति का नाश होता हैं। देवी कृपा से व्यक्ति को सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

नवरात्र के पंचम दिन स्कंदमाता:

नवरात्र के पांचवें दिन मां के स्कंदमाता स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय कि माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को केले का भोग लगाकर दान करना चाहिए। केले का भोग लागाने से व्यक्ति कि बुद्धि, विवेक का विकास होता हैं। व्यक्ति के परिवारीकसुख समृद्धि में वृद्धि होती हैं। देवी कृपा से व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

नवरात्र के षष्ठम् दिन कात्यायनी

नवरात्र के छठें दिन मां के कात्यायनी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महर्षि कात्यायन कि पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नाम से जाना जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को मधु (शहद, महु, मध) का भोग लगाकर दान करना चाहिए। मधु का भोग लागाने से व्यक्ति को सुंदर स्वरूप कि प्राप्ति होती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

नवरात्र के सप्तम् दिन कालरात्रि

नवरात्र के सातवें दिन मां के कालरात्रि स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को गुड़ का भोग लगाकर दान करना चाहिए। गुड़ का भोग लागाने से व्यक्ति के समस्त शोक दूर होते हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

नवरात्र के अष्टम् दिन महागौरी

नवरात्र के आठवें दिन मां के महागौरी स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा होने के कारण इनका नाम महागौरी हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को श्रीफल (नारियल) का भोग लगाकर दान करना चाहिए। श्रीफल (नारियल) का भोग लागाने से व्यक्ति के संताप दूर होते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी हैं।

नवरात्र के नवम् दिन सिद्धिदात्री

नवरात्र के नौवें दिन मां के सिद्धिदात्री स्वरूप का पूजन करने का विधान हैं। माता सिद्धिदात्री सभी प्रकार की सिद्धियों की प्रदाता माना गया हैं। सिद्धिदात्री को समस्त्य सिद्धियों की स्वामिनी भी माना जाता हैं। इस दिन देवी का षोडशेपचार से पूजन करके देवी को धान के लावे का भोग लागाने से व्यक्ति को लोक और परलोक का सुख प्राप्त होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

नवरात्री माँ को प्रसन्न करने का सुनहरा अवसर

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र अर्थात माँ दुर्गा की उपासना में समर्पित नौ रात। **दुर्गा का अर्थ हैं,** दुर्गति नाशिनी हैं, जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं संचालन तीनों व्यवस्थाएं जिस शक्ति के आधीन सम्पादित होती है वह जगत जननी माँ आदिशक्ति भगवती हैं। माँ दुर्गा के रुप अनंत हैं, लेकिन देवी को प्रधान नौ रूपों में नवदुर्गा के नाम से जाना जाता हैं। आदि शक्ति माँ दुर्गा समग्र लोक में अपनी कृपा और करूणा वर्षाती है, माँ दुर्गा अपने भक्तों में सद्द गुणों का विकास करके उनमें अपनी शक्ति का संचार करते हुवे संसार के समग्र प्राणियों का संचालन करती है।

भौतिकता में रत मनुष्य को असंखय उपाय, पूजन, हवन, जप-तप के बाद भी मन की शांति नहीं मिलती। ऐसे में हर तरह से निराश और हारा चुका मनुष्य यदि मां दुर्गा की शरण लेता है जो निश्चित ही माँ दुर्गा उसकी दुर्गति का निवारण करती ही है।

क्योकि, माँ आद्यशक्ति की कृपा से मनुष्य में आत्मबल, दृढ़ विश्वास, दया, प्रेम, भक्ति जैसे सद्गुणों का विकास होता हैं। जीवन के इन्हीं मूल्यों को समझ कर मनुष्य जीवन में सच्चा सुख-शांति, वैभव, धन संपदा को प्राप्त करता है। अन्यथा इस संसार के दलदल से निकलना उसके लिए संभव नहीं है। इसलिए मनुष्य को असंभव को भी संभव कर दिखाने की शक्ति देवी कृपा से ही प्राप्त होती हैं।

नवरात्र में पूजा उपासना का मुख्य उद्देश्य होता हैं, नवरात्र में माँ दुर्गा की आराधना, मनुष्य के तन-मन और इन्द्रियां संयमित होने लगती हैं। पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा भाव से कि गई उपवास से मनुष्य का तन संतुलित होता है। मनुष्य के तन के सन्तुलित होने पर योग बल से मनुष्य की इंद्रियां संयमित हो जाती है। इन्द्रियों के संयमित होने पर मनुष्य का मन देवी आराध्या में स्थिर हो जाता है। जिस के बल पर मनुष्य को मनोवांछित लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं, जिसमें जरा भी संसय नहीं हैं।

देवी उपासना के बारे में उल्लेख मिलता हैं की जो मनुष्य अपने मन को स्थिर कर लेता हैं, वह संसार सभी चक्र से छूट जाता है। संसार के किसी प्रकार के विध्न-बाधाएं उसे कष्ट नहीं पहुंचा सकते। वह मनुष्य माँ भगवती दुर्गा के प्रिय वाहन सिंह की तरह निर्भय बन जाता है, संसार की समस्त सिद्धियां अपने पराक्रम के बल पर मिलने लगती हैं। नवरात्र के दौरान शास्त्रोक्त मंत्रों द्वारा देवी से यहीं प्राथना की जाती हैं, की देवी अवगुणों से हमें मुक्त करके सद्गुणों से युक्त करें।

नवरात्र में दस महाविद्या की उपासना विशेष लाभप्रद हैं

संकलन गुरुत्व कार्यालय

दस महाविद्या को देवी दुर्गा के ही दस रूप माने जाते हैं। दसों महाविद्या में हर महाविद्या अपनी अद्वितीय शक्ति से मनुष्य के समस्त संकटों को दूर करने वाली हैं। इन दस महाविद्याओं के महत्व को विभिन्न धर्मशास्त्रों में अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण माना गया हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका।

देवी काली

काली हिन्दू धर्म की एक प्रमुख देवी हैं । देवी काली को मां दुर्गा की दस महाविद्याओं मे से एक माना गया हैं। देवी काली शक्ति का अद्द्भुत स्वरूप है। मां दुर्गा ने काली रूप दैत्यों के संहार के लिए धारण किया था। देवी काली की उत्पत्ति राक्षसों का अंत करने के लिए हुई थी। देवी काली की उत्पत्ति का मूल कारण धर्म की रक्षा और धर्म की स्थापना ही था देवी काली का पूजन भारत के विभिन्न प्रादेशिक क्षेत्रों में सैकड़ो वर्षो से होता आया है। देवी काली का अर्थ काल अर्थात समय से है जो सबको ग्रास कर लेती है। देवी काली का स्वरूप भले ही काला और डरावना लगता हैं लेकिन देवी माँ अपने भक्तों को अभय वरदान देने वाली है। भगवती निराकार होकर भी संसार के समस्त प्राणीयों के दु:ख दूर करने के लिये युग-युग में अनेकों रूप धारण करके अवतार लेती रहीं हैं। देवी काली को काल एवं परिवर्तन की देवी माना गया हैं। देवी काली का पूजन ब्रहमांड के उद्धारक रूप में किया जाता है।

देवी तारा

माँ तारा को मां दुर्गा की दस महाविद्याओं मे से एक माना गया हैं। विभिन्न तंत्र साधनाओं में देवी तारा की उपासना सर्वसिद्धिदायक मानी जाती है। देवी तारा को सूर्य प्रलय की अघिष्ठात्री देवी उग्र रुप माना गया है। जब मनुष्य को चारों और निराशा और घोर विपत्ति नज़र आरही हो उससे छुटकारा पाने के लिए कोई राह दिखाई नहीं दें रही हो, जब अन्य कोई देवी-देवता सहायक न हो तब मां भगवती तारा के रूप में उपस्थित हो कर अपने भक्त को घोर विपत्ति से मुक्त कराती हैं। देवी तारा के पूजन से शत्रुओं का नाश होता

हैं, ज्ञान, सुख-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की वृद्धि होती हैं। इस के अलावा देवी तारा भोग और मोक्ष प्रदान करने में भी सहायक मानी गई हैं। उग्र तारा, नील सरस्वती और एकजटा देवी तारा के रूप हैं। देवी तारा को ब्रहमांड की प्रमुख देवी एवं राज-राजेश्वरी माना गया हैं।

माता ललिता

माँ ललिता दस महाविद्याओं में से एक हैं यह देवी दुर्गा का एक रूप हैं जो ललिता के नाम से जाना जाता है।। देवी ललिता जी का स्वरुप अत्यंत ही उज्जवल व प्रकाश मान है। कालिका पुराण में उल्लेख हैं की देवी की गौर वर्ण, दो भुजाओं युक्त रक्तिम कमल पर विराजित हैं। ललिता देवी के पूजन से मनुष्य को समृद्धि की प्राप्त होती है। दक्षिणमार्गी शाक्तों (अर्थात भगवती शक्ति की उपासना) के मतानुसार देवी ललिता को चण्डी का स्थान प्राप्त है। माँ ललिता की पूजा पद्धति में ललितासहस्रनाम, ललितोपाख्यान, ललितात्रिशती आदि का पाठ किया जाता है।

माता भुवनेश्वरी

धर्म शास्त्रों में माता भुवनेश्वरी को सृष्टि के समस्त ऐश्वयर की स्वामिनी कहां गया हैं। भुवनेश्वरी माता का वर्ण श्याम तथा गौर वर्ण हैं, स्वरुप एक मुख, चार हाथ हैं चार हाथों में गदा शक्ति का एवं दंड व्यवस्था का प्रतीक है। आशीर्वाद मुद्रा प्रजापालन का प्रतीक है, यह सर्वोच्च सत्ता का प्रतीक हैं। विश्व भुवन में जो, ईश्वर हैं, वह देवी भुवनेश्वरी हैं। देवी के नख में ब्रह्माण्ड का दर्शन होता है। माता भुवनेश्वरी सूर्य के समान लाल वर्ण युक्त दिव्य आभा से युक्त हैं। माता के मंत्र भी अत्यंत प्रभावी माने जाते हैं। माँ के भक्तो के लिए देवी के बीज मंत्र का प्रयोग अन्य देवी-देवताओं की आराधना में विशेष सहायक माना गया हैं माता भुवनेश्वरी के मूल मंत्र और पंचाक्षरी मंत्र का जाप करना विशेष लाभप्रद एवं सिद्धि प्रदान करने वाला हैं।

त्रिपुर भैरवी

धर्म शास्त्रों में माँ त्रिपुर भैरवी को तमोगुण एवं रजोगुण से युक्त माना गया हैं। शास्त्रों में माँ भैरवी के अन्य तेरह स्वरुप बताये गये हैं। माता के किसी भी स्वरुप की साधना मनुष्य को विशेष फल प्रदान करने वाली है। माँ त्रिपुर का स्वरुप कंठ में मुंड माला धारण किये, हाथों में माला धारण किये रहती हैं। माँ त्रिपुर भैरवी स्वयं साधनामय हैं उनका एक हाथ अभय मुद्रा और दूसरा हाथ वर मुद्रा मैं है जो भक्तों को सभी प्रकार के सुख सौभाग्य प्रदाता है। माँ त्रिपुर भैरवी लाल वस्त्र धारण किया है। माँ त्रिपुर भैरवी के पूजन में लाल रंग का विशेष रुप से प्रयोग किया जाता है। त्रिपुर भैरवी सिद्धियाँ प्रदान करने वाली होती हैं।

छिन्नमस्ता

दस महा विद्याओं में देवी छिन्नमस्ता को छठी महाविद्या कहा जाता हैं। मार्कंडेय पुराण व शिव पुराण आदि में छिन्नमस्ता देवी के रूप का स्पष्ट वर्णन किया गया है इनके अनुसार जब देवी ने चंडी का रूप धारण कर राक्षसों का संहार किया। दैत्यों को परास्त कर देवों को विजय दिलवाई तो चारों ओर उनके नाम की जयजय कार होने लगी। लेकिन देवी की सहायक योगिनियाँ अजया और विजया की रक्त पिपासा शांत नहीं हो पाई थी, इस पर उनकी रक्त पिपासा को शांत करने हेतु देवी छिन्नमस्ता ने अपना मस्तक काटकर अपने रक्त से उनकी रक्त प्यास बुझाई। इस कारण माता को छिन्नमस्तिका नाम से जाना जाता हैं।

धूमावती

धूमावती देवी का स्वरुप बड़ा भयंकर प्रतीत होता है। देवी धूमावती का स्वरूप चाहे जितना उग्र या भयंकर क्यों न हो वह संतान के लिए कल्याणकारी ही होता है। आद्यशक्ति भगवती नें धूमावती रूप शत्रुओं के संहार के लिए ही धारण किया है। मां धूमावती के पूजन से मनुष्य को अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। सृष्टी में किसी भी प्राणी को नष्ट करने या संहार करने की सभी क्षमताएं देवी में निहीत हैं। शास्त्रोक्त मतानुषा महर्षि भृगु, ऋषि दुर्वासा, परशुराम आदि की मूल शक्ति धूमावती हैं। धूमावती देवी को सृष्टि में कलह की देवी होने के कारण इनको कलहप्रिय भी कहा जाता है। वर्षा ऋतु के चार महिने देवी का प्रिय समय होता

है इस दौरान देवी की पूजा-अर्चना, साधना आदि करना विशेष लाभप्रद माना जाता है। धूमावती देवी को भय कारक एवं कलह प्रिय भी माना गया हैं। माँ धूमावती भक्तों को सभी कष्टों को मुक्त कर देने वाली है।

माँ बगलामुखी

देवी बगलामुखी दसमहाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं। माँ बगलामुखी स्तंभन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं। बगलामुखी देवी रत्नजडित सिहासन पर विराजती हो कर शत्रुओं का नाश करती हैं। माँ बगलामुखी अपने भक्तों के भय को दूर करने वाली और अपने भक्त के शत्रुओं की अनिष्टकारी शक्तियों को नाश करने वाली हैं। माँ बगलामुखी को पीताम्बरा नाम से भी जाना जाता है, क्योकी देवी को पीला रंग अति प्रिय है। धर्मशास्त्रों में देवी बगलामुखी का रंग स्वर्ण के समान पीला बताया गया है। माँ बगलामुखी में संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समाहित हैं। माता बगलामुखी की उपासना मुख्य रुप से शत्रुनाश, वाकसिद्धि, वाद विवाद में विजय के लिए की जाती है। माँ बगलामुखी की उपासना से भक्त के सकल शत्रुओं का नाश होता है तथा भक्त का जीवन सभी प्रकार की बाधा से मुक्त हो जाता है।

देवी मातंगी

देवी मातंगी दसमहाविद्या में नवीं महाविद्या हैं। यह वाणी और संगीत की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। देवी मातंगी में संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश हैं। देवी मातंगी दांपत्य जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने वाली होती हैं। देवी मातंगी के पूजन से गृहस्थ मनुष्य को सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। देवी मातंगी अपने भक्तों को अभय का फल प्रदान करती हैं। देवी मातंगी अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाली हैं। देवी मातंगी को उच्छिष्टचांडालिनी व महापिशाचिनी के नाम से भी जाना जाता है। शास्त्रकारों ने मातंगी के विभिन्न प्रकार के भेद बताये हैं, उनमें प्रमुख हैं, उच्छिष्टमातंगी, राजमांतगी, सुमुखी, वैश्यमातंगी, कर्णमातंगी, आदि यह देवी दक्षिण तथा पश्चिम की आधिष्ठाता हैं। ब्रहमयामल में उल्लेख हैं की मातंग मुनि की दीर्घकालीन तपस्या के कारण देवी राजमातंगी रूप में उनके सम्मुख प्रकट हुईं।

देवी कमला

देवी कमला का स्वरुप का वर्ण स्वर्ण जैसी आभा युक्त है। देवी कमला को गजराज सूंड में सुवर्ण कलश लेकर स्नान कराते हैं। कमल पर आसीन हुए मां स्वर्ण से सुशोभित रहती हैं। सुख संपदा की अधिष्ठात्री देवी कमला समृद्धि और ऐश्वर्य दायक हैं। देवी कमला की साधना से साधक धनी और विद्यावान बन जाता है। भक्ति को चारों तरफ यश और सम्मान की प्राप्ति होती है। देवी कमला चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली और साधक को समस्त बंधनों से मुक्त करा देने वाली हैं। माँ कमला ऐश्वर्य, धन संपदा की आधिष्ठात्री देवी है, इस लिए भौतिक सुख-साधनों की इच्छा रखने वाल सभी मनुष्यों के लिए देवी कमला की अराधना सर्वश्रेष्ठ बतायी गयी हैं।

***

नवार्ण मंत्र जप से दूर करे नवग्रहों की पीड़ा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दुर्गा पूजा शक्ति उपासना का महापर्व हैं। शारदीय नवरात्र के दिनो में ग्रहों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए मां दुर्गा की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है।

शक्ति एवं भक्ति के साथ सांसारिक सुखों को देने के लिए वर्तमान समय में यदि कोई देवता है। तो वह एक मात्र देवी दुर्गा ही हैं। सामान्यतया समस्त देवी-देवता ही पूजा का अच्छा परिणाम देते हैं।

हमारे धर्म शास्त्रों के अनुशार:

'कलौ चण्डी विनायकौ'

अर्थातः कलियुग में दुर्गा एवं गणेश हि पूर्ण एवं तत्काल फल देने वाले हैं।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुशार:

नौरत्नचण्डीखेटाश्च जाता निधिनाहढवाप्तोहढवगुण्ठ देव्या।

अर्थातः नौ रत्न, नौ ग्रहों कि पीड़ा से मुक्ति, नौ निधि कि प्राप्ति, नौ दुर्गा के अनुष्ठान से सर्वथा सम्भव है। इसका तत्पर्य हैं कि नवदुर्गा नवग्रहों के लिए ही प्रवर्तित हुईं हैं।

ज्योतिष कि द्रष्टी में नवग्रह संबंधित पीड़ा एवं दैवी आपदाओं से मुक्ति प्राप्त करने का सरल साधन देवी कि आराधना हैं। यदि जन्म कुंडली में चंडाल योग, दरिद्र योग, ग्रहण योग, विष योग, कालसर्प एवं मांगलिक दोष, एवं अन्यान्य योग अथवा दोष एसे हैं, जिस्से व्यक्ति जीवन भर अथक परिश्रम करने के उपरांत भी दुःख भोगता रहता हैं। जिसकी शांति संभवतः अन्य किसी पूजा, अर्चना, साधना, रत्न एवं अन्य उपायो से सरलता से नहीं होती हैं। अथवा पूर्ण ग्रह पीडाए शांत नहीं हो पाती हैं। एसी स्थिती में आदि शक्ति मां भगवती दुर्गा के नव रुपो कि आराधना

से व्यक्ति सरलता से विशेष लाभ प्राप्त कर सकता हैं।

भगवान राम ने भी इसके प्रभाव से प्रभावित होकर अपनी दश अथवा आठ नहीं बल्कि नवधा भक्ति का ही उपदेश दिया है। अनादि काल से कि देवता, दानव, असुरों से लेकर मनुष्यों में किसी भी प्रकारका संकट होने पर

समस्त लोक में मां दुर्गा कि अराधना करने का प्रचलन चला आरहा हैं। क्योकि मां दुर्गा ने सभी देव-दानव-असुर-मनुष्य सभी प्राणी मात्र का उद्धार किया हैं।

इसलिये किसी भी प्रकार के जादू-टोना, रोग, भय, भूत, पिशाच्च, डाकिनी, शाकिनी आदि से मुक्ति कि प्राप्ति के लिये मां दुर्गा कि विधि-विधान से पूजा-अर्चना सर्वदा फलदायक रहीं है।

दुर्गा दुखों का नाश करने वाली हैं। इसलिए नवरात्रि के दिनो में जब उनकी पूजा पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से कि जाती हैं, तो मां दुर्गा कि प्रमुख नौ शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं, जिससे नवों ग्रहों को

नियंत्रित करती हैं, जिससे ग्रहों से प्राप्त होने वाले अनिष्ट प्रभाव से रक्षा होकर ग्रह जनीत पीडाएं शांत हो जाती हैं।

दुर्गा कि नव शक्ति को जाग्रत करने हेतु शास्त्रों में नवार्ण मंत्र का जाप करने का विधान हैं।

नव का अर्थात नौ एवं अर्ण का अर्थात अक्षर होता हैं। (नव+अर्ण= नवार्ण) इसी कारण नवार्ण नव अक्षरों वाला प्रभावी मंत्र हैं।

नवार्ण मंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे

नव अक्षरों वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र के हर अक्षर में देवी दुर्गा कि एक-एक शक्ति समायी हुई हैं, जिस का संबंध एक-एक ग्रहों से हैं।

1. नवार्ण मंत्र का प्रथम बीज मंत्र **ऐं** हैं, **ऐं** से प्रथम नवरात्र को दुर्गा कि प्रथम शक्ति शैल पुत्री कि उपासना कि जाती हैं। जिस में सूर्य ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
2. नवार्ण मंत्र का द्वितीय बीज मंत्र **ह्रीं** हैं, **ह्रीं** से दूसरे नवरात्र को दुर्गा कि द्वितीय शक्ति ब्रहमचारिणी कि उपासना कि जाती हैं। जिस में चंद्र ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
3. नवार्ण मंत्र का तृतीय बीज मंत्र **क्लीं** हैं, **क्लीं** से तीसरे नवरात्र को दुर्गा कि तृतीय शक्ति चंद्रघंटा कि उपासना कि जाती हैं। जिस में मंगल ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
4. नवार्ण मंत्र का चतुर्थ बीज मंत्र **चा** हैं, **चा** से चौथे नवरात्र को दुर्गा कि चतुर्थ शक्ति कूष्माण्डा कि उपासना कि जाती हैं। जिस में बुध ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
5. नवार्ण मंत्र का पंचम बीज मंत्र **मुं** हैं, **मुं** से पाँचवे नवरात्र को दुर्गा कि पंचम शक्ति स्कंदमाता कि उपासना कि जाती हैं। जिस में बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
6. नवार्ण मंत्र का षष्ठ बीज मंत्र **डा** हैं, **डा** से छठे नवरात्र को दुर्गा कि छठी शक्ति कात्यायनी कि उपासना कि जाती हैं। जिस में शुक्र ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
7. नवार्ण मंत्र का सप्तम बीज मंत्र **यै** हैं, **यै** से सातवें नवरात्र को दुर्गा कि सप्तम शक्ति कालरात्रि कि उपासना कि जाती हैं। जिस में शनि ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
8. नवार्ण मंत्र का अष्टम बीज मंत्र **वि** हैं, **वि** से आठवें नवरात्र को दुर्गा कि अष्टम शक्ति महागौरी कि उपासना कि जाती हैं। जिस में राहु ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।
9. नवार्ण मंत्र का नवम बीज मंत्र **चै** हैं, **चै** से नवमें नवरात्र को दुर्गा कि नवम शक्ति सिद्धिदात्री कि उपासना कि जाती हैं। जिस में केतु ग्रह को नियंत्रित करने वाली शक्ति समाई हुई हैं।

इस नवार्ण मंत्र दुर्गा कि नवो शक्तियाँ व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार कि प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होती हैं।

जप विधान

प्रतिदिन स्नान इत्यादिसे शुद्ध होकर नवार्ण मंत्र का जाप 108 दाने कि माला से कम से कम तीन माला जाप अवश्य करना चाहिए।

दुर्गा सप्तशती के अनुशार

नवार्ण मंत्र के नौ अक्षरों मंत्र के पहले ॐ अक्षर जोड़कर भी कर सकते हैं ॐ लगाने से भी यह नवार्ण मंत्र के समान हि फलदायक सिद्ध होता हैं। इसमें लेस मात्र भी संदेह नहीं हैं। अतः मां भगवती दुर्गा कि कृपा प्राप्ति एवं नवग्रहो के दुष्प्रभावो से रक्षा प्राप्ति हेतु नवार्ण मंत्र का जाप पूर्ण निष्ठा एवं श्रद्धा से कर सकते हैं।

नवरात्री में करे ग्रह शांति के सरल उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्री के दौरान ग्रह शांति के उपायो को कर के मनुष्य सभी अशुभ ग्रह जनित बाधाऔ को सरलता से दूर कर सकता हैं। नवरात्र का समय ग्रहों को शांत करने हेतु सर्वोत्तम समय माना जाता हैं। क्योकि नवरात्री के दौरान प्रकृति में होने वाले परिवर्तन एवं सामाजिक परिवेश के कारण मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति एवं उसकी संयम शक्ति का अत्याधिक उच्च स्तर की होती हैं। यहि कारण हैं की इस दौरान कि जाने वाली सभी पूजा, उपासना, साधना आदि अत्याधिक लाभप्रद मानी गई हैं। यदि मनुष्य किसी ग्रहों से पीड़ित हो, तो वह इन नौ दिनों में देवी दुर्गा के पूजन के साथ में यदि ग्रह शांति के उपायो को करके शीघ्र लाभ प्राप्त कर सकते हैं, नवरात्र ग्रह शांति के लिए भी उत्तम समय होता है।

विद्वानों का कथन हैं की देवी दुर्गा ही सभी प्रकार के मंत्र, यंत्र और तंत्र का मुख्य आधार हैं। धर्म शास्त्रों में समस्त मंत्र, यंत्र और तंत्र का उद्गम देवी आद्यशक्ति भगवती से माना गया हैं।

यदि जन्म कुंडली (जातक/ जन्म पत्री) में कोई ग्रह कमजोर है या अशुभ भाव का स्वामी हो एवं अन्य भाव को देख कर अपना अशुभ प्रभाव दे रहा हो तो जातक के लिए उस ग्रह को शांत करना आवश्यक होता हैं जिस्से ग्रह अपना प्रतिकूल प्रभाव के स्थान पर अनुकूल प्रभाव प्रदान करें।

किसी भी ग्रह के प्रभाव को अनुकूल बनाने का उत्तम समय नवरात्र हैं, नवरात्र के दौरान ग्रह शांति के उपायो द्वारा ग्रह के अशुभ प्रभाव को शीघ्र एवं अति सरलता से कम किया जा सकता हैं।

विद्वानों का कथ हैं की नौरात्र के नौ दिन यदि प्रतिदेन हर देवीयों के साथ के साथ में एक ग्रह की शांति के उपाय किये जाते तो वह अत्याधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं और जातक को ग्रहों के अशुभ प्रभाव से जो भी परेशानी हो रही है उनसे आपको राहत मिलने लगती है।

नवरात्रों के न दिनों में नवग्रह शांति का करम इस प्रकार है

- ❖ प्रतिपदा के दिन आप मंगल ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ द्वितीय के दिन राहु ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ तृतीया के दिन बृहस्पति ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ चतुर्थी के दिन शनि ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ पंचमी के दिन बुध ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ षष्ठी के दिन केतु ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ सप्तमी के दिन शुक्र ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ अष्टमी के दिन सूर्य ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।
- ❖ नवमी के दिन चन्द्रमा ग्रह की शांति हेतु पूजन करना चाहिए।

ग्रह शांति के लिए पूजा शुरू करने से पहले कलश स्थापन और माँ दुर्गा का विधि-विधान से पूजन करना चाहिए। माँ दुर्गा के पूजन के पश्चयात लाल रंग के वस्त्र पर नवग्रह यंत्र स्थापित करें (यदि किसी एक-दो ग्रहों या निधिष्ठ ग्रह के लिए पूजन करना हो तो उसका यंत्र)। यंत्र की स्थापना के पश्चयात नवग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हुवे यंत्र का पूजन करे उसके पश्चयात नवग्रह शांति हेतु संकल्प करें।

❖ विद्वानों का मत हैं की नवरात्र के प्रथम दिन मंगल ग्रह की शांति करनी चाहिए। मंगल ग्रह की शांति

हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से मंगल बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात मंगल कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के दूसरे दिन राहु ग्रह की शांति करनी चाहिए। राहु ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से राहु बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात राहु कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के तीसरे दिन बृहस्पति (गुरु) ग्रह की शांति करनी चाहिए। बृहस्पति (गुरु) ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से बृहस्पति (गुरु) बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात बृहस्पति (गुरु) कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के चौथे दिन शनि ग्रह की शांति करनी चाहिए। शनि ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से शनि बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात शनि कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के पांचवे दिन बुध ग्रह की शांति करनी चाहिए। बुध ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से बुध बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात बुध कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के छठे दिन केतु ग्रह की शांति करनी चाहिए। केतु ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से केतु बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात केतु कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के सातवे दिन शुक्र ग्रह की शांति करनी चाहिए। शुक्र ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से शुक्र बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात शुक्र कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के आठवे दिन सूर्य ग्रह की शांति करनी चाहिए। सूर्य ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से सूर्य बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात सूर्य कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र के नौवे दिन चंद्र ग्रह की शांति करनी चाहिए। चंद्र ग्रह की शांति हेतु, रुद्राक्ष की माला या स्फटिक की माला से चंद्र बीज मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र जप के पश्चयात चंद्र कवच एवं अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करना विशेष रुप से लाभप्रद माना जाता हैं।

❖ नवरात्र में नवग्रह शांति के विषय में अन्य मत के अनुशार नवरात्र के प्रथम दिन, सूर्य, द्वितीय दिन चंद्रमा, तृतीय दिन मंगल, चतुर्थ दिन बुध, पंचम दिन गुरु(बृहस्पति), षष्ठम दिन शुक्र, सप्तम दिन शनि, अष्टम दिन राहु और नवम दिन केतु का पूजन किया जा सकता हैं।

❖ अंक शास्त्र के अनुशार, नवरात्र के प्रथम दिन, सूर्य, द्वितीय दिन चंद्रमा, तृतीय दिन गुरु(बृहस्पति), चतुर्थ दिन राहु, पंचम दिन बुध, षष्ठम दिन शुक्र, सप्तम दिन केतु, अष्टम दिन शनि और नवम दिन मंगल का पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

❖ नवरात्र की समाप्ति के पश्चयात अगले दिन नवग्रह यंत्र (इसी के साथ यदि किसी अलग यंत्र की स्थापना की हो तो उस यंत्र को भी) को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें उसका प्रतिदिन धूप-दीप से पूजन करने से ग्रह जनित पीड़ाएं स्वतः दूर होने लगती हैं।

नवार्ण मंत्र से होती हैं नवग्रह शांति लेख आप हमारे पूर्व प्रकाशित अंक से प्राप्त कर सकते हैं।

***

विभिन्न कामनापूर्ति हेतु नवार्ण मंत्र साधना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवार्ण मन्त्र साधना

विनियोगः-

ॐ अस्य श्री नवार्ण मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषिः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंदांसि, महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यः देवताः, नंदजा शाकुंभरी भीमाः शक्तयः, रक्तदंतिका दुर्गा भ्रामयो बीजानि, ह्रौं कीलकम्, अग्निवायु सूर्यास्तत्वानि, कार्य निर्देश जपे विनियोग।

नवार्ण मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥

नवार्ण भेद मन्त्र:

शास्त्रों में नवार्ण मन्त्र को अपने आप में अत्यन्त सिद्ध एवं प्रभावयुक्त माना गया हैं। नवार्ण मन्त्र को मन्त्र और तन्त्र दोनो में समान रुप से प्रयोग किया जाता हैं।

नवार्ण मन्त्र के शीघ्र प्रभावि प्रयोग आपके मार्गदर्शन हेतु दिये जारहे हैं।

चेतावनी:

नवार्ण मन्त्र का प्रयोग अति सावधानी से एवं योग्य गुरु, विद्वान ब्राह्मण अथवा जानकार की सलाह से करना चाहिए।

नवार्ण मोहन मन्त्र:

नवार्ण मोहन मन्त्र के बारह लाख जप करने का विधान हैं। इस प्रयोग को करने हेतु सात कुओं या नदियों का जल ताम्रकलश में लेकर उसमें आम के पत्ते डालकर नित्य उसी पानी से स्नान करना चाहिए। ललाट पर पीले चन्दन का तिलक करना चाहिए और शरीर पर पीले रंग के वस्त्र ही धारण करने चाहिए और पीले रंग के आसन का प्रयोग करना चाहिए। साधक को पश्चिम की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। बारह लाख मन्त्र जपने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण मोहन मन्त्र:

ॐ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) क्लीं क्लीं मोहनम् कुरु कुरु क्लीं क्लीं स्वाहा।

***

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र:

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र के चौबीस लाख जप करने का विधान हैं। इसमें तीन कुओं का जप ताम्रकलश में लेकर रखना चाहिए और उसी जल से नित्य स्नान करना चाहिए। इस प्रयोग को पूर्व दिशा की तरफ मुहं करके जप करना चाहिए। जप के लिए लाल वस्त्र का आसन बिछाना चाहिए व साधक को भी लाल रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए। इस प्रयोग को बीस दिनो में संपन्न करने का विधान हैं। चौबीस लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण उच्चाटन मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।

***

नवार्ण वशीकरण मन्त्र:

इस प्रयोग को बीस दिनो में संपन्न करने का विधान हैं। नदी, तालाब या कुएं के जल से स्नान करके साधक को दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। तथा सफेद आसन बिछाना चाहिए और सफेद वस्त्र धारण करने चाहिए। बीस लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण वशीकरण मन्त्र:

वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) वषट् मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण स्तंभन मन्त्र:

इस प्रयोग में साधक को पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। तथा भूरे रंग का आसन बिछाना चाहिए। सोलह लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं।

नवार्ण स्तंभन मन्त्र:

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे (अमुकं) ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभय ह्रीं जिह्वां कीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा।

***

नवार्ण विद्वेषण मन्त्र:

इस प्रयोग में साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए। तथा काले रंग का आसन बिछाना चाहिए। इस प्रयोग को बीस दिन में संपन्न करने का विधान हैं। तेरह लाख मन्त्र जप करने से यह कार्य सिद्ध होता हैं। साधना के दौरान जल में तिल डालकर स्नान करना चाहिए।

नवार्ण विद्वेषण मन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै (अमुकं) विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

नवार्ण महामन्त्र:

इस मन्त्र के उच्चारण मात्र से देवी मां प्रसन्न होती हैं। यह संपूर्ण नवार्ण महामंत्र हैं।

नवार्ण महामन्त्र:

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरी नवदुर्गे नवात्मिके नवचंडी महामाये महामोहे महायोग निद्रे जये मधुकैटभ विद्राविणि महिषासुर मर्दिनि धूम्र लोचन संहंत्री चंडमुंड विनाशिनी रक्त बीजांतके निशुंभ ध्वंसिनि शुंभ दर्पघ्नि देवि अष्टादश बाहुके कपाल खट्वांग शूल खड्ग खेटक धारिणि छिन्न मस्तक धारिणि रुधिर मांस भोजिनी समस्त भूत प्रेतादि योग ध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादि स्तुते देवि मां रक्ष रक्ष मम् शत्रून् नाशय ह्रीं फट् हूं फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो निम्न मंत्र का जाप करने से पति-पत्नी के बिचमें शांति का वातावरण बनेगा

मंत्र -

धं धिं धुम धुर्जते पत्नी वां वीं बूम वाग्धिश्वरि।
क्रं क्रीं क्रूं कालिका देवी शं षीम शूं में शुभम कुरु॥

यदि पत्नी यह प्रयोग कर रही हैं तो पत्नी की जगह पति शब्द का उच्चारण करे

प्रयोग विधि –

- प्रातः स्नान इत्यादी से निवृत्त हो कर के दूर्गा या मां काली देवी के चित्र पर लाल पुष्प भेटा कर धूप-दीप जला के सिद्ध स्फटिक माला से 21 दिन तक 108 बार जाप करे लाभा प्राप्त होता हैं।
- शीध्र लाभ प्राप्ति हेतु प्रयोग करने से पूर्व मां के मंदिर में अपनी समर्थता के अनुशार अर्थ या वस्त्र भेट करें।
- लाभ प्राप्ति के पश्चयात माला को जल प्रवाह कर दें।

यदि आप इस प्रयोग विधि करने में असमर्थ हैं?, तो आप हमसे संपर्क कर अन्य उपाय जान सकते हैं।

दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र साधना

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

शास्त्रों में दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र को अत्यन्त गोपनीय और सिद्धिदायक माना गया हैं। दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र के बारें में शास्त्रोक्त वर्णन हैं

साक्षात् सिद्धिप्रदो मंत्रो
दुर्गायाः कलिनाशनः।

अष्टाक्षरो अष्ट सिद्धिशो गोपनीयो दिगंबरैः। ॐ अस्य श्री दुर्गाष्टाक्षर मंत्रस्य महेश्वर ऋषिः, श्री दुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता, दुं बीजम्,ह्रीं शक्ति, ॐ कीलकाय नमः इति दिगबंधः, धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ध्यानः

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां
शंखाब्जखड्ग शर खेटक चापान्।
संतर्जनी च दघतीं महिषासनस्थां
दुर्गा नवारकुल पीठगतां भजेहम्।

दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र :

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः॥

फलः

उक्त मन्त्र के एक लाख जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता हैं। इस मन्त्र में अद्भुत शक्ति हैं। वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीडा से मुक्ति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति हो इस के लिये यह मन्त्र अचूक एवं सिद्धिदायक हैं।

कुमारी पूजन से सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कुमारी-पूजा से माँ भगवती अति प्रसन्न होती हैं और साधक के सकल मनोरथ सिद्ध करती हैं।

विद्वानो के मत से कुमारी पूजा में किसी भी प्रकार का जाति भेद नहीं माना जाता है। शास्त्रोक्त मत से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र इन चारों वर्णों की कुमारियों की पूजा किया जासकता हैं। चारों वर्णों की कुमारियों की पूजा से साधक को भिन्न-भिन्न फल की प्राप्ति होती हैं। **मेरु तन्त्र** में उल्लेखित है कि

- **ब्राह्मण कुमारी:** के पूजन से साधक को सर्व इष्ट फलो की प्राप्ति होती हैं।
- **क्षत्रिय कुमारी:** के पूजन से साधक को यश की प्राप्ति होती हैं।
- **वैश्य कुमारी:** के पूजन से साधक को धन की प्राप्ति होती हैं।
- **शूद्र कुमारी:** के पूजन से साधक की संतान को लाभ होता है।

स्कन्द-पुराण में उल्लेखित है कि विपत्ति-काल में अन्त्यजा-कुमारी का पूजन करना चाहिए।

शिव कुमारी-पूजा में हेय और काम-बुद्धि अनिष्ट-कारक होती है। अतः सावधान होकर कुमारी-फुजा करनी चाहिए। यामल तन्त्र में उल्लेखित है कि दो वर्ष से ऊपर की कुमारी का पूजन धर्म वैधानिक हैं, क्योंकि एक-वर्ष से कम की कुमारी की गन्ध, पुष्प, वस्त्र और नैवेद्य के प्रति रुचि नहीं होती।

अन्य धर्म ग्रन्थों में एक वर्ष से षोडश (सोलह) वर्ष तक की कन्या कों भिन्न-भिन्न देवी कही गई हैं।

वाडवानलीय तन्त्र: में कुमारी पूजन हेतु उल्लेखित है कि

- **उत्तम कल्प:** सात,
- आठ और नौ वर्ष की कन्या के पूजन से उत्तम कल्प होता हैं।
- **मध्यम कल्प:** पाँच, छः और दस वर्ष की कन्या के पूजन से मध्यम कल्प होता हैं।
- **अधम कल्प:** एक, दो, तीन और चार वर्ष की कन्या के पूजन से अधम कल्प होता हैं।

विद्वानो के मत से नवरात्र में कुमारि कन्याओं के पूजन का अत्याधिक महत्त्व है।

क्योकि शास्त्रोक्त विधान से कुमारि कन्याएं माँ का प्रत्यक्ष स्वरुप होती हैं। इस लिए कुमारि कन्याओं का पूजन देवी माँ के समान करना कल्याण कारी होता है। प्रतिपदा से नवमी तक कुमारि कन्याओं को दुर्गा स्वरुप मानकर पूजन करना अत्याधिक कल्याण कारी होता हैं। यदि कोई साधक प्रतिदिन कुमारी पूजन नहीं कर सकता हो, तो उनको अष्टमी या नवमी को कुमारी पूजन अवश्य करना चाहिए।

कुमारी-पूजा में भगवान श्री गणेश और बटुक के साथ सात, पाँच, तीन या एक कुमारी की पूजा करनी चाहिए। गणेश और बटुक की पूजा के लिए छोटे लड़कों को लेना चाहिए। आसन बिछाकर पहले गणेश, फिर बटुक, उसके बाद कुमारी पूजन करना चाहिए।

गणेशजी की पूजा के लिए 'ॐ गं गणेशाय नमः' मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, दीप, वस्त्र-नैवेद्य आदि से पूजा करे। बटुक की पूजा के लिए 'ॐ वं वटुकाय नमः' मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, दीप, वस्त्र-नैवेद्य आदि से पूजा करे।

कुमारी पूजन के लिए पहले दोनों हाथों में पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

यथा-मन्त्राक्षर-मयीं लक्ष्मीं, मातृणां रुप-धारिणीं।
नव-दुर्गात्मिकां साक्षात्, कन्यामावाहयाम्महं॥
जगत्-पूज्ये जगद्-वन्द्ये, सर्व-शक्ति-स्वरुपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

उक्त प्रार्थना करके हाथ में लिए पुष्पों को कुमारी के चरणों पर रखकर प्रणाम करे।

तत पश्चयात *ॐ कुमार्यै नमः* मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, दीप, वस्त्र-नैवेद्य आदि से विधिवत पूजन करे।

तत पश्चयात सब कन्याओं को पुष्प माला पहनाकर भोजन कराए। जब वे भली प्रकार संतुष्ट हो जाएँ, तब उनका हाथ मुँह धुलाकर उनके हाथ में दक्षिणा प्रदान करें और उन्हें प्रणाम करें।

विधिवत कुमारी पूजन

कुमारी पूजन एक सिद्ध प्रयोग है। सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्णता इस पूजन द्वारा सम्भव है।

पूजन हेतु सर्व प्रथम संकल्प करे।

यथा:

ॐ तत् सत्। अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्धे, श्री श्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बु-द्वीपे, भरत-खण्डे, अमुक-प्रदेशान्तर्गते, अमुक पुण्य-क्षेत्रे, कलियुगे, कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-नाम-सम्वत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम-शर्माऽहं (वर्माऽहं, दासोऽहं वा), सर्वापत् शान्ति-पूर्वक ममाभीष्ट-सिद्धये, गणेश-वटुकादि-सहितां कुमारी-पूजां करिष्ये।

तत पश्चयात

गणेश पूजन करें:

गं गणपतये नमः मन्त्र से भगवान् गणेश का पूजन करे।

यथा:

गं गणपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः पुष्पं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः धूपं घ्रापयामि।

गं गणपतये नमः दीपं दर्शयामि।

गं गणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

गं गणपतये नमः दक्षिणां समर्पयामि।

भगवान श्रीगणेश का पूजन करने के पश्चात् वटुक का पूजन करें।

वटुक पूजन करें:

ॐ वं वटुकाय नमः मन्त्र से भगवान वटुक का पूजन करे।

यथा-

ॐ वं वटुकाय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः पुष्पं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः धूपं घ्रापयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः दीपं दर्शयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

ॐ वं वटुकाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

वटुक का पूजन करने के पश्चयात कुमारी पूजन करें।

कुमारी पूजन:

कुमारी के पैर धोकर उसे श्रद्धा पूर्वक अपने सम्मुख आसन पर बैठाए। फिर दोनों हाथ जोड़कर भक्ति पूर्वक ध्यान करे।

यथा-

बाल-रुपां च त्रैलोक्य-सुन्दरीं वर-वर्णिनीम्। नानालंकार-नम्रांगीं, भद्र-विद्या-प्रकाशिनीम्।। चारु-हास्यां महाऽऽनन्द-हृदयां चिन्तये शुभाम्।।

अर्थात्: बाल-स्वरुपवाली, त्रिलोक-सुन्दरी, श्रेष्ठ वर्णवाली, विविध प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित होने से विनम्र शरीरवाली, कल्याण-कारिणी विद्या को प्रकट करनेवाली, सुन्दर हँसी हँसनेवाली, परमानन्द से युक्त हृदयवाली कल्याणकारिणी कुमारी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यान करने के बाद इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक पढ़कर

आवाहन करे-

ॐ मन्त्राक्षर मयीं लक्ष्मीं, मातृणां रुप-धारिणीम्।
नव-दुर्गात्मिकां साक्षात्, कन्यामावाहयाम्यहम्॥

अर्थात्: मन्त्राक्षरों से संयुक्ता, लक्ष्मी-स्वरुपा, मातृकाओं का रुप धारण करने वाली, साक्षात् नव-दुर्गा-स्वरुपा कन्या देवी का मैं आवाहन करता हूँ।

आवाहन करने के बाद, सम्मुख उपस्थित कुमारी का पाद्य,

अर्घ्य, गन्धाक्षत्, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल एवं दक्षिणा आदि उपचारों से पूजन करे।

कुमारी का पूजन करने के बाद निम्न मन्त्र पढ़ते हुए प्रणाम करे-

जगद्-वन्द्ये, जगत्-पूज्ये, सर्व-शक्ति-स्वरुपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

अर्थात्: हे विश्व-वन्द्ये, संसार-पूज्ये, सर्व-शक्ति-स्वरुपे कौमारि देवि, मेरी पूजा स्वीकर करिए। हे जगदम्ब, आपको नमस्कार। कुमारी-पूजा के बाद श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का पाठ करे।

***

॥दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं (विश्वसारतन्त्र)॥

ईश्वर उवाच:

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥१॥
ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्द स्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बर परीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहन वाहना ॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥१९॥
गोरोचनालक्तककुङ्कुमेव सिन्धूरकर्पूरमधुत्रयेण ।
विलिख्ययन्त्रं विधिनाविधिज्ञो
भवेत्सदाधारयतेपुरारिः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् संपदां पदम् ॥२१॥

॥इति श्री विश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

विशेषः- उपर्युक्त विधि से 'कुमारी पूजा' मास में एक बार करना विशेष लाभदायक होता हैं। कुमारियाँ विषम-संख्यक 1, 3, 5, 7.... होनी चाहिए।

नवरात्र में लाभदायक कन्या पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

नवरात्र में कुमारिका पूजन-व्रत-अनुष्ठान को अनिवार्य अंग माना जाता हैं। नवरात्रमें कुंवारी कन्याओं का विधि-विधान से पूजन कर उनको भोजन कराके वस्त्र-दक्षिणा आदि भेट देकर संतुष्ट करना चाहिए। कुमारिका पूजन हेतु कन्या दो से दस वर्ष तक ही होनी चाहिए।

दो वर्ष की कन्या को कुमारी माना जाता हैं।

कुमारी पूजन से व्यक्ति के दु:ख-दरिद्रता का शमन होता हैं।

कुमारी के पूजन का मंत्र-

कुमारस्यचतत्त्वानिया सृजत्यपिलीलया।
कादीनपिचदेवांस्तांकुमारींपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो कुमार कार्तिकेय कि जननी एवं ब्रहमादि देवताओं की लीलापूर्वक रचना करती हैं, उन कुमारी देवी कि मैं पूजा करता हूं।

तीन वर्ष की कन्या को त्रिमूर्ति माना जाता हैं।

त्रिमूर्ति के पूजन से व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम कि प्राप्ति होती हैं। इसी के साथ घर में धन-धान्य में वृद्धि होता हैं, तथा पुत्र-पौत्रों का लाभ प्राप्त होता हैं।

त्रिमूर्ति के पूजन का मंत्र-

सत्त्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्यातैर्हिनानास्वरूपिणी।
त्रिकालव्यापिनीशक्तिस्त्रिमूर्तिंपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सत्व, रज, तम तीनों गुणों के तीन रूप धारण करती हैं, जिनके अनेक रूप हैं एवं जो तीनों कालों में व्याप्त हैं, उन भगवती त्रिमूर्ति कि मैं पूजा करता हूँ।

चार वर्ष की कन्या को कल्याणी माना जाता हैं।

कल्याणी के पूजन से व्यक्ति को विजय, विद्या, सत्ता एवं सुख कि प्राप्ति होकर व्यक्ति कि समस्त कामनाए पूर्ण होती हैं।

कल्याणी के पूजन का मंत्र-

कल्याणकारिणीनित्यंभक्तानांपूजितानिशम्।

पूजयामिचतांभक्त्याकल्याणीम्सर्वकामदाम्॥

अर्थातः निरंतर सुपूजितहोने पर भक्तों का कल्याण करना जिसका स्वभाव ही है, सब मनोरथ पूर्ण करने वाली उन भगवती कल्याणी की मैं पूजा करता हूं।

पांच वर्ष की कन्या को रोहिणी माना जाता हैं।

रोहिणी के पूजन से व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य कि प्ताप्ति होकर उसके समस्त रोग का विनाश होता हैं।

रोहिणी के पूजन का मंत्र-

रोहयन्तीचबीजानिप्राग्जन्मसंचितानिवै।

या देवी सर्वभूतानांरोहिणीम्पूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सब प्राणियों के संचित बीजों का रोहण करती हैं, उन भगवती रोहिणी कि मैं उपासना करता हूं।

छ:वर्ष की कन्या को कालिका माना जाता हैं।

कालिका के पूजन से व्यक्ति के विरोधि तथा शत्रु का शमन हो कर उसपर विजय प्राप्त होती हैं।

कालिका के पूजन का मंत्र-

काली कालयतेसर्वब्रह्माण्डंसचराचरम्।

कल्पान्तसमयेया तांकालिकाम्पूजयाम्यहम॥

अर्थातः कल्प के अन्त में जो चर-अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने अंदर विलीन कर लेती हैं, उन भगवती कालिका कि मैं पूजा करता हूं।

सात वर्ष की कन्या को चण्डिका माना जाता हैं।

चण्डिका के पूजन से व्यक्ति को धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती हैं।

चण्डिका के पूजन का मंत्र-

चण्डिकांचण्डरूपांचचण्ड-मुण्ड विनाशिनीम्।

तांचण्डपापहरिणींचण्डिकांपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो चण्ड-मुण्ड का संहार करने वाली हैं तथा जिनकी कृपा से घोर पाप भी तत्काल नष्ट हो जाता है, उन भगवती चण्डिका कि मैं पूजा करता हूं।

आठ वर्ष की कन्या को शाम्भवी माना जाता हैं।

शाम्भवी के पूजन से व्यक्ति कि निर्धनता दूर होती हैं, वाद-विवाद में विजय प्राप्त होता हैं।

शाम्भवी के पूजन का मंत्र-

अकारणात्समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता।

यस्यास्तांसुखदांदेवींशाम्भवींपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः वेद जिनके प्राकट्य के विषय में कारण का अभाव बतलाते हैं तथा सबको सुखी बनाना जिनका स्वाभाविक गुण है, उन भगवती शाम्भवीकी मैं पूजा करता हूं।

नौ वर्ष की कन्या को दुर्गा माना जाता हैं।

दुर्गा के पूजन से व्यक्ति के दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति का दमन होता हैं। व्यक्ति के कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से सिद्धि होते हैं।

दुर्गा के पूजन का मंत्र-

दुर्गात्त्रायतिभक्तंया सदा दुर्गार्तिनाशिनी।

दुर्ज्ञेयासर्वदेवानांतांदुर्गापूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो भक्त को सदा संकट से बचाती हैं, दु:ख दूर करना जिनका स्वभाव हैं तथा देवता लोग भी जिन्हें जानने में असमर्थ हैं, उन भगवती दुर्गा की मैं पूजा करता हूं।

दस वर्ष की कन्या को सुभद्रा माना जाता हैं।

सुभद्रा के पूजन से व्यक्ति को समस्त लोक में सुख प्राप्त होता हैं।

सुभद्रा के पूजन का मंत्र-

सुभद्राणि चभक्तानांकुरुतेपूजितासदा।

अभद्रनाशिनींदेवींसुभद्रांपूजयाम्यहम्॥

अर्थातः जो सुपूजित होने पर भक्तों का कल्याण करने में सदा संलग्न रहती हैं, उन अशुभविनाशिनीभगवती सुभद्रा की मैं पूजा करता हूं।

नवरात्रकी अष्टमी अथवा नवमी के दिन कुमारिका-पूजन करने पर विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

माता के 52 शक्ति पीठ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दक्ष प्रजापति की कई पुत्रियां थी। सभी पुत्रियां गुणवती थीं परंतु सती दक्ष की सभी पुत्रियों में सबसे अलौकिक थीं। इस लिये सतीने बाल्य अवस्था में ही कई ऐसे अलौकिक आश्चर्य चलित करने वाले कार्य कर दिखाए थे, जिन्हें देखकर दक्ष को भी आश्चर्य होता था।

जब सती विवाह योग्य होगई, तो सती का विवाह भगवान शिव के साथ कर दिया। सती कैलाश में जाकर भगवान शिव के साथ रहने लगीं। भगवान शिव के दक्ष के दामाद थे, किंतु एक ऐसी घटना घटीत होगई जिसके कारण दक्ष के ह्रदय में भगवान शिव के प्रति बैर और विरोध भाव पैदा हो गया। भगवान शिव के प्रति बैर और विरोध भाव पैदा हो गया।

एक बार सती के पिता ने बहोत बडे यज्ञ का आयोजन किया हैं। समस्त देवता और देवांगनाएं उसी यज्ञ में सम्मिलित हो रहे थे। लेकिन दक्ष ने शिवजी और सती को नहीं बुलाया था। लेकिन देवी सती ने शिवजी से अनुरोध किया के वे अपने पिता के यहां होने वाले यज्ञ के अवसर पर जाना चाहती हैं। भगवान शिव के मना करने के बाद भी सती जी के अनुरोध के कारण शिव ने उन्हें पीहर जाने की अनुमति दे दी।

पीहर जाने पर घर में सतीसे किसी ने भी प्रेमपूर्वक वार्तालाप नहीं किया। कुछ देर और दक्षने भांति भांति से शिवजी का अपमान किया जिस्से दुखी होकर सतीजी अग्निकुंड में कूद गई यह समाचार भगवान शिव के कानों में भी पड़ा। वे प्रचंड आंधी की भांति कनखल जा पहुंचे। सती के जले हुए शरीर को देखकर भगवान शिव ने अपने आपको भूल गए। सती के प्रेम और उनकी भक्ति ने शंकर के मन को व्याकुल कर दिया। उन शंकर के मन को व्याकुल कर दिया जिन्होंने काम पर भी विजय प्राप्त कि थी और जो सारी सृष्टि को नष्ट करने की क्षमता रखते थे। वे सती के प्रेम में खो गए, बेसुध हो गए।

भगवान शिव ने उन्मत कि भांति सती के जले हुए शरीर को कंधे पर रख वे सभी दिशाओं में भ्रमण करने लगे। सृष्टि व्याकुल हो उठी भयानक संकट उपस्थित देखकर सृष्टि के पालक भगवान विष्णु आगे बढ़े। उन्हों ने भगवान शिव कि बेसुधी में अपने चक्र से सती के एक-एक अंग को काट-काट कर गिराने लगे। धरती पर इक्यावन स्थानों में सती के अंग कट-कटकर गिरे। जब सती के सारे अंग कट कर गिर गए, तो भगवान शिव पुनः अपने आप में वापस आए। फिर पुनः सृष्टि के सारे कार्य चलने लगे।

धरती पर जिन इक्यावन स्थानों में सती के अंग कट-कटकर गिरे थे, वे ही स्थान आज शक्ति पीठ के स्थान माने जाते हैं। आज भी उन स्थानों में सती का पूजन होता हैं, उपासना होती हैं।

- ❖ विभिन्न शास्त्रो एवं पुराणों में शक्ति पीठों कि संख्या के वर्णन में भिन्नता हैं।
- ❖ तंत्रचूड़ा मणि में 52 शक्ति पीठों का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ श्रीमद्देवीभागवत में 108 शक्ति पीठों का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ देवी गीता में 72 शक्ति पीठों का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ देवीपुराण में 51 शक्ति पीठों का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ कालिकापुराण में 26 शक्तिपीठों का उल्लेख किया हैं।
- ❖ शिवचरित्र में 51 शक्ति पीठों का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ दुर्गा शप्तसती में 52 शक्ति पीठों का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ देवी के मुख्य अंगों-प्रत्यंगों कि गणना में प्रमुख 51 शक्ति पीठ माने जाते हैं।

साधारत:

51 शक्ति पीठ माने जाते हैं। तंत्रचूड़ामणि में लगभग 52 शक्ति पीठों के बारे में बताया गया है। प्रस्तुत है तंत्रचूड़ामणि की तालिका।

1.हिंगलाज

कराची से थोडी दूर उत्तर पूर्व में हिंगुला या हिंगलाज शक्तिपीठ स्थित हैं, यहाँ माता का ब्रह्मरंध (सिर) गिरा था। इसकी शक्ति को कोटरी या कोट्टवीशा कहा जाता हैं और भैरव को भीमलोचन कहा जाता हैं।

2.शर्करे (करवीर)

पाकिस्तान में कराची सुक्कर स्टेशन के निकट स्थित हैं शर्करे शक्तिपीठ, यहाँ माता की आँख गिरी थी। इसकी शक्ति को महिषासुरमर्दिनी कहा जाता हैं और भैरव को क्रोधिश कहा जाता हैं।

3.सुगंध- सुनंदा

बांग्लादेश में शिकारपुर, बरिसल से थोडी दूर सोंध नदी के किनारे स्थित हैं माँ सुगंध शक्तिपीठ, यहाँ माता की नासिका गिरी थी। इसकी शक्ति को सुनंदा कहा जाता हैं और भैरव को त्र्यंबक कहा जाता हैं।

4.महामाया (कश्मीर)

भारत के कश्मीर में पहलगाँव के निकट स्थित हैं माँ महामाया शक्तिपीठ, यहाँ माता का गला गिरा था। इसकी शक्ति को महामाया कहा जाता हैं और भैरव को त्रिसंध्येश्वर कहा जाता हैं।

5.ज्वालामुखी- सिद्धिदा (अंबिका)

भारत के हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में स्थित हैं माँ ज्वालामुखी शक्तिपीठ, यहाँ माता की जीभ गिरी थी। इसकी शक्ति को सिद्धिदा (अंबिका) कहा जाता हैं और भैरव को उन्मत्त कहा जाता हैं।

6.त्रिपुरमालिनी (जालंधर)

पंजाब के जालंधर में छावनी के निकट देवी तलाब के किनारे स्थित हैं माँ त्रिपुरमालिनी शक्तिपीठ, यहाँ माता का बायाँ वक्ष (स्तन) गिरा था। इसकी शक्ति को त्रिपुरमालिनी कहा जाता हैं और भैरव को भीषण कहा जाता हैं।

7.जयदुर्गा (वैद्यनाथ)

झारखंड के देवघर में स्थित वैद्यनाथधाम में स्थित हैं माँ जयदुर्गा शक्तिपीठ, यहाँ माता का हृदय गिरा था। इसकी शक्ति को जय दुर्गा कहा जाता हैं और भैरव को वैद्यनाथ कहा जाता हैं।

8.महामाया (नेपाल)

नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर के निकट स्थित है गुजरेश्वरी मंदिर जहाँ स्थित हैं माँ महशिरा शक्तिपीठ, यहाँ माता के दोनों घुटने (जानु) गिरे थे। इसकी शक्ति को महशिरा (महामाया) कहा जाता हैं और भैरव को कपाली कहा जाता हैं।

9.दाक्षायणी (मानस)

तिब्बत स्थित कैलाश मानसरोवर के मानसा के निकट एक पाषाण शिला पर स्थित हैं माँ दाक्षायणी शक्तिपीठ, यहाँ माता का दायाँ हाथ गिरा था। इसकी शक्ति को दाक्षायनी कहा जाता हैं और भैरव अमर कहा जाता हैं।

10. विरजा (उड़ीसा)

भारतीय प्रदेश उड़ीसा के विराज में उत्कल में स्थित हैं माँ विरजा शक्तिपीठ, यहाँ पर माता की नाभि गिरी थी। इसकी शक्ति को विमला कहा जाता हैं और भैरव को जगन्नाथ कहा जाता हैं।

11.गंडकी

नेपाल में गंडकी नदी के तट पर पोखरा नामक स्थान पर स्थित मुक्तिनाथ मंदिर में स्थित हैं माँ गंडकी शक्तिपीठ, यहाँ माता का मस्तक या गंडस्थल अर्थात कनपटी गिरी थी। इसकी शक्ति को गण्डकी चण्डी कहा जाता हैं और भैरव चक्रपाणि कहा जाता हैं।

12.बहुला

भारतीय प्रदेश पश्चिम बंगाल से वर्धमान जिला से थोडी दूर कटुआ केतुग्राम के निकट अजेय नदी तट पर स्थित बाहुल स्थान पर स्थित हैं माँ बहुला शक्तिपीठ, यहाँ माता का बायाँ हाथ गिरा था। इसकी शक्ति को देवी बाहुला कहा जाता हैं और भैरव को भीरुक कहा जाता हैं ।

13.मांगल्य चंद्रिका

भारतीय प्रदेश पश्चिम बंगाल में वर्धमान जिले के निकट गुस्कुर स्टेशन से उज्जयनी नामक स्थान पर स्थित हैं माँ मंगल चंद्रिका शक्तिपीठ, यहाँ माता की दायीं कलाई गिरी थी। इसकी शक्ति को मंगल चंद्रिका कहा जाता हैं और भैरव को कपिलांबर कहा जाता हैं।

14.त्रिपुर सुंदरी (त्रिपुरा)

भारत प्रदेश त्रिपुरा के उदरपुर के निकट राधाकिशोरपुर गाँव के माताबाढ़ी पर्वत शिखर पर स्थित हैं माँ त्रिपुर सुंदरी शक्तिपीठ, यहाँ माता का दायाँ पैर गिरा था। इसकी शक्ति को त्रिपुर सुंदरी कहा जाता हैं और भैरव को त्रिपुरेश कहा जाता हैं।

15.भवानी (चट्टल)

बांग्लादेश में चिट्टागौंग (चटगाँव) जिला के सीताकुंड स्टेशन के निकट चंद्रनाथ पर्वत शिखर छत्राल (चट्टल या चहल) पर स्थित हैं माँ भवानी शक्तिपीठ, यहाँ माता की दायीं भुजा गिरी थी। इसकी शक्ति को भवानी कहा जाता हैं और भैरव को चंद्रशेखर कहा जाता हैं।

16.भ्रामरी (त्रिस्रोता)

भारतीय प्रदेश पश्चिम बंगाल के जलपाइगुड़ी के बोडा मंडल के सालबाढ़ी ग्राम स्थित त्रिस्रोत स्थान पर स्थित हैं माँ भ्रामरी शक्तिपीठ, यहाँ माता का बायाँ पैर गिरा था। इसकी शक्ति को भ्रामरी कहा जाता हैं और भैरव को अंबर और भैरवेश्वर कहा जाता हैं।

17.कामाख्या (कामगिरि)

भारतीय प्रदेश असम के गुवाहाटी जिले के कामगिरि क्षेत्र में स्थित नीलांचल पर्वत के कामाख्या स्थान पर स्थित हैं माँ कामाख्या शक्तिपीठ, यहाँ माता का योनि भाग गिरा था। इसकी शक्ति को कामाख्या कहा जाता हैं और भैरव को उमानंद कहा जाता हैं।

18.ललिता (प्रयाग)

भारतीय राज्य उत्तरप्रदेश के इलाहबाद शहर (प्रयाग) के संगम तट पर स्थित हैं माँ ललिता शक्तिपीठ, यहाँ माता की हाथ की अँगुली गिरी थी। इसकी शक्ति को ललिता कहा जाता हैं और भैरव को भव कहा जाता हैं।

19.जयंती

बांग्लादेश के सिल्हैट जिले के जयंतीया परगना के भोरभोग गाँव कालाजोर के खासी पर्वत पर स्थित हैं माँ जयंती शक्तिपीठ, यहाँ माता की बायीं जंघा गिरी थी। इसकी शक्ति को जयंती कहा जाता हैं और भैरव को क्रमदीश्वर कहा जाता हैं।

20.युगाद्या (भूतधात्री)

पश्चिम बंगाल के वर्धमान जिले के खीरग्राम स्थित जुगाड्या (युगाद्या) स्थान पर स्थित हैं माँ भूतधात्री शक्तिपीठ, यहाँ माता के दाएँ पैर का अँगूठा गिरा था। इसकी शक्ति को भूतधात्री कहा जाता हैं और भैरव को क्षीर खंडक कहा जाता हैं।

21.कालिका (कालीपीठ)

कोलकाता के कालीघाट पर स्थित हैं माँ कालिका शक्तिपीठ, यहाँ माता के बाएँ पैर का अँगूठा गिरा था। इसकी शक्ति को कालिका कहा जाता हैं और भैरव को नकुशील कहा जाता हैं।

22.विमला- किरीट (भुवनेशी)

पश्चिम बंगाल के मुर्शीदाबाद जिला के लालबाग कोर्ट रोड स्टेशन के किरीटकोण ग्राम के निकट स्थित हैं माँ विमला शक्तिपीठ, यहाँ माता का मुकुट गिरा था।

इसकी शक्ति को विमला कहा जाता हैं और भैरव को संवर्त्त कहा जाता हैं।

23.विशालाक्षी (वाराणसी)

उत्तरप्रदेश के काशी में मणिकर्णिक घाट पर स्थित हैं माँ विशालाक्षी शक्तिपीठ, यहाँ माता के कान के मणिजड़ीत कुंडल गिरे थे। इसकी शक्ति को विशालाक्षी मणिकर्णी कहा जाता हैं और भैरव को काल भैरव कहा जाता हैं।

24.सर्वाणी (कन्याश्रम)

तमिल नाडु के कन्याश्रम में भद्रकाली मंदिर (कुमारी मंदिर) में स्थित हैं माँ सर्वाणी शक्तिपीठ, यहाँ माता का पीठ अर्थात पृष्ठ भाग गिरा था। इसकी शक्ति को सर्वाणी कहा जाता हैं और भैरव को निमिष कहा जाता हैं।

25.सावित्री (कुरुक्षेत्र)

हरियाणा के कुरुक्षेत्र में स्थित हैं माँ सावित्री शक्तिपीठ, यहाँ माता की एड़ी (गुल्फ) गिरी थी। इसकी शक्ति को सावित्री कहा जाता हैं और भैरव को स्थाणु कहा जाता हैं।

26. गायत्री (मणिदेविक)

अजमेर के निकट पुष्कर के मणिबन्ध स्थान के गायत्री पर्वत पर स्थित हैं माँ गायत्री शक्तिपीठ, यहाँ माता के दो मणिबंध गिरे थे। इसकी शक्ति को गायत्री कहा जाता हैं और भैरव को सर्वानंद कहा जाता हैं।

27.महालक्ष्मी (श्री शैल)

बांग्लादेश के सिल्हैट जिले के उत्तर-पूर्व में जैनपुर गाँव के पास शैल नामक स्थान पर स्थित हैं माँ महालक्ष्मी शक्तिपीठ, यहाँ माता का गला (ग्रीवा) गिरा था। इसकी शक्ति को महालक्ष्मी कहा जाता हैं और भैरव को शम्बरानंद कहा जाता हैं।

28.देवगर्भा (कांची)

पश्चिम बंगाल के बीरभुम जिला के बोलारपुर स्टेशन के उत्तर पूर्व स्थित कोपई नदी तट पर स्थित हैं माँ देवगर्भा शक्तिपीठ, यहाँ माता की अस्थि गिरी थी। इसकी शक्ति को देवगर्भा कहा जाता हैं और भैरव को रुरु कहा जाता हैं।

29.देवी काली (कालमाधव)

मध्यप्रदेश के अमरकंटक के कालमाधव स्थित शोन नदी तट के पास स्थित हैं माँ काली शक्तिपीठ, यहाँ माता का बायाँ नितंब गिरा था जहाँ एक गुफा है। इसकी शक्ति को काली कहा जाता हैं और भैरव को असितांग कहा जाता हैं।

30.नर्मदा (शोणदेश-शोणाक्षी)

मध्यप्रदेश के अमरकंटक स्थित नर्मदा के उद्गम पर शोणदेश स्थान पर स्थित हैं माँ नर्मदा शक्तिपीठ, यहाँ माता का दायाँ नितंब गिरा था। इसकी शक्ति को नर्मदा कहा जाता हैं और भैरव को भद्रसेन कहा जाता हैं।

31.शिवानी (रामगिरि)

उत्तरप्रदेश के झाँसी-मणिकपुर रेलवे स्टेशन चित्रकूट के पास रामगिरि स्थान पर स्थित हैं माँ शिवानी शक्तिपीठ, यहाँ माता का दायाँ वक्ष गिरा था। इसकी शक्ति को शिवानी कहा जाता हैं और भैरव को चंड कहा जाता हैं।

32.उमा (वृंदावन)

उत्तरप्रदेश के मथुरा के निकट वृंदावन के भूतेश्वर स्थान पर स्थित हैं माँ उमा शक्तिपीठ, यहाँ माता के गुच्छ कहा जाता हैं और चूड़ामणि गिरे थे। इसकी शक्ति को उमा कहा जाता हैं और भैरव को भूतेश कहा जाता हैं।

33.नारायणी (शुचि)

तमिलनाडु के कन्याकुमारी-तिरुवनंतपुरम मार्ग पर शुचितीर्थम शिव मंदिर है, जहाँ पर स्थित हैं माँ नारायणी शक्तिपीठ, यहाँ माता की ऊपरी दंत (ऊर्ध्वदंत) गिरे थे। इसकी शक्ति को नारायणी कहा जाता हैं और भैरव को संहार कहा जाता हैं।

34.वाराही (पंचसागर)

हरिद्वार के समीप पंचकुंड महासागर पर स्थित हैं माँ वाराही शक्तिपीठ, यहाँ माता की निचले दंत (अधोदंत) गिरे थे। इसकी शक्ति को वराही कहा जाता हैं और भैरव को महारुद्र कहा जाता हैं। (नोट: हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में भी देवी को वाराही शक्तिपीठ के रुप में पूजा जाता हैं।)

35.अपर्णा (करतोयातट)

बांग्लादेश के शेरपुर बागुरा स्टेशन से थोडी दूर भवानीपुर गाँव के पार करतोया तट स्थान पर स्थित हैं माँ अपर्णा शक्तिपीठ, यहाँ माता की पायल (तल्प) गिरी थी। इसकी शक्ति को अर्पण कहा जाता हैं और भैरव को वामन कहा जाता हैं।

36.श्रीसुंदरी (श्रीपर्वत)

कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र के पर्वत पर स्थित हैं माँ श्री सुंदरी शक्तिपीठ, यहाँ माता के दाएँ पैर की पायल गिरी थी। इसकी शक्ति को श्रीसुंदरी कहा जाता हैं और भैरव को सुंदरानंद कहा जाता हैं। (नोट: दूसरी मान्यता अनुसार आंध्रप्रदेश के कुर्नूल जिले के श्रीशैलम स्थान पर दक्षिण गुल्फ अर्थात दाएँ पैर की एड़ी गिरी थी।)

37.कपालिनी (विभाष)

पश्चिम बंगाल के जिला पूर्वी मेदिनीपुर के पास तामलुक स्थित विभाष स्थान पर स्थित हैं माँ कपालिनी शक्तिपीठ, यहाँ माता की बायीं एड़ी गिरी थी। इसकी शक्ति को कपालिनी (भीमरूप) कहा जाता हैं और भैरव को शर्वानंद कहा जाता हैं।

38.प्रभास- चंद्रभागा

गुजरात के जूनागढ़ जिले में स्थित सोमनाथ मंदिर के निकट वेरावल स्टेशन के निकट प्रभास क्षेत्र में स्थित हैं माँ चंद्रभागा शक्तिपीठ, यहाँ माता का उदर गिरा था। इसकी शक्ति को चंद्रभागा कहा जाता हैं और भैरव को वक्रतुंड कहा जाता हैं।

39.अवंति (भैरवपर्वत)

मध्यप्रदेश के उज्जैन नगर में शिप्रा नदी के तट के पास भैरव पर्वत पर स्थित हैं माँ अवंति शक्तिपीठ, यहाँ माता के ओष्ठ गिरे थे। इसकी शक्ति को अवंति कहा जाता हैं और भैरव को लम्बकर्ण कहा जाता हैं।

40.भ्रामरी (जनस्थान)

महाराष्ट्र के नासिक नगर स्थित गोदावरी नदी घाटी स्थित जनस्थान पर स्थित हैं माँ भ्रामरी शक्तिपीठ, यहाँ माता की ठोड़ी गिरी थी। इसकी शक्ति को भ्रामरी कहा जाता हैं और भैरव है विकृताक्ष।

41.विश्वमात्रिका (सर्वशैल स्थान)

आंध्रप्रदेश के राजामुंद्री क्षेत्र स्थित कोटिलिंगेश्वर मंदिर के पास सर्वशैल स्थान पर स्थित हैं माँ रकिनी शक्तिपीठ, यहाँ माता के वाम गंड (गाल) गिरे थे। इसकी शक्ति को राकिनी कहा जाता हैं और भैरव को वत्सनाभम कहते हैं

42.विश्वेश्वरी (गोदावरीतीर)

गोदावरी नदी के तट पर कुब्बुरला कोटि तिर्थ के निकट स्थल पर स्थित हैं माँ विश्वेश्वरी शक्तिपीठ, यहाँ यहाँ माता के दक्षिण गंड गिरे थे। इसकी शक्ति को विश्वेश्वरी कहा जाता हैं और भैरव को दंडपाणि कहा जाता हैं।

43.कुमारी (रत्नावली)

बंगाल के हुगली जिले के खानाकुल कृष्णानगर मार्ग पर रत्नावली स्थित रत्नाकर नदी के तट पर स्थित हैं माँ कुमारी शक्तिपीठ, यहाँ माता का दायाँ स्कंध गिरा था। इसकी शक्ति को कुमारी कहा जाता हैं और भैरव को शिव कहा जाता हैं।

44.उमा-महादेवी (मिथिला)

भारत-नेपाल सीमा पर जनकपुर रेलवे स्टेशन के निकट मिथिला में स्थित हैं माँ उमा शक्तिपीठ, यहाँ माता का बायाँ स्कंध गिरा था। इसकी शक्ति को उमा कहा जाता हैं और भैरव को महोदर कहा जाता हैं।

45.कालिका तारापीठ (नलहाटी)

पश्चिम बंगाल के वीरभूम जिले के नलहाटि स्टेशन के निकट नलहाटी में स्थित हैं माँ कालिका देवी शक्तिपीठ, यहाँ माता के पैर की हड्डी गिरी थी। इसकी शक्ति को कालिका देवी कहा जाता हैं और भैरव को योगेश कहा जाता हैं।

46.जयदुर्गा (कर्णाट)

कर्नाट में जयदुर्गा नाम से प्रसिद्ध स्थान पर स्थित हैं माँ जयदुर्गा शक्तिपीठ, यहाँ माता के दोनों कान गिरे थे। इसकी शक्ति को जयदुर्गा कहा जाता हैं और भैरव को अभिरु कहा जाता हैं।

47.महिषमर्दिनी (वक्रेश्वर)

पश्चिम बंगाल के वीरभूम जिले के दुबराजपुर स्टेशन से सात किमी दूर वक्रेश्वर में पापहर नदी के तट पर स्थित हैं माँ महिषमर्दिनी शक्तिपीठ, यहाँ माता का भ्रूमध्य (मन:) गिरा था। इसकी शक्ति को महिषमर्दिनी कहा जाता हैं और भैरव को वक्रनाथ कहा जाता हैं।

48.यशोरेश्वरी (यशोर)

बांग्लादेश के खुलना जिला के ईश्वरीपुर के यशोर स्थान पर स्थित हैं माँ यशोरेश्वरी शक्तिपीठ, यहाँ माता के हाथ और पैर गिरे (पाणिपद्म) थे। इसकी शक्ति को यशोरेश्वरी कहा जाता हैं और भैरव को चण्ड कहा जाता हैं।

49.फुल्लरा (अट्टाहास)

पश्चिम बंगला के लाभपुर स्टेशन से दो किमी दूर अट्टहास स्थान पर स्थित हैं माँ फुल्लरा शक्तिपीठ, यहाँ माता के ओष्ठ गिरे थे। इसकी शक्ति को फुल्लरा कहा जाता हैं और भैरव को विश्वेश कहा जाता हैं।

50.नंदिनी (नंदीपूर)

पश्चिम बंगाल के वीरभूम जिले के सैंथिया रेलवे स्टेशन नंदीपुर स्थित चारदीवारी में बरगद के वृक्ष के समीप स्थित हैं माँ नंदिनी शक्तिपीठ, यहाँ माता का गले का हार गिरा था। इसकी शक्ति को नंदिनी कहा जाता हैं और भैरव को नंदिकेश्वर कहा जाता हैं।

51.इंद्राक्षी (श्रीलंका)

श्रीलंका में त्रिंकोमाली में स्थित हैं माँ इंद्राक्षी शक्तिपीठ, यहाँ माता की पायल गिरी थी (त्रिंकोमाली में प्रसिद्ध त्रिकोणेश्वर मंदिर के निकट)। इसकी शक्ति को इंद्राक्षी कहा जाता हैं और भैरव को राक्षसेश्वर कहा जाता हैं।

52.विराट- अंबिका

राजस्थान में जयपुर से थोडी दूर उत्तर में वैराट गांव में स्थित हैं माँ अंबिका शक्तिपीठ, यहाँ माता के पैर की अँगुली गिरी थी। इसकी शक्ति को अंबिका कहा जाता हैं और भैरव को अमृत कहा जाता हैं।

***

नवदुर्गा यंत्र सर्व मंगलकारी व सौभाग्य दायक हैं...

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शैलपुत्री

मां के शैलपुत्री को पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं। मां शैलपुत्री को शास्रों में तीनो लोक के समस्त वन्य जीव-जंतुओं का रक्षक माना गया हैं। इसी कारण से वन्य जीवन जीने वाली सभ्यताओं में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना की जाती हैं जिस सें उनका निवास स्थान एवं उनके आस-पास के स्थान सुरक्षित रहे। मां शैलपुत्री का पूजन करने वाले व्यक्ति को हमेशा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख-साधनो को कमी महसूस नहीं होतीं।

ब्रह्मचारिणी

मां ब्रह्मचारिणी को विद्वानों ने तप का आचरण करने वाली भगवती हैं होने के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। शास्त्रो में मां ब्रह्मचारिणी को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया हैं। धार्मिक मान्यताके अनुसार देवी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर तपस्या रत रहीं और 3000 साल तक शिव कि तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर कि, उनकी इसी कठिन तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी नाम से जाना गया। ब्रह्मचारिणी का पूजन करने वाले व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

चन्द्रघण्टा

चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं। इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। इनके घण्टे सी भयानक प्रचंड ध्वनि से अत्याचारी दैत्य, दानव, राक्षस व दैव भयभित रहते हैं। चन्द्रघण्टा का पूजन करने से व्यक्ति का मणिपुर चक्र जाग्रत हो जाता हैं। देवी की उपासना से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

कूष्माण्डा

कूष्माण्डा देवी ने अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया। शास्त्रोक्त उल्लेख हैं, कि जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार हि था। उस समय कूष्माण्डा देवी ने अपने मंद से हास्य से ब्रहमांड कि उत्पत्ति कि। कूष्माण्डा देवी को जीवन कि शक्ति प्रदान करता माना गया हैं। कूष्माण्डा देवी का पूजन करने वाले व्यक्ति का अनाहत चक्र जाग्रत हो हैं। मां कूष्माण्डा के पूजन से सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

स्कंदमाता

स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय की माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। स्कंदमाता का स्वरुप परम कल्याणकारी मनागया हैं। देवी का पूजन करने वाले व्यक्ति का विशुद्ध चक्र जाग्रत होता हैं। व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

कात्यायनी

महर्षि कात्यायन की पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नामसे जाना जाता हैं। मां का पूजन करने वाले व्यक्ति का आज्ञा चक्र जाग्रत होता हैं। देवी

कात्यायनी के पूजन से रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं। कात्यायनी यन्त्र के पूजन से शीघ्र विवाह के योग बनने लगते हैं एवं विवाह में आने वाली बाधाये दूर होती हैं।

कालरात्रि

मां कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं, सिर के बाल फैलाकर रखने वाली हैं। मां कालरात्रि का पूजन करने वाले व्यक्ति का भानु चक्र जाग्रत होता हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

महागौरी

महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी हैं। महागौरी गायन एवं संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' माना जाता हैं। महागौरी का पूजन करने वाले व्यक्ति का सोमचक्र जाग्रत होता हैं।

महागौरी के पूजन से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्तिदिला ने वाली देवी महागौरी हैं।

सिद्धिदात्री

देवी सिद्धिदात्री का स्वरूप कमल आसन पर विराजित, चार भुजा वाला, दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा, बाई तरफ से नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित रहते हैं। देवी सिद्धिदात्री का पूजन करने वाले व्यक्ति का निर्वाण चक्र जाग्रत होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विघ्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

विद्वानों के मातानुशार मां दुर्गा के इन नौ-रुपों की कृपा प्राप्त करने का सरल उपाय नवदुर्गा यन्त्र की स्थापना एवं पूजन एवं दर्शन से विशेष फलों की प्राप्ति होती हैं।

***

आद्यशक्ति के तीन चमत्कारी यंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दुर्गा बीसा यंत्र

शास्त्रोक्त मत के अनुशार दुर्गा बीसा यंत्र दुर्भाग्य को दूर कर व्यक्ति के सोये हुवे भाग्य को जगाने वाला माना गया हैं। दुर्गा बीसा यंत्र द्वारा व्यक्ति को जीवन में धन से संबंधित संस्याओं में लाभ प्राप्त होता हैं। जो व्यक्ति आर्थिक समस्यासे परेशान हों, वह व्यक्ति यदि नवरात्रों में प्राण प्रतिष्ठित किया गया दुर्गा बीसा यंत्र को स्थाप्ति कर लेता हैं, तो उसकी धन, रोजगार एवं व्यवसाय से संबंधी सभी समस्यों का शीघ्र ही अंत होने लगता हैं। नवरात्र के दिनो में प्राण प्रतिष्ठित दुर्गा बीसा यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में स्थापित करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं, व्यक्ति शीघ्र ही अपने व्यापार में वृद्धि एवं अपनी आर्थिक स्थिती में सुधार होता देखेंगे। संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य दुर्गा बीसा यंत्र को शुभ मुहूर्त में अपने घर-दुकान-ओफिस में स्थापित करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

मूल्य 550 से:12700 >>Shop Online |Order Now

श्रीदुर्गा यंत्र

श्रीदुर्गा यंत्र शक्ति एवं भक्ति के साथ समस्त सांसारिक सुखों को प्रदान करने वाला सर्वाधिक लोकप्रिय यंत्र हैं। अशुभ शक्तियों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए मां दुर्गा की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। श्रीदुर्गा यंत्र का पूजन व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होता हैं।

शास्त्रोक्त वर्णन हैं की देवी दुर्गा के श्रीदुर्गा यंत्र के पूजन और दर्शन करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की अभिष्ट इच्छाएं पूर्ण होती हैं। माँ दुर्गा के भक्तो की माँ स्वयं रक्षा कर उन पर अपनी कृपा

द्रष्टी वर्षाती हैं और भक्तों को उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। माँ दुर्गा के भक्तो को देवी की शीघ्र कृपा प्राप्ति हेतु श्रीदुर्गा यंत्र को अपने घर, दुकान, ओफिस इत्यादि में पूजा स्थन में स्थापित करना चाहिये।

विद्वानो का मत हैं की श्रीदुर्गा यंत्र के पूजन से मनुष्य को वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीडा़ से मुक्ति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति हो इस के लिये यह श्रीदुर्गा यंत्र अचूक एवं सिद्धिदायक माना गया हैं। किसी भी प्रकार के संकट या बाधा की आशंका होने पर इस यंत्र का नियमित पूजन करने से व्यक्ति को सभी प्रकार की बाधा से मुक्ति मिलती हैं और धन-धान्य की प्राप्ति होती हैं।

श्रीदुर्गा यंत्र की पूजा एवं स्थापना के लिए आश्विन एवं चैत्र नवरात्री विशेष लाभ प्रद हैं। क्योकि नवरात्र को आद्य् शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं।

मूल्य 550 से:12700 >>Shop Online |Order Now

नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)

यदि कोई व्यक्ति दु:ख, दरिद्रता और भय से अत्याधिक परेशान हो, और चाहकर भी या परीश्रम के उपरांत भी उसी वांच्छित सफलता प्राप्त नहीं हो रही हों तो उसे नवार्ण यंत्र और मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। किसी भी प्रकार के जादू-टोना, रोग, भय, भूत, पिशाच्च, डाकिनी, शाकिनी आदि से मुक्ति कि प्राप्ति के लिये मां दुर्गा के नवार्ण यंत्र का विधि-विधान से पूजन-अर्चन सर्वदा फलदायक होता है। दुर्गा दुखों का नाश करने वाली हैं। इसलिए नवरात्रि के दिनो में जब उनकी पूजा पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से कि जाती हैं, तो मां दुर्गा कि प्रमुख नौ शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं, जिससे नवों ग्रहों को नियंत्रित करती हैं, जिससे नौग्रहों से प्राप्त होने वाले अनिष्ट प्रभाव से रक्षा होकर ग्रह जनीत पीडाएं भी शांत हो जाती हैं।

नवार्ण मंत्र: *ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे*

नव अक्षरों वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र के हर अक्षर में देवी दुर्गा कि एक-एक शक्ति समायी हुई हैं, जिस का संबंध एक-एक ग्रहों से हैं।

यदि कोई मनुष्य अत्याधिक कष्ट या संकटों से ग्रस्त हो तो उसे प्रतिदिन स्नान इत्यादिसे शुद्ध होकर नवार्ण यंत्र के सम्मुख नवार्ण मंत्र का जाप 108 दाने कि माला से कम से कम तीन माला जाप अवश्य करना चाहिए।

मूल्य 550 से:12700 >>Shop Online |Order Now

देवी कवच दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल सकते है...

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दस महा विद्या कवच
Dus Mahavidya Kawach

दस महा विद्या कवच को देवी दस महा विद्या की शक्तियों से संपन्न अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ कवच माना गया हैं।

इस कवच के माध्यम से साधक को दसो महाविद्याओं आशिर्वाद प्राप्त हो सकता हैं। दस महा विद्या कवच को धारण करने से साधक की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महा विद्या कवच साधक की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने में समर्थ हैं। दस महा विद्या कवच धारण कर्ता को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महा विद्या कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करने से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और धारण कर्ता को दस महा विद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महा विद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महा विद्या कवच में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित होता हैं, इस लिए दस महा विद्या कवच को धारण कर के धारण करके व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बना सकता हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दशमहाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मूल्य मात्र: 7300 >>Shop Online |Order Now

नवदुर्गा शक्ति कवच
Navdurga Shakiti Kawach

मां दुर्गा के नवरुप क्रमशः

1. शैलपुत्री
2. ब्रह्मचारिणी
3. चन्द्रघण्टा
4. कूष्माण्डा
5. स्कन्दमाता
6. कात्यायनी
7. कालरात्रि
8. महागौरी
9. सिद्धिदात्री हैं।

नौदेवीयों के कवचों को एक साथ में मिलाकर बनाकर नवदुर्गा कवच का निर्माण किया जाता हैं। जिससे धारण कर्ता को नौ देवीयों का आशिर्वाद एक साथ प्राप्त हो जाता हैं।

नौ देवीयों के कवच का महत्व क्रमशः आपके मार्गदर्शन हेतु यहाँ प्रस्तुत हैं।

देवी शैलपुत्री का कवच धारण करने वाला व्यक्ति सदा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख साधनो की कमी महसुस नहीं होतीं। व्यक्ति को अनेक प्रकार की सिद्धियां एवं

उपलब्धियां प्राप्त होती हैं।

देवी ब्रह्मचारिणी का कवच धारण करने वाले व्यक्ति को अनंत फल की प्राप्ति होती हैं। कवच के प्रभाव से व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

देवी चन्द्रघण्टा का कवच धारण करने से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्नता प्राप्त होती हैं। कवच के प्रभाव से व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति के स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। क्योकि, चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया हैं।

देवी कूष्माण्डा के कवच को धारण करने वाले व्यक्ति को सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

देवी स्कंदमाता के कवच को धारण करने से व्यक्ति की समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

देवी कात्यायनी का कवच धारण करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं।

देवी कालरात्रि का कवच धारण करने से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार करने वाली देवी हैं।

देवी महागौरी के कवच को धारण करने से व्यक्ति के समस्त पापों से छुटकारा मिलता हैं। यह मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्ति दिलाने वाली देवी महागौरी का कवच हैं।

देवी सिद्धिदात्री के कवच को धारण करने से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होती हैं उसे ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती हैं। कवच के प्रभाव से व्यक्ति के यश, बल और धन की प्राप्ति आदि कार्यो में हो रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन की प्राप्ति हो कर उसे मां की कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

मूल्य मात्र: 6400 >>Shop Online |Order Now

श्रीदुर्गा बीसा कवच
Durga Visha Kawach

श्रीदुर्गा बीसा कवच साधक को भक्ति के साथ समस्त सांसारिक सुखों को प्रदान करने वाला सर्वसिद्धिप्रद कवच हैं। श्रीदुर्गा बीसा कवच को धारण करने से साधक को

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहायता प्राप्त होती हैं।

शास्त्रोक्त वर्णन हैं की माँ दुर्गा का श्रीदुर्गा बीसा कवच को धारण करने से देवी प्रसन्न होकर, शीघ्र ही साधक की अभिष्ट इच्छाएं पूर्ण करती हैं। माँ दुर्गा अपने भक्त की स्वयं रक्षा कर उन पर कृपा दृष्टी करती हैं। श्रीदुर्गा बीसा कवच धारण करने से माँ दुर्गा की कृपा से नौकरी व्यवसाय में साधक को उन्नति के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त होता हैं।

श्रीदुर्गा बीसा कवच के प्रभाव से धारण कर्ता को धन-धान्य, सुख-संपत्ति, संतान का सुख प्राप्त होता हैं और शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त होती हैं और साधक को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति होती हैं। जीवन में किसी भी प्रकार के संकट या बाधा की आशंका होने पर श्रीदुर्गा बीसा कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करने से साधक को सभी प्रकार की बाधा से मुक्ति मिलती हैं और धन-धान्य की प्राप्ति हो सकती हैं।

मूल्य मात्र: 2350 >>Shop Online |Order Now

नर्वाण बीसा कवच
Narvan Visha Kawach

नवार्ण (नर्वाण) बीसा कवच देवी दुर्गा का कवच हैं। हिन्दू धर्म में देवी दुर्गा को दुःखों का नाश करने वाली कहा गया हैं। देवी दुर्गा की शक्ति को जाग्रत करने हेतु शास्त्रों में नवार्ण मंत्र का जाप करने का विधान बताया गया हैं। विद्वानों का कथन हैं की जो मनुष्य नियमित मंत्र जाप करने में असमर्थ हो उनके लिए नवार्ण बीसा कवच धारण करना मंत्र जप के समान फल प्रदान करने वाला हैं। नवार्ण बीसा कवच को धारण करने से व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहाता प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र: 2350**

>>Shop Online |Order Now Email US | Help Desk: 91+ 9338213418, 91+ 9238328785

माँ दुर्गा की कृपा प्राप्ति हेतु सरल साधनाएं

संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्रभावशाली दुर्गा साधना

मां दुर्गा का पूजन हिन्दू संस्कृती में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं यहीं कारण हैं की सैकड़ों वर्षो से देवी दुर्गा का पूजन छोटे-बड़े सभी प्रादेशिक क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रचलित रहा हैं। देवी दुर्गा को आद्य शक्ति भगवती का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। देवी दुर्गा की महिमा अपरंपार हैं, जो अपने भक्तों के दुःखों का नाश करने वाली, दुष्टों से रक्षा करने वाली एवं अपने भक्तों के सकल मनोरथ को सिद्ध करने वाली साक्षात देवी हैं।

साधना हेतु सामग्री:-

माला: स्फटिक

दिशा: उत्तर या पूर्व

आसन: लाल आसन

वस्त्र: लाल वस्त्र,

अन्य पूजन सामग्रीयां: देवी प्रतिमा, पूजन हेतु सिंदूर, रक्तचंदन, लाल या पीले फूल, धूप, दीप, हवन हेतु तिल, घी, जौ, अक्षत, दूर्बं, दही, आदि नैवेद्य, पीतल या तांबे का कलश, कलश स्थापना हेतु गेहूं, आदि शुभ धान, आम के पल्लव, हवन हेतु लकड़ियां आदि हवन सामग्रीयां।

मंत्र:–

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ।

ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

Om Aim Hreem Kleem Chamundaye Vichchai |

Om Gloum Hum Kleem Jum Sah Jvalaya Jvalaya Jvala Jvala Prajvala Prajvala Aim Hreem Kleem Chamundaye Vichchai Jvala Ham Sam Lam Ksham Phat Swaha ||

विधि:–

साधना से पूर्व पूजन स्थान की भूमि एवं सामग्री आदि को पवित्रिकरण करके विधि-विधान से स्वच्छ करलें।

देवी दुर्गा की साधना प्रातःकाल से प्रारंभ करें। साधना का प्रारंभ नवरात्र में करना उत्तम माना गया हैं, यदि नवरात्र में साधना करना संभव न हो तो, साधना किसी भी मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा अर्थात एकम से प्रारंभ की जा सकती हैं, प्रतिपदा से लेकर दसवीं तिथि तक दस दिनों में साधना संपन्न करलें।

आग्नेय कोण में वेदी बनाकर उत्तर दिशा या पूर्व की ओर मुख में आसन लगाये। विधि-विधान से कलश की स्थापना करें। कलश को गेहूं, धान आदि शुभ अन्न पर स्थापित करें। कलश में आम्रपल्लव के डंठल जलमे रहे इस प्रकार डाल दें। कलश पर दीपक प्रज्ज्वलित करके रख दें। फिर हवन कुंड को अग्नि से प्रज्ज्वलित करें। उक्त

समस्त विधि-विधार करते हुवे मां दुर्गा के मंत्र का जप करते रहें। उक्त समस्त्र क्रिया के पश्चयात आसन पर बैठे-बैठे देवी की तेजस्वी प्रतिमा या स्वरुप का त्राटक में ध्यान करते हुवे प्रतिमा को स्थापित करें। प्रतिमा को स्थापित कर। मंत्र पढ़ते हुवे अग्नि में हवि दें। दस दिनों तक प्रतिदिन 1188 मंत्रों का जप करें। मंत्र जप के दौरान देवी दुर्गा की प्रतिमा पर अपना ध्यान बनाये रखें।

लाभ: उक्त विधि से साधना करने से मां दुर्गा के आशिर्वाद से साधक के आत्मबल, ओज, तेज, बल, पराक्रम में वृद्धि होती हैं, उसे स्वास्थ्यलाभ प्राप्त होता हैं। साधक को अपने कार्य में मनोवांछित सफलता की प्राप्ति होती हैं।

दुर्गाष्टाक्षर मंत्र साधना

विधि:–

दुर्गाष्टाक्षर मंत्र अत्यंत्र गोपनीय हैं। शास्त्रों में दुर्गाष्टाक्षर मंत्र को शीघ्र सिद्धिदायक एवं दुर्लभ माना गया हैं। इस लिए दुर्गाष्टाक्षर मंत्र के बारे में उल्लेख किया गया हैं..

साक्षात्सिद्धिप्रदो मंत्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ।
अष्टाक्षरो अष्ट सिद्धिशो गोपनीयो दिगंबरैः ॥

अर्थात: यह दुर्गा मंत्र साक्षात सिद्धि प्रदान करने वाला, कलेशों का नाश करने वाला हैं, आठ अक्षरों वाले इस मंत्र में अष्ट सिद्धि या समाहित हैं अतः यह अत्यंत गोपनीय हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री दुर्गाष्टाक्षर मन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः,
श्री दुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता, दुं बीजम्।,
ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकाय नमः इति दिग्बंधः,
धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

दुर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटाम्
शंखाब्जखड्ग शर खेटक शूल चापान् ।
संतर्जनी च दधतीं महिषासनस्थां
दुर्गा नवारकुल पीठगतां भजेऽहम् ॥

मंत्र:–

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।
Om Hreem Dum Durgayai Namah ।

लाभ: दुर्गाष्टाक्षर मंत्र का एक लाख जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है। जप हेतु प्रतिदिन निश्चित समय का चुनाव करें और प्रतिदिन अपनी सुविधा के अनुशार 5, 11, 21 दिन में में किसी निश्चित संख्या में एक लाख जप पूर्ण करें। मंत्र जाप पूर्ण होने के पश्चयात प्रतिदिन प्रातः एक माला जप करें। इस मंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने से साधक को वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु विजय, रोग-मुक्ति और जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए दुर्गाष्टाक्षर मंत्र अचूक एवं सिद्धिदायक है ।

दुर्गा स्मृता मंत्र साधना

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् , ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जंतोः स्वस्थैः स्मृतामति मतीव शुभां ददासि। यदंति, यच्च दूरके भयं विंदति मामिह पवमान वितज्जहि, दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्राज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयंतीं, पद्मेस्थितां पद्मम् वर्णा तामिहोपह्व्ये श्रियम्, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुंडाये विच्चै ।

उक्त दुर्गा स्मृता मंत्र के एक लाख जप करने से मंत्र सिद्ध होता हैं। जप पूर्ण होने पर मंत्र की दशांश होम करना चाहिए। दुर्गा स्मृता मंत्र के सिद्ध होने पर साधक को जीवन में सभी कार्यों में पूर्ण सिद्धियं प्राप्त होने लगती हैं। साधक संसार में सर्वत्र आदरणिय हो जाता हैं।

दुर्गा साधना

साधना हेतु सामग्री:-

माला: स्फटिक | दिशा: उत्तर | जप संख्या: सवा लाख | आसन: सफेद | वस्त्र: लाल वस्त्र, | समय : रात्री काल | अन्य पूजन सामग्रीयां: दुर्गा यंत्र, घी का दीप, जलपात्र

मंत्र:–

हुं दुर्गायै नमः ।

Hum Durgayai Namah |

विधि:-

किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी या चतुर्दशी से यह प्रयोग प्रारंभ करें।

विद्वानों का कथ हैं की पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वार से जाप करने से मां दुर्गा के दर्शन अवश्य होते हैं।

मंत्र जाप की समाप्ति पर किसी कुंवारी कन्या को भोजन कराये उसे यथा शक्ति भेट एवं दक्षिणा दें कर प्रसन्न करने से यह साधना संपन्न होती हैं।

लाभ: देवी दुर्गा की असिम कृपा प्राप्त होती हैं, साधक को जीवन में सभी प्रकार के सुख साधनों की प्राप्ति होती हैं।

नवरात्र व्रतकथा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्राचीन काल में चैत्र वंशी सुरथ नामक एक राजा राज करते थे। एक बार उनके शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया और उन्हें युद्ध में हरा दिया। राजा को बलहीन देखकर उसके दुष्ट मंत्रियों ने राजा की सेना और खजाना अपने अधिकार में ले लिया। जिसके परिणाम स्वरूप राजा सुरथ दुखी और निराश होकर वन की ओर चले गए और वहां महर्षि मेधा के आश्रम में निवास करने लगे।

एक दिन आश्रम में राजा की भेंट समाधि नामक एक वैश्य से हुई, जो अपनी स्त्री और पुत्रों के दुर्व्यवहार से अपमानित होकर वहां निवास कर रहा था।

समाधि ने राजा को बताया कि वह अपने दुष्ट स्त्री और पुत्र आदिकों से अपमानित होने के बाद भी उनका मोह नहीं छोड़ पा रहा है। उसके चित्त को शान्ति नहीं मिल पा रही है। इधर राजा का मन भी उसके अधीन नहीं था। राज्य, धनादि की चिंता अभी भी उसे बनी हुई थी, जिससे वह बहुत दुखी थे। तदान्तर दोनों महर्षि मेधा के पास गए।

महर्षि मेधा यथायोग्य सम्भाष्ण करके दोनों से वार्ता आरंभ की। उन्होने बताया "यद्यपि हम दोनों अपने स्वजनों से अत्यंत अपमानित और तिरस्कृत होकर यहाँ आए हैं, फिर भी उनके प्रति हमारा मोह नहीं छूटता । इसका क्या कारण है?

महर्षि मेधा ने कहा मन शक्ति के अधीन होता है। आदिशक्ति भगवती के दो रूप हैं- विद्या और अविद्या। विद्या मन का स्वरूप है तथा अविद्या अज्ञान का स्वरूप है। अविद्या मोह की जननी है किंतु लोग मां भगवती को संसार का आदि कारण मानकर भक्ति करते हैं, मां भगवती उन्हें जीवन मुक्त कर देती है।" राजा सुरध ने पूछा- भगवन वह देवी कौन सी है, जिसको आप महामाया कहते हैं?

हे ब्रह्मन्। वह कैसे उत्पन्न हुई। और उसका क्या कार्य है? उसके चरित्र कौन कौन से हैं? प्रभो ! उसका प्रभाव, स्वरूप आदि के बारे में हमे विस्तार में बताइए।

महर्षि मेधा बोले - राजन्! वह देवी तो नित्यास्वरूप है, उनके द्वारा यह संसार रचा गया है। तब भी उसकी उत्पत्ति अनेक प्रकार से होती है, जिसे मैं बताता हूं। संसार को जलमय करके जब भगवान विष्णु यागनिद्रा का आश्रय लेकर, शेषशय्या पर सो रहे थे, तब मधु-कैटभ नाम के असुर उनके कानों के मैल से प्रकट हुए और वह श्री ब्रह्माजी को मारने के लिए तैयार हो गए। उनके इस भयानक रूप को देखकर ब्रह्माजी ने अनुमान लगा लिया कि भगवान विष्णु के सिवाय मेरा कोई रक्षक नहीं है। किन्तु विडम्बना यह थी कि भगवान विष्णु सो रहे थे। तब उन्होंने श्री भगवान को जगाने के लिए उनके नेत्रों में निवास करने वाली योगनिद्रा की स्तुति की।

तब सभीगुण अधिष्ठात्री देवी योगनिद्रा भगवान विष्णु के नेत्र, नसिका, मुख, बाहु और ह्वदय से निकलकर ब्रह्मा जी के सामने खड़ी हो गई। योगनिद्रा के निकलते ही श्रीहरि तुरंत जाग उठे। उन्हें देखकर राक्षस क्रोधित हो उठे और युद्ध के लिए उनकी तरफ दौड़े। भगवान विष्णु और उन राक्षसों में पाँच हजार वर्षो तक युद्ध हुआ। अंत में दोनों राक्षसों ने भगवान की वीरता देख कर उन्हें वर माँगने को कहा।

भगवान ने कहा यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो अब मेरे हाथों मर जाओ। बस, इतना ही वर में तुम से माँगता हूँ।

महर्षि मेधा बोले - इस तरह से जब वह धोखे में आ गए और अपने चारों ओर जल ही जल देखा तो भगवान से कहने लगे कि जहां जल न हो, उसी जगह हमारा वध कीजिए।

तथास्तु कहकर भगवान श्री हरि ने उन दोनो को अपनी जांघ पर लिटा कर सिर काट डाले।

महर्षि मेधा बोले इस तरह से यह देवी श्री ब्रह्माजी की

स्तुति करने पर प्रकट हुई थी, अब तुम से उनके प्रभाव का वर्णन करता हूं, जिसको ध्यान से सुनो - प्राचीन काल में देवताओं के स्वामी इंद्र और असुरों के स्वामी महिषासुर के बीच पूरे सौ वर्षों तक युद्ध हुआ था। इस युद्ध में देवताओं की सेना परास्त हो गई और इस प्रकार देवताओं को जीत महिषासुर इन्द्र बन बैठा हारे हुए देवता श्री ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान शंकर व विष्णु जी के पास गए और अपनी हार का सारा वृतांत उन्हें कह सुनाया। उन्होने महिषासुर के वध की प्रथना के उपाय की प्रर्थना की। साथ ही राज्य वापस पाने के लिए उनकी कृपा की स्तुति की।

देवताओं की बातें सुनकर भगवान विष्णु और शंकर जी को देवताओं पर बड़ा गुस्सा आया। गुस्से से भरे हुए भगवान विष्णु के मुख से बड़ा भारी तेज निकला और उसी प्रकार का तेज भगवान शंकर, ब्रह्मा आदि देवताओं के मुख से प्रकट हुआ, जिससे दसों दिशाएं जलने लगी। अंत में यही तेज एक देवी के रूप में परिवर्तित हो गया।

देवी ने सभी देवताओं से आयुध, शक्ति तथा आभूषण प्राप्त कर उच्च स्वर में गगनभेदी गर्जना की। जिससे समस्त विश्व में हलचल मच गई पृथ्वी, पर्वत आदि डोल गए। क्रोघित महिषासुर दैत्य सेना लेकर इस सिंहनाद की ओर दौड़ा। उसने देखा कि देवी की प्रभा से तीनों लोक प्रकाशित हो रहे हैं। महिषासुर ने अपना समस्त बल और छल लगा दिया परंतु देवी के सामने उसकी एक न चली। अंत में वह देवी के हाथों मारा गया। आगे चलकर यही देवी शुम्भ-निशुम्भ नामक असुरों का वध करने के लिए गौरी देवी के शरीर से उत्पन्न हुई।

उस समय देवी हिमालय पर विचर रहीं थी। जब शुम्भ-निशुम्भ के सेवकों ने उस परम मनोहर रूप वाली जगदंबा देवी को देखा और तुरन्त अपने स्वामी के पास जाकर कहा कि "हे महाराज ! दुनिया के सारे रत्न आपके अधिकार में हैं। वे सब आपके यहाँ शोभा पाते हैं। ऎसे ही एक स्त्री रत्न को हमने हिमालय की पहाडियों में देखा है। आप हिमालय को प्रकाशित करने वाली दिव्य क्रांति युक्त इस देवी का वरण कीजिए। यह सुनकर दैत्यराज शुम्भ ने सुग्रीव को अपना दूत बनाकर देवी के पास अपना विवाह प्रस्ताव भेजा। देवी ने प्रस्ताव को ना मानकर कहा जो मुझसे युद्ध में जीतेगा। मैं उससे विवाह करूँगी। यह सुनकर असुरेन्द्र के क्रोध का पारावार न रहा और उसने अपने सेनापति धूम्रलोचन को देवी के केशों से पकड़कर लाने का आदेश दिया। इस पर धूम्रलोचन साठ हजार राक्षसों की सेना साथ लेकर देवी से युद्ध के लिए वहाँ पहुँचा और देवी को ललकारने लगा। देवी ने सिर्फ अपनी हुंकार से ही उसे भस्म कर दिया और देवी के वाहन सिंह ने बाकी असुर सेना का संहार कर दिया।

इसके बाद चण्ड मुण्ड नामक दैत्यों को एक बड़ी सेना के साथ युद्ध के लिए भेजा गया। जब असुर देवी को तलवारें लेकर उनकी ओर बढ़े तब देवी ने काली का विकराल रूप धारण कर उन पर टूट पड़ी। कुछ ही देर में सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया। फिर देवी ने "हूँ" शब्द कहकर चण्ड का सिर काट दिया और मुण्ड को यमलोक पहुँचा दिया। तब से देवी काली की संसार में चामुंडा के नाम से ख्याति होने लगी।

महर्षि मेधा ने आगे बताया - चण्ड मुण्ड और सारी सेना के मारे जाने की खबर सुनकर असुरों के राजा शुम्भ ने अपनी सम्पूर्ण सेना को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दी। शुम्भ की सेना को अपनी ओर आता देखकर देवी ने अपने धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश के बीच का भाग गुंजा दिया। ऎसे भयंकर शब्द सुनकर राक्षसी सेना ने देवी और सिंह को चारों ओर से घेर लिया। उस समय दैत्यों के नाश के लिए और देवताओं के हित के लिए समस्त देवताओं की शक्तियाँ उनके शरीर से निकलकर उन्हीं के रूप में आयुधों से सजकर दैत्यों से युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो गईं। इन देव शक्तियों से घिरे हुए भगवान शंकर ने देवी से कहा मेरी प्रसन्नता के लिए तुम शीघ्र ही इन असुरों को मारो।

इसके पश्चयात् देवी के शरीर से अत्यंत उग्र रूप वाली और सैंकड़ों गीदडियों के समान आवाज करने वाली चण्डिका शक्ति प्रकट हुई। उस अपराजिता देवी ने भगवान शंकर को अपना दूत बनाकर शुम्भ, निशुम्भ के

पास इस संदेश के साथ भेजा जो तुम्हे अपने जीवित रहने की इच्छा हो तो त्रिलोकी का राज्य इन्द्र को दे दो, देवताओं को उनका यज्ञ भाग मिलना आरंभ हो जाए और तुम पाताल को लौट जाओ, किन्तु यदि बल के गर्व से तुम्हारी लड़ने की इच्छा हो तो फिर आ जाओ, तुम्हारे माँस से मेरी योनियाँ तृप्त होंगी।"

चूंकि उस देवी ने भगवान शंकर को दूत के कार्य में नियुक्त किया था, इसलिए वह संसार में शिवदूती के नाम से विख्यात हुई। मगर दैत्य भला कहां मानने वाले थे। वे तो अपनी शक्ति के मद में चूर थे। उन्होने देवी की बात अनसुनी कर दी और युद्ध को तत्पर हो उठे। देखते ही देखते पुन: युद्ध छिड़ गया। किंतु देवी के समक्ष असुर कब तक ठहर सकते थे। कुछ ही देर में देवी ने उनके अस्त्र, शस्त्रों को काट डाला। जब बहुत से दैत्य काल के मुख में समा गए तो महादैत्य रक्तबीज युद्ध के लिए आगे बढ़ा। उसके शरीर से रक्त की बूंदे पृथ्वी पर जैसे ही गिरती थीं। तुरंत वैसे ही शरीर वाला दैत्य पृथ्वी पर उत्पन्न हो जाता था। यह देखकर देवताओं को भय हुआ, देवताओं को भयभीत देखकर चंडिका ने काली से कहा "हे चामुण्डे" तुम अपने मुख को फैलाओ और मेरे शस्त्राघात से उत्पन्न हुए रक्त बिन्दुओं तथा रक्त बिन्दुओं से उत्पन्न हुए महाअसुरों को तुम अपने इस मुख से भक्षण करती हुई रणभूमि में विचरो। इस प्रकार उस दैत्य का रक्त क्षीण हो जाएगा और वह स्वयं नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार अन्य दैत्य उत्पन्न नहीं होंगे।

काली के इस प्रकार कहकर चण्डिका देवी ने रक्तबीज पर अपने त्रिशुल से प्रहार किया और काली देवी ने अपने मुख में उसका रक्त ले लिया। चण्डिका ने उस दैत्य को बज्र, बाण, खड्म इत्यादि से मार डाला। महादैत्य रक्तबीज के मरते ही देवता अत्यंत प्रसन्न हुए और माताएं उन असुरों का रक्त पीने के पश्चयात उद्धत होकर नृत्य करने लगीं। रक्तबीज के मारे जाने पर शुम्भ व निशुम्भ को बड़ा क्रोध आया और अपनी बहुत बड़ी सेना लेकर महाशक्ति से युद्ध करने चल दिए। महापराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेना सहित मातृगणों से युद्ध करने के लिए आ पहुँचा। किन्तु शीघ्र ही सभी दैत्य मारे गए और देवी ने शुम्भ निशुम्भ का संहार कर दिया। सारे संसार में शांति छा गई और देवता गण हर्षित होकर देवी की वंदना करने लगे। इन सब उपाख्यानों को सुनकर मेधा ऋषि ने राजा सुरध तथा वणिक समाघि से देवी स्तुवन की विधिवत व्याख्या की, जिसके प्रभाव से दोनों नदी तट पर जाकर तपस्या में लीन हो गए। तीन वर्ष बाद दुर्गा माता ने प्रकट होकर दोनों को आशीर्वाद दिया। इस प्रकार वणिक तो संसारिक मोह से मुक्त होकर आत्मचिंतन में लग गया तथा राजा ने शत्रुओं को पराजित कर अपना खोया हुआ राज वैभव पुन: प्राप्त कर लिया।

सप्तश्लोकी दुर्गा

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

देव उवाच:

श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्री दुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य
नारायण ऋषिः अनुष्टप्छन्दः,

श्रीमहमकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः,
श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हिसा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥

रोगानशोषानपहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्माश्रयतां प्रयान्ति॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्र्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्यद्वैरिविनाशनम्॥
॥ इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा संपूर्णम् ॥

दुर्गा आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निसदिन ध्यावत हरि ब्रम्हा शिवरी॥१॥
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको॥२॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे॥३॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी॥४॥

कानन कुंडल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥५॥
शुंभ निशंभु विदारे महिषासुरधाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥६॥

चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे॥७॥
ब्रम्हाणी रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥८॥

चौसंठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरुँ।
बाजत ताल मृदंगा अरु डमरुँ॥९॥
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता सुख सम्पत्ति कर्ता॥१०॥

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी।
मनवांच्छित फल पावे सेवत नर नारी॥११॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बात्ती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती॥१२॥
माँ अम्बे जी की आरती जो कोई नर गाये।
कहत शिवानंद स्वामी सुख संपत्ति पाये॥१३॥

॥दुर्गा चालीसा॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो दुर्गे दुःख हरनी ॥१॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥२॥
शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥३॥
रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरशकरत जन अति सुखपावे ॥४॥
तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥५॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥६॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥७॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥८॥
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥९॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़कर खम्बा ॥१०॥

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥११॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥१२॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥१३॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित नजात बखानी॥१४॥
मातंगी अरु धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥१५॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्नभालभव दुःखनिवारिणी॥१६॥
केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी॥१७॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥१८॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥१९॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहुँलोक में डंका बाजत॥२०॥

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥२१॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥२२॥
रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥२३॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भईसहाय मातु तुम तब तब॥२४॥
अमरपुरी अरु बासव लोका।
तब महिमा सब रहें अशोका॥२५॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी॥२६॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावें।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥२७॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥२८॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योगन हो बिन शक्ति तुम्हारी॥२९॥
शंकर आचारज तप कीनो।
कामअरु क्रोधजीति सब लीनो॥३०॥

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहुकाल नहिं सुमिरो तुमको॥३१॥
शक्ति रूप का मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥३२॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्बभवानी॥३३॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥३४॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥३५॥

आशा तृष्णा निपट सतावें।
मोह मदादिक सब बिनशावें॥३६॥
शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥३७॥
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला।३८॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ॥३९॥
श्री दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥४०॥

दोहा: देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

श्रीकृष्ण कृत देवी स्तुति

नवरात्र में श्रद्धा और प्रेमपूर्वक महाशक्ति भगवती देवी की पूजा-उपासना करने से यह निर्गुण स्वरूपा देवी पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करके स्वयं ही सगुणभाव को प्राप्त होकर ब्रहमा, विष्णु और महेश रूप से उत्पत्ति, पालन और संहार कार्य करती हैं।

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी। त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥१॥
कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्। परब्रह्मास्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी॥२॥
तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा। सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्पर॥३॥
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया। सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला॥४॥

अर्थातः आप विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो, आप सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो। यद्यपि वस्तुतः आप स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। आप परब्रहम स्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो। परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने आप शरीर धारण करती हों। आप सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवं परात्पर हो। आप सर्वाबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। आप सर्वज्ञ, सर्वप्रकार से मंगल करने वाली एवं सर्व मंगलों कि भी मंगल हो।

ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम्

अहमित्यष्टर्चस्य सूक्त स्य वागाम्भृणी ऋषि: सच्चित्सुखात्मक: सर्वगत: परमात्मा देवता,
द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्द:, देवीमाहात्म्य पाठे विनियोगः।

ध्यानम्

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजै: शङ्खं चक्रधनु:शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि: शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

देवीसूक्तम्

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते॥२॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधु: पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम्॥३॥
मयासो अन्नमत्ति योविपश्यति य: प्राणिति यईश्रृणोत्युक्त म्। अमन्तवो मां तउप क्षियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥४॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रहमाणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥५॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रहमद्विषे शरवे हन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहंद्यावापृथिवीआविवेश॥६॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्त: समुद्रे। ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पशमि॥७॥
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव॥८॥

॥ सिद्धकुंजिकास्तोत्रम्॥

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥१॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥२॥
कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत्कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे॥२॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥३॥
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥४॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी॥५॥
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥६॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं॥७॥
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥
इदं तु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥
। इति श्री कुंजिकास्तोत्रम् संपूर्णम्।

दुर्गाष्टकम्

दुर्गे परेशि शुभदेशि परात्परेशि।
वन्द्ये महेशदयितेकरुणार्णवेशि।
स्तुत्ये स्वधे सकलतापहरे सुरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥१॥
दिव्ये नुते श्रुतिशतैर्विमले भवेशि।
कन्दर्पदारशतयुन्दरि माधवेशि।
मेधे गिरीशतनये नियते शिवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥२॥
रासेश्वरि प्रणततापहरे कुलेशि।
धर्मप्रिये भयहरे वरदाग्रगेशि।
वाग्देवते विधिनुते कमलासनेशि।
कृष्णस्तुतेकुरु कृपां ललितेऽखिलेशि॥३॥
पूज्ये महावृषभवाहिनि मंगलेशि।
पद्मे दिगम्बरि महेश्वरि काननेशि।
रम्येधरे सकलदेवनुते गयेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपा
ललितेऽखिलेशि॥४॥
श्रद्धे सुराऽसुरनुते सकले जलेशि।
गंगे गिरीशदयिते गणनायकेशि।
दक्षे स्मशाननिलये सुरनायकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥५॥
तारे कृपार्द्रनयने मधुकैटभेशि।
विद्येश्वरेश्वरि यमे निखलाक्षरेशि।
ऊर्जे चतुःस्तनि सनातनि मुक्तकेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितऽखिलेशि॥६॥
मोक्षेऽस्थिरे त्रिपुरसुन्दरिपाटलेशि।
माहेश्वरि त्रिनयने प्रबले मखेशि।
तृष्णे तरंगिणि बले गतिदे ध्रुवेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥७॥
विश्वम्भरे सकलदे विदिते जयेशि।
विन्ध्यस्थिते शशिमुखि क्षणदे दयेशि।
मातः सरोजनयने रसिके स्मरेशि।
कृष्णस्तुते कुरु कृपां
ललितेऽखिलेशि॥८॥
दुर्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
सर्वार्थदं हरिहरादिनुतां वरेण्याम्।
दुर्गां सुपूज्य महितां विविधोपचारैः
प्राप्नोति वांछितफलं न
चिरान्मनुष्यः॥९॥
॥ इति श्री दुर्गाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ भवान्यष्टकम्॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसार-पाश-प्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यान-योगं
न जानामि तंत्र न च स्तोत्र-मन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानानि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्ति व्रतं वाऽपि मात-
र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥४॥

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धि कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबंधः सदाऽह
गतिस्त्व गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत्सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरा-रोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि॥८॥

॥ इति श्रीभवान्यष्टकं संपूर्णम् ॥

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे॥३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्। यां गतिं समवापनेति न तां ब्रह्मादय: सुराः॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके। इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥५॥
अज्ञानाद्विस्मृतेभ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥६॥
कामेश्वरि जगन्मात: सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥८॥

दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥१॥
सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥२॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥३॥
सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥४॥
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥५॥
अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥६॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥७॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥८॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥९॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥१०॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥११॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥१२॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्त केशी घोररूपा महाबला॥१३॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥१४॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥१५॥
य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति॥१६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्ग तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥१७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्॥१८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवापनुयात्॥१९॥
गोरोचनालक्त कुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥२०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्॥२१॥

दुर्वा पूजन में रखे सावधानियां

- माता दुर्गा की पूजा करने वाले साधकों को उपासना संबंधी इन बातों का ध्यान रखना लाभदायक रहता हैं। विद्वानो के मत में शास्त्रोक्त विधान से एक ही घर में तीन शक्तियों की पूजा करना वर्जित हैं।
- देवीपीठ पर वाद्य-शहनाई का वादन नहीं करें।
- भगवती दुर्गा का आह्वान बिल्व पत्र, बिल्व शाखा या त्रिशूल पर ही किया जाना चाहिए।
- देवी दुर्गा को केवल लाल कनेर और सुगंधित पुष्प अति प्रिय हैं। इस लिये आराधना में सुगंधित पुष्प ही लें।
- नवरात्र में कलश की स्थापना केवल दिन में करनी चाहिए।
- मां भगवती की प्रतिमा हमेशा लाल वस्त्र से बिराजीत रहे।
- देवी को भी लाल रंग की चुनरी चढाएं।
- नवरात्र में नवार्ण मंत्र जप देवी मां के सामने लाल आसन पर बैठकर लाल चंदन की माला से करना लाभ प्रद होता हैं।

विश्वंभरी स्तुति

विश्वंभरी स्तुति मूल रुपसे गुजराती में वल्लभ भट्ट द्वारा लिखी गई हैं। ✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विश्वंभरी अखिल विश्वतणी जनेता।
विद्या धरी वदनमां वसजो विधाता॥
दुर्बुद्धि दुर करी सद्दबुद्धि आपो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१॥

भूलो पडि भवरने भटकुं भवानी।
सुझे नहि लगीर कोइ दिशा जवानी॥
भासे भयंकर वळी मनना उतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥२॥

आ रंकने उगरवा नथी कोइ आरो।
जन्मांध छु जननी हु ग्रही हाथ तारो॥
ना शुं सुणो भगवती शिशुना विलापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥३॥

मा कर्म जन्म कथनी करतां विचारु।
आ सृष्टिमां तुज विना नथी कोइ मारु॥
कोने कहुं कठण काळ तणो बळापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥४॥

हुं काम क्रोध मध मोह थकी भरेलो।
आडंबरे अति धणो मद्‌थी छकेलो॥
दोषो बधा दूर करी माफ पापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥५॥

ना शास्त्रना श्रवणनु पयःपान पीधु।
ना मंत्र के स्तुति कथा नथी काइ कीधु॥
श्रद्धा धरी नथी कर्या तव नाम जापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥६॥

रे रे भवानी बहु भूल थई ज मारी।
आ जिंदगी थई मने अतिशे अकारी॥
दोषो प्रजाळि सधळा तव छाप छापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥७॥

खाली न कोइ स्थळ छे विण आप धारो।
ब्रह्मांडमां अणु-अणु महीं वास तारो॥
शक्ति न माप गणवा अगणित मापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥८॥

पापो प्रपंच करवा बधी रीते पूरो।
खोटो खरो भगवती पण हुं तमारो॥
जाडयांधकार करी दूर सुबुद्धि स्थापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥९॥

शीखे सुणे रसिक छंद ज एक चित्ते।
तेना थकी त्रिविध ताप टळे खचिते॥
बुद्धि विशेष जगदंब तणा प्रतापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१०॥

श्री सदगुरु शरनमां रहीने यजुं छुं।
रात्रि दिने भगवती तुजने भजुं छु॥
सदभक्त सेवक तणा परिताप चापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥११॥

अंतर विषे अधिक उर्मि थतां भवानी।
गाऊ स्तुति तव बळे नमीने मृडानी॥
संसारना सकळ रोग समूळ कापो।
माम् पाहि ॐ भगवती भव दुःख कापो ॥१२॥

महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम्

||भगवतीपद्यपुष्पांजलिस्तोत्र महिषासुरमर्दिनिस्तोत्रम् ||

श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ||

भगवती भगवत्पदपङ्कजं भ्रमरभूतसुरासुरसेवितम् | सुजनमानसहंसपरिस्तुतं कमलयाऽमलया निभृतं भजे ||१|| ते उभे अभिवन्देऽहं विघ्नेशकुलदैवते | नरनागाननस्त्वेको नरसिंह नमोऽस्तुते ||२|| हरिगुरुपदपद्मं शुद्धपद्येऽनुरागाद् विगतपरमभागे सन्निधायादरेण | तदनुचरि करोमि प्रीतये भक्तिभाजां भगवति पदपद्मे पद्यपुष्पाञ्जलिं ते ||३|| केनैते रचिताः कुतो न निहिताः शुम्भादयो दुर्मदाः केनैते तव पालिता इति हि तत् प्रश्ने किमाचक्ष्महे | ब्रह्माद्या अपि शंकिताः स्वविषये यस्याः प्रसादावधि प्रीता सा महिषासुरप्रमथिनीच्छद्यादवद्यानि मे ||४|| पातु श्रीस्तु चतुर्भुजा किमु चतुर्बाहोर्महौजान्भुजान् धत्तेऽष्टादशधा हि कारणगुणान्कार्ये गुणारम्भकाः | सत्यं दिक्पतिदन्तिसंख्यभुजभृच्छम्भुः स्वयम्भूः स्वयं धामैकप्रतिपत्तये किमथवा पातुं दशाष्टौ दिशः ||५|| प्रीत्याऽष्टादशसंमितेषु युगपद्द्वीपेषु दातुं वरान् त्रातुं वा भयतो बिभर्षि भगवत्यष्टादशैतान् भुजान् | यद्वाऽष्टादशधा भुजांस्तु बिभृतः काली सरस्वत्युभे मीलित्वैकमिहानयोः प्रथयितुं सा त्वं रमे रक्षमाम् ||६|| अयि गिरिनंदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते गिरिवर विंध्य शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते | भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरि कुटुंबिनि भूरि कृते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||७|| सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते | दनुज निरोषिणि दितिसुत रोषिणि दुर्मद शोषिणि सिन्धुसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||८|| अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रिय वासिनि हासरते शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृंग निजालय मध्यगते | मधु मधुरे मधु कैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||९|| अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते रिपु गज गण्ड विदारण चण्ड पराक्रम शुण्ड मृगाधिपते | निज भुज दण्ड निपातित खण्ड विपातित मुण्ड भटाधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१०|| अयि रण दुर्मद शत्रु वधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते चतुर विचार धुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते | दुरित दुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||११|| अयि शरणागत वैरि वधूवर वीर वराभय दायकरे त्रिभुवन मस्तक शूल विरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे | दुमिदुमि तामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१२|| अयि निज हुँकृति मात्र निराकृत धूम्र विलोचन धूम्र शते समर विशोषित शोणित बीज समुद्भव शोणित बीज लते | शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१३|| धनुरनु संग रणक्षणसंग परिस्फुर दंग नटत्कटके कनक पिशंग पृषत्क निषंग रसद्भट शृंग हतावटुके | कृत चतुरङ्ग बलक्षिति रङ्ग घटद्बहुरङ्ग रटद्बटुके जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१४|| सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते हासविलासहुलासमयि प्रणतार्तजनेऽमितप्रेमभरे |

धिमिकिटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिघोरमृदंगनिनादरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१५|| जय जय जप्य जयेजय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते झण झण झिञ्जिमि झिंकृत नूपुर सिंजित मोहित भूतपते | नटित नटार्ध नटीनट नायक नाटित नाट्य सुगानरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१६|| अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते | सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१७|| सहित महाहव मल्लम तल्लिक मल्लित रल्लक मल्लरते विरचित वल्लिक पल्लिक मल्लिक झिल्लिक भिल्लिक वर्ग वृते | सितकृत फुल्लिसमुल्ल सितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१८|| अविरल गण्ड गलन्मद मेदुर मत्त मतङ्गज राजपते त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूप पयोनिधि राजसुते | अयि सुद तीजन लालसमानस मोहन मन्मथ राजसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||१९|| कमल दलामल कोमल कांति कलाकलितामल भाललते सकल विलास कलानिलयक्रम केलि चलत्कल हंस कुले | अलिकुल सङ्कुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्बकुलालि कुले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२०|| कर मुरली रव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते मिलित पुलिन्द मनोहर गुञ्जित रंजितशैल निकुञ्जगते | निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुण संभृत केलितले जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२१|| कटितट पीत दुकूल विचित्र मयूखतिरस्कृत चंद्र रुचे प्रणत सुरासुर मौलिमणिस्फुर दंशुल सन्नख चंद्र रुचे | जित कनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भर कुंजर कुंभकुचे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२२|| विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते कृत सुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते | सुरथ समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२३|| पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् | तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२४|| कनकलसत्कल सिन्धु जलैरनु सिञ्चिनुते गुण रङ्गभुवं भजति स किं न शचीकुच कुंभ तटी परिरंभ सुखानुभवम् | तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२५|| तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते | मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२६|| अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते | यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ||२७|| स्तुतिमितस्तिमितः सुसमाधिना नियमतोऽयमतोऽनुदिनं पठेत् | परमया रमयापि निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ||२८|| रमयति किल कर्षस्तेषु चित्तं नराणामवरजवर यस्माद्रामकृष्णः कवीनाम् | अकृत सुकृतिगम्यं रम्यपद्यैकहर्म्यं स्तवनमवनहेतुं प्रीतये विश्वमातुः ||२९|| इन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो यतः सोऽनवद्यः स्मृतः | श्रीपतेः सूनूना कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे पद्मपुष्पाञ्जलिः ||३०|| || इति श्रीभगवतीपद्मपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ||

शाप विमोचन मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र

चण्डिका शाप विमोचन मंत्र के पाठ को करने से देवी की पूजा में की गयी किसी भी प्रकार त्रुटि (भूल) से मिला श्राप खत्म हो जाता है।

शाप-विमोचन संकल्प

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन मन्त्रस्य वसिष्ठनारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्ति: त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तो मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

शापविमोचन मंत्र

ॐ (ह्रीं) रीं रेत:स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१॥
ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै,ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥२॥
ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥३॥
ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥४॥
ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥५॥
ॐ तं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥६॥
ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥७॥
ॐ जां जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥८॥
ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥९॥
ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१०॥
ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफ़लदात्र्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥११॥
ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१२॥
ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१३॥
ॐ माँ मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमासहितायै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१४॥
ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नम: शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१६॥
ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फ़ट स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद विमुक्ताभव॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नम:॥१८॥
इत्येवं हि महामन्त्रान पठित्वा परमेश्वर, चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशय:॥१९॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति य:, आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशय:॥२०॥
(श्रीदुर्गामार्पणामस्तु)

श्रीदुर्गाअष्टोत्तर शतनाम पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

संकल्पः

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेत वराह कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्त देशे **अमुक** पुण्य क्षेत्रे कलियुगे कलि प्रथम चरणे **अमुक** सम्वत्सरे **अमुक** मासे **अमुक** पक्षे **अमुक** तिथौ **अमुक** वासरे **अमुक** गोत्रो **अमुक** (शर्मा, वर्मा अपने या जिसके लिये अनुष्ठान कर रहे हो उनके **नाम** का उच्चारण करें।) अहं श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थे अष्टोत्तर शत नाम मन्त्रैः यथा शक्ति यजनं करिष्ये।

(**अमुक** के स्थान पर अपना वर्तमान स्थान-संवत्स-मास-पक्ष-तिथि-वास- का उचारण करें और अमुक गोत्रो व नाम के स्थान पर जिसके लिये जप किया जा रहा हो उस व्यक्ति के गोत्र व नाम का उचारण करना चाहिए यदि स्वयं जप कर रहे हो तो स्वयंका गोत्र नाम लें)

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शतनाम माला मन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं बीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीदुर्गा प्रीत्यर्थं श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शत नाम पूजने विनियोगः।

नोट:

श्रीदुर्गा अष्टोत्तर नामावली के मन्त्रों से पूजन करते समय उक्त मन्त्र का उच्चारण कर विनियोग करना चाहिये। यदि सिर्फ नाम अर्थात मन्त्रों के द्वारा जप करना हो, तो पूजने विनियोग। के स्थान पर जपे विनियोगः। का उचारण करें और यदि पूजन के साथ विधिवत तर्पण करना हो, तो पूजने तर्पणे च विनियोगः। का उचारण करें। नाम मन्त्रों का होम करना हो, तो होमे विनियोगः। का उचारण करें । ऋष्यादि न्यास में भी उपरोक्त विधि से योजन करें।

ऋष्यादि न्यासः

श्रीनारद-ऋषये नमः। शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः। मुखे, श्रीदुर्गा देवतायै नमः। हृदि, दुं बीजाय नमः। गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः। पादयो, ॐ कीलकाय नमः। नाभौ, श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थं श्रीदुर्गा अष्टोत्तर शत नाम पूजने विनियोगाय नमः। सर्वांगे।

षडङ्ग न्यास:

ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै। ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रैं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रौं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय। ह्रः ॐ ह्रीं दुं दुर्गाय।

कर न्यास:

अंगुष्ठाभ्यां नमः। तर्जनीभ्यां नमः। मध्यमाभ्यां नमः। अनामिकाभ्यां हुम। कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अंग न्यास:

हृदयाय नमः। शिरसे स्वाहा। शिखायै वषट्। कवचाय हुम्। नेत्र-त्रयाय वौषट। अस्त्राय फट्।

ध्यानः

सिंहस्था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्या चतुर्भिर्भुजैः।
शंख चक्र-धनुः-शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता॥
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्-काञ्ची-क्वणन्-नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु वो रत्नोल्लसत्-कुण्डला॥

उक्त प्रकार 'ध्यान' करने के बाद माँ दुर्गा का मानसिक पूजन करें।

मानस पूजनः

ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकम् गन्धम् श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥ ॐ हं आकाश तत्त्वात्मकम् पुष्पं श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥ ॐ यं वायु तत्त्वात्मकं धूपं श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये घ्रापयामि नमः॥

ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये दर्शयामि नमः॥ ॐ वं जल तत्त्वात्मकं नैवेद्य श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये निवेदयामि नमः॥ ॐ शं सर्व तत्त्वात्मकं ताम्बूलम् श्रीजगदम्बा दुर्गा प्रीतये समर्पयामि नमः॥

उक्त मन्त्र के उचारण के बाद में दुर्गा अष्टोत्तर शत नामावली का पाठ करें।

त्रिबीज युक्त चतुर्थ्यन्त अष्टोत्तर शत नामावली

ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसाध्व्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभव-प्रीतायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभवान्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभव-मोचिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीआर्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदुर्गायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीजयायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीआद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीत्रि-नेत्रायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशूल-धारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपिनाक-धारिण्ये पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्रायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचण्ड-घण्टायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-तपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमनो-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबुद्धयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअहंकारायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्त-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचितायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचित्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-मन्त्र-मय्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनित्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यानन्द-स्वरुपिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभाविन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभाव्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअभव्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसदा-गत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशाम्भव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदेव-मातायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचिन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीरत्न-प्रयायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-विद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदक्ष-कन्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीदक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअपर्णायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेक-वर्णायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपाटलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपाटलावत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपटाम्बर-परीधानायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकल-मञ्जीर-रञ्जिन्यै नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअमेय-विक्रमायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीक्रूरायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसुन्दर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसुर-सुन्दर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवन-दुर्गायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमातंगयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमतंग-मुनि-पूजितायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीब्राह्मयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमाहेश्वर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीऐन्द्रयै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकौमार्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवैष्णव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचामुण्डायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवाराह्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीलक्ष्म्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपुरुषाकृत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविमलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीउत्कर्षिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीज्ञानायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीक्रियायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसत्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबुद्धिदायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबहुलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबहुल-प्रियायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-वाहनायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनिशुम्भ-शुम्भ-हनन्यै पूजयामि नमः।

ॐ ह्रीं दुं श्रीमहिषासुर-मर्दिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमधु-कैटभ-हन्त्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीचण्ड-मुण्ड-विनाशिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्वासुर-विनाशायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-दानव-घातिन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्व-शास्त्र-मय्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविद्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसर्वास्त्र-धारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेक-शस्त्र-हस्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनेकास्त्र-विधारिण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकुमार्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकन्यायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकैशोर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीयुवत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीयत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअप्रौढायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीप्रौढायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीवृद्ध-मातायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीबल-प्रदायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-देव्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमुक्त-केश्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीघोर-रुपायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीमहा-बलायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअग्नि-ज्वालायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीरौद्र-मुख्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकाल-रात्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीतपस्विन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीनारायण्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीभद्रकाल्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीविष्णु-मायायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीजलोदर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीशिव-दूत्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकराल्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीपरमेश्वर्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीकात्यायन्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीसावित्र्यै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीप्रत्यक्षायै पूजयामि नमः।
ॐ ह्रीं दुं श्रीब्रह्म-वादिन्यै पूजयामि नमः।

परशुराम कृत श्रीदुर्गास्तोत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥ परशुराम उवाच ॥
श्रीकृष्णस्य च गोलोकेपरिपूर्णतमस्य चः।
आविर्भूता विग्रहतः, परा सृष्ट्युन्मुखस्य च॥
सूर्य-कोटि-प्रभा-युक्ता, वस्त्रालंकार भूषिता।
वह्नि शुद्धांशुकाधाना सुस्मिता, सुमनोहरा॥
नव यौवन सम्पन्ना सिन्दूर विन्दु शोभिता।
ललितं कबरीभारं मालती माल्य मण्डितम्॥
अहोनिर्वचनीया त्वं, चारुमूर्ति च बिभ्रती।
मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां, महाविष्णोर्विधिः स्वयम्॥
मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा, त्वां सर्वमोहिनीम्।
बालैः सम्भूय सहसा, सस्मिता धाविता पुरा॥
सद्भिः ख्याता तेन, राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी।
कृष्णस्त्वां सहसाहूय, वीर्याधानं चकार ह॥
ततो डिम्भं महज्जज्ञे, ततो जातो महाविराट्।
यस्यैव लोमकूपेषु, ब्रह्माण्डान्यखिलानि च॥
तच्छृंगारक्रमेणैव त्वन्निःश्वासो बभूव ह।
स निःश्वासो महावायुः स विराड् विश्वधारकः॥
तव घर्मजलेनैव पुप्लुवे विश्वगोलकम्।
स विराड् विश्वनिलयो जलराशिर्बभूव ह॥
ततस्त्वं पञ्चधाभूय पञ्चमूर्तीश्च बिभ्रती।
प्राणाधिष्ठातृमूर्त्तिर्या कृष्णस्य परमात्मनः॥
कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः॥
वेदाधिष्ठात्रीमूर्तियां वेदाशास्त्रप्रसूरपि।
तं सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः॥
ऐश्वर्याधिष्ठात्रीमूर्तिः शान्तिश्च शान्तरूपिणी।
लक्ष्मीं वदन्ति संतस्तां शुद्धां सत्त्वस्वरुपिणीम् ॥
रागाधिष्ठात्री या देवी, शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः।
सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञां प्रवदन्ति बुधा भुवि॥
बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मूर्तिरधिदेवता।
सर्वमंगलमंगल्या सर्वमंगलरूपिणी॥
सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य निलयेधुना॥
शिवे शिवास्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके।
सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया॥
राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च।
परमानन्द-रूपस्य परमानन्दरूपिणी॥
त्वत्कलांशांशकलया देवानामपि योषितः॥
त्वं विद्या योषितः सर्वास्त्वं सर्वबीजरूपिणी।
छाया सूर्यस्य चन्द्रस्य रोहिणी सर्वमोहिनी॥
शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी।
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा॥
वह्नेः प्रिया हि स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी।
यमस्य तु सुशीला च नैर्ऋतस्य च कैटभी॥
ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया।
देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती॥
लोपामुद्राप्यगस्त्यस्य देवमातादितिस्तथा। अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा॥
गंगा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद्वराः।
एताः सर्वाश्च या ह्यन्याः सर्वास्त्वत्कलयाम्बिके॥
गृहलक्ष्मीगृहे नृणांराजलक्ष्मीश्च राजसु।
तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च॥
सतां सत्त्वस्वरूपा त्वमसतां कलहांकुरा।
ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्ति स्त्वं सगुणस्य च॥
सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने।
जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे॥
त्वं भूमौ गन्धरूपा च आकाशे शब्दरूपिणी।
क्षुत्पिपासादयस्त्वं च जीविनां सर्वशक्तयः॥
सर्वबीजस्वरूपा त्वं संसारे साररूपिणी।
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्ति र्विपश्चिताम्॥
कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा।
शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युञ्जयः शिवः॥
सृष्टिपालनसंहारशक्त यस्त्रिविधाश्च याः।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोस्तु ते॥
मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः।
स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम्॥
मधुकैटभयोर्युद्धे त्रातासौ विष्णुरीश्वरीम्।
बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे।
यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः।
जघान त्रिपुरं स्तुत्वा तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
यदाज्ञया वाति वातः सूर्यस्तपति संततम्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निस्तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
यदाज्ञया हि कालश्च शश्वद् भ्रमति वेगतः।
मृत्युश्चरति जन्त्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
स्त्रष्टा सृजति सृष्टिं च पाता पाति यदाज्ञया।
संहर्ता संहरेत् काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्॥
ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम्।
यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम्॥
रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधं क्षमस्व मे।
शिशूनामपराधेन कुतो माता हि कुप्यति॥
इत्युत्तवा पर्शुरामश्च प्रणम्य तां रुरोद ह।
तुष्टा दुर्गा सम्भ्रमेण चाभयं च वरं ददौ॥
अमरो भव हे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज।
शर्वप्रसादात् सर्वत्र ज्योस्तु तव संततम्॥
सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टोस्तु संततं हरिः।
भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ॥
इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती।
तं हन्तु न हि शक्ताश्च रुष्टाश्च सर्वदेवताः॥
श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यो हि शंकरस्य च।
गुरुपत्नीं स्तौषि यस्मात् कस्त्वां हन्तुमिहेश्वरः॥
अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
अन्यदेवेषु ये भक्ता न भक्ता वा निरेन्कुशाः ॥
चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो।
तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः ॥
यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान् सुखी।
तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः॥
इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामं शुभाशिषम्।
जगामान्तःपुरं तूर्णं हरिशब्दो बभूव ह॥

॥फल-श्रुति॥

स्तोत्रम् वै काण्वशाखोक्तम् पूजाकाले च यः पठेत्।
यात्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद्ध्रुवम॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी कन्यकां लभेत्।
विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी चाप्नुयात् प्रजाम्॥
भ्रष्टराज्यो लभेद् राज्यं नष्टवित्तो धनं लभेत्॥
यस्य रुष्टो गुरुर्देवो राजा वा बान्धवोथवा।
तस्य तुष्टश्च वरदः स्तोत्रराजप्रसादतः॥
दस्युग्रस्तोहिग्रस्तश्च शत्रुग्रस्तो भयानकः।
व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः॥
राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने।
जलराशौ निमगन्श्च मुक्त स्तत्स्मृतिमात्रतः॥
स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदे च दारुणे।
स्तोत्रस्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेद् ध्रुवम॥
कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं श्रृणोति या।
भक्तया दुर्गां च सम्पूज्य महावन्ध्या प्रसूयते॥
लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम्।
असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाल्लभेत् ॥
नवमासं काकवन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः।
स्तोत्रराजं या श्रृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥
कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं श्रृणोति या।
घटे सम्पूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम्॥

भावार्थः

परशुराम ने कहाः पोराणिक काल की बात हैं; गौ-लोक में जब सभी तरह से श्रीकृष्ण सृष्टिरचना के लिए तैयार हुए, उस समय उनके शरीर से आपका प्राकटय हुआ था। आपकी कान्ति करोडों सूर्यो के समान थी। आप वस्त्र और अलंकारों से विभूषित थीं। आपके शरीर पर अग्नि में तपाकर शुद्ध की हुई साड़ी का परिधान था। नव तरुण अवस्था थी। ललाट पर सिंदूर का टिका शोभित हो रहा था। मालती के फूलो की मालाओं से मण्डित गुँथी हुई सुन्दर केश थे। बडा ही मनोहर रूप था। मुख पर मन्द मुस्कान थी। अहो ! आपकी मूर्ति बडी सुन्दर थी, उसका वर्णन करना कठिन हैं। आप मुमुक्षुओं को मोक्ष प्रदान करने वाली तथा स्वयं महाविष्णु की विधि हो।

बाले ! आप सबको मोहित कर लेने वाली हो। आपको देखकर श्रीकृष्ण उसी क्षण मोहित हो गये। तब आप उनसे सम्भावित होकर सहसा मुस्कराती हुई भाग चलीं। इसी कारण सत्पुरुष आपको मूलप्रकृति ईश्वरी राधा कहते हैं। उस समय सहसा श्रीकृष्ण ने आपको बुलाकर वीर्य का आधान किया। उससे एक महान् डिम्ब उत्पन्न

हुआ। उस डिम्ब से महाविराट् की उत्पत्ति हुई, जिसके रोमकूपों में समस्त ब्रह्माण्ड स्थित हैं। फिर राधा के श्रृंगार क्रम से आपका निःश्वास प्रकट हुआ। वह निःश्वास महावायु हुआ और वही विश्व को धारण करने वाला विराट् कहलाया। आपके पसीने से विश्वगोलक पिघल गया। तब विश्व का निवासस्थान वह विराट् जल की राशि हो गया। तब आपने अपने को पाँच भागों में विभक्त करके पाँच मूर्ति धारण कर ली। उनमें परमात्मा श्रीकृष्ण की जो प्राणाधिष्ठात्री मूर्ति हैं, उसे भविष्यवेत्ता लोग कृष्णप्राणाधिका राधा कहते हैं। जो मूर्ति वेद-शास्त्रों की जननी तथा वेदाधिष्ठात्री हैं, उस शुद्धरूपा मूर्ति को मनीषीगण सावित्री नाम से पुकारते हैं। जो शान्ति तथा शान्तरूपिणी ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री मूर्ति हैं, उस सत्त्वस्वरूपिणी शुद्ध मुर्ति को संत लोग लक्ष्मी नाम से अभिहित करते हैं। अहो ! जो राग की अधिष्ठात्री देवी तथा सत्पुरुषों को पैदा करने वाली हैं, जिसकी मूर्ति शुक्ल वर्ण की हैं, उस शास्त्र की ज्ञाता मूर्ति को शास्त्रज्ञ सरस्वती कहते हैं। जो मूर्ति बुद्धि, विद्या, समस्त शक्ति की अधिदेवता, सम्पूर्ण मंगलों की मंगलस्थान, सर्वमंगलरूपिणी और सम्पूर्ण मंगलों की कारण हैं, वही आप इस समय शिव के भवन में विराजमान हो।

आप ही शिव के समीप शिवा अर्थात पार्वती, नारायण के निकट लक्ष्मी और ब्रह्मा की प्रिया वेदजननी सावित्री और सरस्वती हो। जो पूरिपूर्णतम एवं परमानन्दस्वरूप हैं, उन रासेश्वर श्रीकृष्ण की आप परमानन्दरूपिणी राधा हो। देवान्गनाएँ भी आपके कलांश की अंशकला से प्रादुर्भूत हुई हैं। सारी नारियाँ आपकी विद्यास्वरूपा हैं और आप सबकी कारणरूपा हो। अम्बिके ! सूर्य की पत्नी छाया, चन्द्रमा की भार्या सर्वमोहिनी रोहिणी, इन्द्र की पत्नी शची, कामदेव की पत्नी ऐश्वर्यशालिनी रति, वरुण की पत्नी वरुणानी, वायु की प्राणप्रिया स्त्री, अग्नि की प्रिया स्वाहा, कुबेर की सुन्दरी भार्या, यम की पत्नी सुशीला, नैर्ऋत की जाया कैटभी, ईशान की पत्नी शशिकला, मनु की प्रिया शतरूपा, कर्दम की भार्या देवहूति, वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती, देवमाता अदिति, अगस्त्य मुनि की प्रिया लोपामुद्रा, गौतम की पत्नी अहिल्या, सबकी आधाररूपा वसुन्धरा, गंगा, तुलसी तथा भूतल की सारी श्रेष्ठ सरिताएँ-ये सभी तथा इनके अतिरिक्ति जो अन्य स्त्रियाँ हैं, वे सभी आपकी कला से उत्पन्न हुई हैं। आप मनुष्यों के घर में गृहलक्ष्मी, राजाओं के भवनों में राजलक्ष्मी, तपस्वियों की तपस्या और ब्राह्मणों की गायत्री हो। आप सत्पुरुषों के लिए सत्त्वस्वरूप और दुष्टों के लिये कलह की अन्कुर हो। निर्गुण की ज्योति और सगुण की शक्ति आप ही हो।

आप सूर्य में प्रभा, अगिन् में दाहिका शक्ति, जल में शीतलता और चन्द्रमा में शोभा हो। भूमि में गन्ध और आकाश में शब्द आपका ही रूप हैं। आप भूख-प्यास आदि तथा प्राणियों की समस्त शक्ति हो। संसार में सबकी उत्पत्ति की कारण, साररूपा, स्मृति, मेधा, बुद्धि अथवा विद्वानों की ज्ञानशक्ति आप ही हो। श्रीकृष्ण ने शिवजी को कृपापूर्वक सम्पूर्ण ज्ञान की प्रसविनी जो शुभ विद्या प्रदान की थी, वह आप ही हो; उसी से शिवजी मृत्युज्जय हुए हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सृष्टि, पालन और संहार करने वाली जो त्रिविध शक्तियाँ हैं, उनके रूप में आप ही विद्यमान हो; अतः आपको नमस्कार हैं।

जब मधु कैटभ के भय से डरकर ब्रह्मा काँप उठे थे, उस समय जिनकी स्तुति करके वे भयमुक्त हुए थे; उस देवी को मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मधु-कैटभ के युद्ध में जगत के रक्षक ये भगवान विष्णु जिन परमेश्वरी का स्तवन करके शक्तिमान हुए थे, उन दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूँ। त्रिपुर के महायुद्ध में रथसहित शिवजी के गिर जाने पर सभी देवताओं ने जिनकी स्तुति की थी; उस दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनका स्तवन करके वृषरूपधारी विष्णु द्वारा उठाये गये स्वयं शम्भु ने त्रिपुर का संहार किया था; उन दुर्गा को मैं अभिवादन करता हूँ। जिनकी आज्ञा से निरन्तर वायु बहती हैं, सूर्य तपते हैं, इन्द्र वर्षा करते हैं और अग्नि जलाती हैं; उन दुर्गा को मैं सिर झुकाता हूँ। जिनकी आज्ञा से काल सदा वेगपूर्वक चक्कर काटता रहता हैं और मृत्यु जीव-समुदाय में विचरती रहती हैं; उन दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनके आदेश से सृष्टिकर्ता सृष्टि की रचना करते हैं, पालनकर्ता रक्षा

करते हैं और संहर्ता समय आने पर संहार करते हैं; उन दुर्गा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनके बिना स्वयं भगवान श्रीकृष्ण, जो ज्योतिःस्वरूप एवं निर्गुण हैं, सृष्टि-रचना करने में समर्थ नहीं होते; उन देवी को मेरा नमस्कार हैं। जगज्जननी, रक्षा करो, रक्षा करो; मेरे अपराध को क्षमा कर दो । भला, कहीं बच्चे के अपराध करने से माता कुपित होती हैं।

इतना कहकर परशुराम उन्हें प्रणाम करके रोने लगे। तब दुर्गा प्रसन्न हो गयीं और शीघ्र ही उन्हें अभय का वरदान देती हुई बोलीं- हे वत्स ! तुम अमर हो जाओ। बेटा ! अब शान्ति धारण करो। शिवजी की कृपा से सदा सर्वत्र तुम्हारी विजय हो। सर्वान्तरात्मा भगवान् श्रीहरि सदा तुमपर प्रसन्न रहें। श्रीकृष्ण में तथा कल्याणदाता गुरुदेव शिव में तुम्हारी सुदृढ भक्ति बनी रहे; क्योंकि जिसकी इष्टदेव तथा गुरु में शाश्वती भक्ति होती हैं, उस पर यदि सभी देवता कुपित हो जायँ तो भी उसे मार नहीं सकते। तुम तो श्रीकृष्ण के भक्त और शंकर के शिष्य हो तथा मुझ गुरुपत्नी की स्तुति कर रहे हो; इसलिए किसकी शक्ति हैं जो तुम्हें मार सके। अहो ! जो अन्यान्य देवताओं के भक्त हैं अथवा उनकी भक्ति न करके निरंकुश ही हैं, परंतु श्रीकृष्ण के भक्त हैं तो उनका कहीं भी अमंगल नहीं होता।

भार्गव ! भला, जिन भाग्यवानों पर बलवान् चन्द्रमा प्रसन्न हैं तो दुर्बल तारागण रुष्ट होकर उनका क्या बिगाड सकते हैं। सभा में महान आत्मबल से सम्पन्न सुखी नरेश जिसपर संतुष्ट हैं, उसका दुर्बल भृत्यवर्ग कुपित होकर क्या कर लेगा? यों कहकर पार्वती हर्षित हो परशुराम को शुभ आशीर्वाद देकर अन्तःपुर में चली गयीं । तब तुरंत हरि नाम का घोष गूँज उठा ।

फलश्रुति: जो मनुष्य इस काण्वशाखोक्त स्तोत्र का पूजा के समय, यात्रा के अवसर पर अथवा प्रातःकाल पाठ करता हैं, वह अवश्य ही अपनी अभीष्ट वस्तु प्राप्त कर लेता हैं। इसके पाठ से पुत्रार्थी को पुत्र, कन्यार्थी को कन्या, विद्यार्थी को विद्या, प्रजार्थी को प्रजा, राज्यभ्रष्ट को राज्य और धनहीन को धन की प्राप्ति होती हैं। जिसपर गुरु, देवता, राजा अथवा बन्धु-बान्धव क्रुद्ध हो गये हों, उसके लिये ये सभी इस स्तोत्रराज की कृपा से प्रसन्न होकर वरदाता हो जाते हैं। जिसे चोर-डाकुओं ने घेर लिया हो, साँप ने डस लिया हो, जो भयानक शत्रु के चंगुल में फँस गया हो अथवा व्याधिग्रस्त हो; वह इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से मुक्त हो जाता हैं। राजद्वार पर, श्मशान में, कारागार में और बन्धन में पडा हुआ तथा अगाध जलराशि में डूबता हुआ मनुष्य इस स्तोत्र के प्रभाव से मुक्त हो जाता हैं। स्वामिभेद, पुत्रभेद तथा भयंकर मित्रभेद के अवसर पर इस स्तोत्र के स्मरण मात्र से निश्चय ही अभीष्टार्थ की प्राप्ति होती हैं। जो स्त्री वर्षपर्यन्त भक्ति पूर्वक दुर्गा का भलीभाँति पूजन करके हविष्यान्न खाकर इस स्तोत्रराज को सुनती हैं, वह महावन्ध्या हो तो भी प्रसववाली हो जाती हैं। उसे ज्ञानी एवं चिरजीवी दिव्य पुत्र प्राप्त होता हैं। छः महीने तक इसका श्रवण करने से दुर्भगा सौभाग्यवती हो जाती हैं। जो काकवन्ध्या और मृतवत्सा नारी भक्ति पूर्वक नौ मास तक इस स्तोत्रराज को सुनती हैं, वह निश्चय ही पुत्र पाती हैं। जो कन्या की माता तो हैं परंतु पुत्र से हीन हैं, वह यदि पाँच महीने तक कलश पर दुर्गा की सम्यक् पूजा करके इस स्तोत्र को श्रवण करती हैं तो उसे अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

श्री दुर्गा कवचम् (रुद्रयामलोक्त)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

॥श्री भैरव उवाच॥
अधुना देवि वक्ष्येऽहम् कवचं मन्त्रगर्भकम्।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसञ्ज्ञकम्॥१॥
परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम्।
योगिप्रियं योगीगम्यं देवानामपि दुर्लभम्॥२॥
विना दानेन मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत्।
धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः॥३॥
भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंशी गजाननः॥४॥
सूर्यस्तमोपहश्चन्द्रो मन्त्रामृतनिधिस्तथा।
सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः॥५॥
बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात्।
मर्त्योऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः॥६॥
॥विनियोग॥
कवचस्यास्य देवशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता॥७॥
चक्रिबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरितीरिता।
ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम्॥८॥
ॐ दुँ नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम।
मं ठं गण्डौ च मे पातु देवेशि रक्तकुण्डला॥९॥
वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी।
लवणं पातु मे चोष्ठौ चामुण्डा चण्डघातिनी॥१०॥
भेकी बीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका।
ॐ ह्रीं श्री पातु मे कण्ठं नीलकण्ठांकवासिनी॥११॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी।
ॐ सौं क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी॥१२॥
सौं ऐं ह्रीं पातु मे हस्तौ वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा॥१३॥
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं पातु मे पार्श्वे हिमाचलनिवासिनी।
ॐ स्त्रीं हूँ ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी॥१४॥
ॐ क्रीं हूँ पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम॥१५॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं पातु शिश्नं देवी श्रीबगलामुखी।
ॐ ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता॥१६॥
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह् सौः पायादूरु मम मनोन्मनी।
ॐ जूं सः सौः पातु जानू जगदीश्वरपूजिता॥१७॥
ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुवासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी॥१८॥
ॐ ह्रीं दुँ पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ माँ वैष्णवी तथा॥१९॥
दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये मापराजिता॥२०॥
उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शांभवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा॥२१॥
प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका।
निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका॥२२॥
अग्नेरम्बा च मां पातु जलान्मां जगदम्बिका।
वायोर्मा पातु वाग्देवी वनाद् वनजलोचना॥२३॥
सिंहात् सिंहासना पातु सर्पात् सर्पान्तकासना।
रोगान्मां राजमातंगी भूताद् भूतेशवल्लभा॥२४॥
यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका।
भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा॥२५॥
सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा।
इतीदं कवचं गुह्यं दुर्गा सर्वस्वमुत्तमम्॥२६॥
॥फल-श्रुति॥
मन्त्रगर्भं महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम्।
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ॥२७॥
वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम्।
श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम्॥२८॥
महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम्।
अश्वमेधसहस्त्रस्य फलदं परमार्थदम्॥२९॥
अत्यन्तगोप्यं देवेशि कवचं मन्त्रसिद्धिदम्।
पठनात् सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे॥३०॥
रवौ भूर्जे लिखेद् श्रीमान् कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये।
श्रीचक्राग्रेऽष्टगन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये॥३१॥
लिखित्वा धारयेद् बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम्।

किं किं साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात्॥३२॥
गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी धारयेत्कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले॥३३॥
तामेव धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके।
श्वेतसूत्रेण संवेष्टय लाक्षया परिवेष्टयेत्॥३४॥
सुवर्णेनाथ संवेष्टय धारयेद् रक्तरज्जुना।
गुटिका कामदा देवि देवनामपि दुर्लभा॥३५॥
कवचस्यास्य गुटिकां धत्वा मुक्तिप्रदायिनीम्।
कवचस्यास्य देवेशि वर्णितुं नैव शक्यते॥३६॥
महिमानं महादेवि जिहवाकोटिशतैरपि।
अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भ रहस्यकम्॥३७॥
अवक्तव्यं महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम्।
अदीक्षिताय नो दद्यात् कुचैलाय दुरात्मने॥३८॥
अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम्।
दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च॥३९॥
शान्ताय कुलसक्ताय शान्ताय कुलकामिने ।
इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः॥४॥
इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम्।
गुहयं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥४१॥
॥इति रुद्रयामल तन्त्रे, श्रीदेवीरहस्ये दुर्गाकवचं॥

श्री मार्कण्डेय कृत लघु दुर्गा सप्तशती स्तोत्रम्

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ॐ वींवींवीं वेणुहस्ते स्तुतिविधवटुके हां तथा तानमाता, स्वानंदेमंदरुपे अविहतनिरुते भक्तिदे मुक्तिदे त्वम्। हंसः सोहं विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे, ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोके कष कष विपुले वीरभद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ ह्रीं-कारं चोच्चरंती ममहरतु भयं चर्ममुंडे प्रचंडे, खांखांखां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररुपे स्वरुपे। हुंहुंहुं-कार-नादे गगन-भुवि तथा व्यापिनी व्योमरुपे, हंहंहं-कारनादे सुरगणनमिते राक्षसानां निहंत्रि॥२॥

ऐं लोके कीर्तयंती मम हरतु भयं चंडरुपे नमस्ते, घ्रां घ्रां घ्रां घोररुपे घघघघघटिते घर्घरे घोररावे। निर्मांसे काकजंघे घसित-नख-नखा-धूम्र-नेत्रे त्रिनेत्रे, हस्ताब्जे शूलमुंडे कलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते॥३॥

क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले, मानुरागे मुद्रासंज्ञत्रिरेखां कुरु कुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये। तेजोंगे सिद्धिनाथे मनुपवनचले नैव आज्ञा निधाने, ऐंकारे रात्रिमध्ये शयितपशुजने तंत्रकांते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मरुपेण चक्रे, त्रिःशक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्णवर्णे। ह्रीं-स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तुपत्रे स्वच्छंदं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यमुंडे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुंडे घघघघघघघे घर्घरान्यांघ्रिघोषे, ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं च चक्र र र र र रमिते सर्वबोधप्रधाने। द्रीं तीर्थे द्रीं तज्ज्येष्ठ जुगजुगजजुगे म्लेच्छदे कालमुंडे, सर्वांगे रक्तघोरामथनकरवरे वज्रदंडे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहिमुंडे, वज्रांगे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातंगरुढे। सूतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले, कुंडल्याकाररुपे वृषवृषभहरे ऐंद्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुंहुंहुंकारनादे कषकषवसिनी मांसि वैतालहस्ते, सुंसिद्धर्षैः सुसिद्धिर्ढढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचंडी। जूं सः सौं शांतिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रे, देवि त्वं साधकानां भवभयहरणे भद्रकाली नमस्ते॥८॥

ॐ देवि त्वं तुर्यहस्ते करधृतपरिघे त्वं वराहस्वरुपे, त्वं चेंद्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पुराणी महेंद्री। ऐं ह्रीं ह्रीं कारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे, पाताले शैलभृंगे हरिहरभुवने सिद्धिचंडी नमस्ते॥९॥

हंसि त्वं शौंडदुःखं शमितभवभये सर्वविघ्नांतकार्ये, गांगींगूंगैंषडंगे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये। क्रूं क्रूं मुद्रागजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले, ॐ ह्रीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते॥१०॥

॥इति मार्कण्डेय कृत लघु सप्तशती दुर्गा स्तोत्रम्॥

नव दुर्गा स्तुति

अमर पति मुकुट चुम्बित चरणाम्बुज सकल भुवन सुख जननी।
जयति जगदीश वन्दिता सकलामल निष्कला दुर्गा॥१॥
विकृत नखदशन भूषण रुधिर वसाच्क्षुरित खड्ग कृत हस्ता।
जयति नर मुण्ड मण्डित पिशित सुरासव रता चण्डी॥२॥
प्रज्वलित शिखि गणोज्ज्वल विकट जटा बद्ध चन्द्र मणि शोभा।
जयति दिगम्बर भूषा सिद्ध वटेशा महा लक्ष्मीः॥३॥
कर कमल जनित शोभा पद्मासन बद्ध वदना च।
जयति कमण्डलु हस्ता नन्दा देवी नतार्ति हरा॥४॥
दिग् वसना विकृत मुखा फेतकारोद्दाम पूरित दिगौघा।
जयति विकराल देहा क्षेम करी रौद्र भावस्था॥५॥
क्षोभित ब्रह्माण्डोदर स्व मुख स्वर हुं कृत निनादा।
जयति मही महिता सा शिव दूत्याख्या प्रथम शक्तिः॥६॥
मुक्ताट्टहास भैरव दुस्सह रव चकित सकल दिक् चक्रा।
जयति भुजगेन्द्र बन्धन शोभित कर्णा महा रुण्डा॥७॥
पटु पटह मुरज मर्दल झल्लरि काराव नर्तितावयवा।
जयति मधु वृत रुपा दैन्य हरी भ्रामरी देवी॥८॥
शान्ता प्रशान्त वदना सिंह रथा ध्यान योग सन्निष्ठा।
जयति चतुर्भुज देहा चन्द्र कला चन्द्र मंगला देवी॥९॥
पक्ष पुट चञ्चु घातैः सञ्चूर्णित विवुध शत्रु संघाता।
जयति शित शूल हस्ता बहु रुपा रेवती रौद्रा॥१०॥
पर्यटति शक्ति हस्ता पितृ वन निलयेषु योगिनी सहिता।
जयति हर सिद्धि नाम्नो हरि सिद्धि वन्दिता सिद्धैः॥११॥

नवदुर्गा रक्षामंत्र

ॐ शैलपुत्री मैया रक्षा करो।
ॐ जगजननि देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ ब्रह्मचारिणी मैया रक्षा करो।
ॐ भवतारिणी देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ चंद्रघणटा चंडी रक्षा करो।
ॐ भयहारिणी मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कुषमाणडा तुम ही रक्षा करो।
ॐ शक्तिरूपा मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ स्कन्दमाता माता मैया रक्षा करो।
ॐ जगदम्बा जननि रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कात्यायिनी मैया रक्षा करो।
ॐ पापनाशिनी अंबे रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ कालरात्रि काली रक्षा करो।
ॐ सुखदाती मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ महागौरी मैया रक्षा करो।
ॐ भक्तिदाती रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

ॐ सिद्धिरात्रि मैया रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा देवी रक्षा करो।
ॐ नव दुर्गा नमः।
ॐ जगजननी नमः।

देव्पराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा:।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्व चिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव: सन्ति सरला:
परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुत:।
मदीयोऽयं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्व चिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्व चिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरित चिरं कोटिकनकै:।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जन: को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपति:।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन:।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपत: ॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारै:
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभि:।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्न: स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथा:
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥११॥

मत्सम: पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु॥१२॥

भावार्थ:- हे माँ!, मैं न मंत्र जानता हूँ और न ही यंत्र, मुझे तो आपकी स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। ना आवाहन का पता है, न ही ध्यान का। आपकी स्तुति और कथा की भी जानकारी मुझे नहीं है। मैं ना तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न ही मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है। परंतु, एक बात जानता हूँ कि केवल तुम्हारा अनुसरण करने से ही मेरी सारी विपत्ति और क्लेशों को हर लेने वाला है॥१॥

सबका उद्धार करनेवाली कल्याणमयी माता! मैं आपकी पूजा की विधि नहीं जानता। मेरे पास धन का भी अभाव है। मैं स्वभाव से ही आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजा का सम्पादन हो भी नहीं सकता। इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में मुझसे जो भी त्रुटि रह गयी हो, उसे क्षमा करना, क्योंकि इस संसार में पुत्र कुपुत्र हो सकता है, किंतु माता कभी कुमाता नहीं होती॥२॥

माँ इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत से हैं, किंतु उन सबमें मैं ही तुम्हारा बालक हूँ, जो अत्यंत चपल है। मेरे जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिए कदापि उचित नहीं है क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना तो सम्भव है परंतु माता कभी कुमाता नहीं होती॥३॥

हे जगदम्बा मातः, मैंने कभी तुम्हारे चरणों की सेवा नहीं की है। देवि! तुम्हें अधिक धन भी अर्पण नहीं किया है। तथापि मुझ जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो। इसका यहीं कारण है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है, किंतु माता कभी कुमाता नहीं होती॥४॥

गणेश जी को जन्म देने वाली माता पार्वती! एवं अन्य देवताओं की आराधना करते समय मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पडता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड दिया है, अब उनकी सेवा पूजा मुझसे नहीं हो पाती; अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्बरहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा॥५॥

माता अपर्णा तुम्हारे मंत्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाय तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करनेवाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय होकर विहार करता रहता है। अगर मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं, उनके जप से प्राप्त होनेवाला फल कैसा होगा। इसको कौन मनुष्य जान सकता है॥६॥

हे भवानी! जो अपने अङ्गों में चिता की राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तक पर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकि को हार के रूप में धाराण् करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र जगदीश की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है? यह महत्व उन्हें कैसे मिला।; यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है॥ तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्व बढ गया॥७॥

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा; अत: तुमसे मेरी यहीं याचना है कि मेरा जन्म मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव, भवानी- इन नामों का जप करते हुए बीते॥८॥

माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन सामग्रियों से कभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन सा अपराध नहीं किया है! फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किञ्चित् कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारी जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है॥९॥

माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ, पहले कभी नहीं करता रहा। इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीडित बालक माता का ही स्मरण करते हैं॥१०॥

जगदम्ब! मुझ पर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, पुत्र अपराध पर अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती॥११॥

महादेवि! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है। यह समझ कर तुम जैसा उचित समझो वैसा करो॥१२॥

गुप्त सप्तशती

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

संपूर्ण श्री दुर्गा सप्तशती के मंत्रो का पाठ करने से साधक को जो फल प्राप्त होता है, वैसा ही कल्याणकारी फल प्रदान करने वाला गुप्त सप्तशती के मंत्रो का पाठ हैं।

गुप्त सप्तशती में अधिकतर मंत्र बीजों के होने से यह साधकों के लिए अमोघ फल प्रदान करने में समर्थ हैं।

गुप्त सप्तशती के पाठ का क्रम इस प्रकार हैं।

प्रारम्भ में **कुन्जिका स्तोत्र** उसके बाद **गुप्त सप्तशती** उसके पश्चयात स्तवन का पाठ करे।

कुञ्जिका-स्तोत्र

पूर्व-पीठिका-ईश्वर उवाच:

श्रृणु देवि, प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका-मन्त्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेन चण्डीजापं शुभम् भवेत्॥१॥
न वर्म नार्गला-स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तम् नापि ध्यानम् च न न्यासम् च न चार्चनम्॥२॥
कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलं लभेत्।
अति गुह्यतमम् देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥
गोपनीयम् प्रयत्नेन स्व-योनि-वच्च पार्वति।
मारणम् मोहनम् वश्यम् स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ-मात्रेण संसिद्धिः कुञ्जिकामन्त्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मन्त्र

ॐ श्लैं दुँ क्लीं क्लौं जुं सः ज्वलयोज्ज्वल ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल प्रबल-प्रबल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

इति मन्त्र

इस कुञ्जिका मन्त्र का दस बार जप करना चाहिए। इसी प्रकार स्तव-पाठ के अन्त में पुनः इस मन्त्र का दस बार जप कर कुञ्जिका स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

कुञ्जिका स्तोत्र मूल-पाठ

नमस्ते रुद्र-रूपायै, नमस्ते मधु-मर्दिनि।
नमस्ते कैटभारी च, नमस्ते महिषासनि॥
नमस्ते शुम्भहंत्रेति, निशुम्भासुर-घातिनि।
जाग्रतं हि महा-देवि जप-सिद्धिं कुरुष्व मे॥
ऐं-कारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका॥
क्लीं-कारी कामरूपिण्यै बीजरूपा नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्ड-घाती च यैं-कारी वर-दायिनी॥
विच्चे नोऽभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणि॥
धां धीं धूं धूर्जटेर्पत्नी वां वीं वागेश्वरी तथा।
क्रां क्रीं श्रीं मे शुभं कुरु, ऐं ॐ ऐं रक्ष सर्वदा।।
ॐ ॐ ॐ-कार-रुपायै, ज्रां-ज्रां ज्रम्भाल-नादिनी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि, शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥
हूं हूं हूं-काररूपिण्यै ज्रं ज्रं ज्रम्भाल-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवानि ते नमो नमः॥7॥

मन्त्र:

अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराविर्भव, आविर्भव, हं सं लं क्षं मयि जाग्रय-जाग्रय, त्रोटय-त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा॥
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुञ्जिकायै नमो नमः॥
सां सीं सप्तशती-सिद्धिं, कुरुष्व जप-मात्रतः॥
इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मंत्र-जाल-ग्रहां प्रिये।
अभक्ते च न दातव्यं, गोपयेत् सर्वदा श्रृणु॥
कुंजिका-विहितं देवि यस्तु सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिं, अरण्ये रुदनं यथा॥
॥इति श्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम्॥

गुप्त-सप्तशती

ॐ ब्रीं-ब्रीं-ब्रीं वेणु-हस्ते, स्तुत-सुर-बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्द-रुपे, अनहत-निरते, मुक्तिदे मुक्ति-मार्गे॥
हंसः सोहं विशाले, वलय-गति-हसे, सिद्ध-देवी समस्ता।
हीं-हीं-हीं सिद्ध-लोके, कच-रुचि-विपुले, वीर-भद्रे नमस्ते॥१॥

ॐ हींकारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्ड-मुण्डौ प्रचण्डे।
खां-खां-खां खड्ग-पाणे, ध्रक-ध्रक ध्रकिते, उग्र-रुपे स्वरुपे॥

हुँ-हुँ हुँकांर-नादे, गगन-भुवि-तले, व्यापिनी व्योम-रुपे।
हं-हं हंकार-नादे, सुर-गण-नमिते, चण्ड-रुपे नमस्ते॥२॥

ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां-घ्रां-घ्रां घोर-रुपे, घघ-घघ-घटिते, घर्घरे घोर-रावे॥
निर्मांसे काक-जंघे, घसित-नख-नखा, धूम्र-नेत्रे त्रि-नेत्रे।
हस्ताब्जे शूल-मुण्डे, कुल-कुल ककुले, सिद्ध-हस्ते नमस्ते॥३॥

ॐ क्रीं-क्रीं-क्रीं ऐं कुमारी, कुह-कुह-मखिले, कोकिलेनानुरागे।
मुद्रा-संज्ञ-त्रि-रेखा, कुरु-कुरु सततं, श्री महा-मारि गुह्ये॥
तेजांगे सिद्धि-नाथे, मन-पवन-चले, नैव आज्ञा-निधाने।
ऐंकारे रात्रि-मध्ये, स्वपित-पशु-जने, तत्र कान्ते नमस्ते॥४॥

ॐ व्रां-व्रीं-व्रूं व्रैं कवित्वे, दहन-पुर-गते रुक्मि-रुपेण चक्रे।
त्रिः-शक्तया, युक्त-वर्णादिक, कर-नमिते, दादिवं पूर्व-वर्णे॥
ह्रीं-स्थाने काम-राजे, ज्वल-ज्वल ज्वलिते, कोशिनि कोश-पत्रे।
स्वच्छन्दे कष्ट-नाशे, सुर-वर-वपुषे, गुह्य-मुण्डे नमस्ते॥५॥

ॐ घ्रां-घ्रीं-घ्रूं घोर-तुण्डे, घघ-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि-घोषे।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च-चक्रे, रर-रर-रमिते, सर्व-ज्ञाने प्रधाने॥
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग-जुग जजुगे म्लीं पदे काल-मुण्डे।
सर्वांगे रक्त-धारा-मथन-कर-वरे, वज्र-दण्डे नमस्ते॥६॥

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम-नमिते, गगन गड-गडे गुह्य-योनि-स्वरुपे।
वज्रांगे, वज्र-हस्ते, सुर-पति-वरदे, मत्त-मातंग-रुढे॥
स्वस्तेजे, शुद्ध-देहे, लल-लल-ललिते, छेदिते पाश-जाले।
किण्डल्याकार-रुपे, वृष वृषभ-ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते॥७॥

ॐ हुँ हुँ हुंकार-नादे, विषमवश-करे, यक्ष-वैताल-नाथे।
सु-सिद्धयर्थे सु-सिद्धैः, ठठ-ठठ-ठठठः, सर्व-भक्षे प्रचण्डे॥
जूं सः सौं शान्ति-कर्मेऽमृत-मृत-हरे, निःसमेसं समुद्रे।
देवि, त्वं साधकानां, भव-भव वरदे, भद्र-काली नमस्ते॥८॥

ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह-स्वरुपा।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री॥
ऐं ह्रीं क्लींकार-भूते, वितल-तल-तले, भू-तले स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे, हरि-हर-भुवने, सिद्ध-चण्डी नमस्ते॥९॥

हं लं क्षं शौण्डि-रुपे, शमित भव-भये, सर्व-विघ्नान्त-विघ्ने।
गां गीं गूं गैं षडंगे, गगन-गति-गते, सिद्धिदे सिद्ध-साध्ये॥
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति-वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज-मुख-जननी, त्वां महेशीं नमामि॥१०॥

स्तवन

या देवी खड्ग-हस्ता, सकल-जन-पदा, व्यापिनी विशऽव-दुर्गा।
श्यामांगी शुक्ल-पाशाब्दि जगण-गणिता, ब्रह्म-देहार्ध-वासा॥
ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर-विरहिता, ज्ञान-दिव्य-प्रबोधा।
सा देवी, दिव्य-मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥१॥

ॐ हां हीं हूं वर्म-युक्ते, शव-गमन-गतिर्भीषणे भीम-वक्त्रे।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध-मूर्तिर्विकृत-स्तन-मुखे, रौद्र-दंष्ट्रा-कराले॥
कं कं कंकाल-धारी भ्रमप्ति, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती-हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्र-रुपे, त्रिभुवन-नमिते, पाश-हस्ते त्रि-नेत्रे।
रां रीं रुं रंगे किले किलित रवा, शूल-हस्ते प्रचण्डे॥
लां लीं लूं लम्ब-जिह्वे हसति, कह-कहा शुद्ध-घोराट्ट-हासैः।
कंकाली काल-रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥३॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर-रुपे घघ-घघ-घटिते घर्घराराव घोरे।
निमाँसे शुष्क-जंघे पिबति नर-वसा धूम्र-धूम्रायमाने॥
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती, सकल-भुवि-तले, यक्ष-गन्धर्व-नागान्।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥४॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र-काली, हरि-हर-नमिते, रुद्र-मूर्ते विकर्णे।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि-मुकुट-शिरो वेष्ठितां केतु-मालाम्॥

स्त्रक्-सर्व-चोरगेन्द्रा शशि-करण-निभा तारकाः हार-कण्ठे।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥५॥
ॐ खं-खं-खं खड्ग-हस्ते, वर-कनक-निभे सूर्य-कान्ति-स्वतेजा।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव-निशित महा-कर्त्रिका दक्षिणेन॥
वामे हस्ते कपालं, वर-विमल-सुरा-पूरितं धारयन्ती।
सा देवी दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥६॥

ॐ हुँ हुँ फट् काल-रात्रीं पुर-सुर-मथनीं धूम्र-मारी कुमारी।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल-किला शब्द अट्टाट्टहासे॥
हा-हा भूत-प्रभूते, किल-किलित-मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन-सहिता चण्डि चामुण्डा-नित्ये।
रं-रं रंकार-शब्दे शशि-कर-धवले काल-कूटे दुरन्ते॥
हुँ हुँ हुंकार-कारि सुर-गण-नमिते, काल-कारी विकारी।
त्र्यैलोक्यं वश्य-कारी, प्रदहतु दुरितं चण्ड-मुण्डे प्रचण्डे॥८॥

वन्दे दण्ड-प्रचण्डा डमरु-डिमि-डिमा, घण्ट टंकार-नादे।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ-थइ विभवैर्निर्मला मन्त्र-माला॥
रुक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर-खरिता रवा चार्चिनि प्रेत-माला।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म-मुण्डा प्रचण्डे॥९॥

ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि-गमना त्वं च देवी कुमारी।
त्वं चक्री चक्र-हासा घुर-घुरित रवा, त्वं वराह-स्वरुपा॥
रौद्रे त्वं चर्म-मुण्डा सकल-भुवि-तले संस्थिते स्वर्ग-मार्गे।
पाताले शैल-श्रृंगे हरि-हर-नमिते देवि चण्डी नमस्ते॥१०॥

रक्ष त्वं मुण्ड-धारी गिरि-गुह-विवरे निर्झरे पर्वते वा।
संग्रामे शत्रु-मध्ये विश विषम-विषे संकटे कुत्सिते वा॥
व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि-भुवि-तले वह्नि-मध्ये च दुर्गे।
रक्षेत् सा दिव्य-मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड-चण्डे प्रचण्डे॥११॥

इत्येवं बीज-मन्त्रैः स्तवनमति-शिवं पातक-व्याधि-नाशनम्।
प्रत्यक्षं दिव्य-रुपं ग्रह-गण-मथनं मर्दनं शाकिनीनाम्॥
इत्येवं वेद-वेद्यं सकल-भय-हरं मन्त्र-शक्तिश्च नित्यम्।
मंत्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र-सिद्धिम्॥१२॥

चं-चं-चं चन्द्र-हासा चचम चम-चमा चातुरी चित्त-केशी।
यं-यं-यं योग-माया जननि जग-हिता योगिनी योग-रुपा॥
डं-डं-डं डाकिनीनां डमरुक-सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा।
रं-रं-रं रक्त-वस्त्रा सरसिज-नयना पातु मां देवि दुर्गा॥१३॥

माँ दुर्गा के चमत्कारी मन्त्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

ब्रह्माजी ने मनुष्यों कि रक्षा हेतु मार्कण्डेय पुराण में कुछ परमगोपनीय साधन-कल्याणकारी देवी कवच एवं परम पवित्र उपायो का उल्लेख किया हैं, जिस्से साधारण से साधारण व्यक्ति जिसे माँ दुर्गा पूजा अर्चना के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं होने पर भी विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

माँ दुर्गा के इन मंत्रो का जाप प्रति दिन भी कर सकते हैं। पर नवरात्र में जाप करने से शीघ्र प्रभाव देखा गया हैं।

सर्व प्रकार कि बाधा मुक्ति हेतु:

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

अर्थातः- मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा- इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

किसी भी प्रकार के संकट या बाधा कि आशंका होने पर इस मंत्र का प्रयोग करें। उक्त मंत्र का श्रद्धा से जाप करने से व्यक्ति सभी प्रकार की बाधा से मुक्त होकर धन-धान्य एवं पुत्र की प्राप्ति होती हैं।

बाधा शान्ति हेतु:

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥

अर्थातः- सर्वेश्वरि! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

विपत्ति नाश हेतु:

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थातः- शरण में आये हुए दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीडा दूर करनेवाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।

पाप नाश हेतु:

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव॥

अर्थातः- देवि! जो अपनी ध्वनि से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके दैत्यों के तेज नष्ट किये देता है, वह तुम्हारा घण्टा हमलोगों की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मो से रक्षा करती है।

विपत्तिनाश और शुभ की प्राप्ति हेतु:

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

अर्थातः- वह कल्याण की साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मङ्गल करे तथा सारी आपत्तियों का नाश कर डाले।

भय नाश हेतु:

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्याहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥

अर्थातः- सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्ति यों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि! सब भयों से हमारी रक्षा करो; तुम्हें नमस्कार है। कात्यायनी! यह तीन लोचनों से विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे। तुम्हें नमस्कार है। भद्रकाली! ज्वालाओं के कारण विकराल प्रतीत होनेवाला, अत्यन्त भयंकर और समस्त असुरों का संहार करनेवाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमें बचाये। तुम्हें नमस्कार है।

सर्व प्रकार के कल्याण हेतु:

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थातः- नारायणी! आप सब प्रकार का मङ्गल प्रदान करनेवाली मङ्गलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थो को सिद्ध करनेवाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो। आपको नमस्कार हैं।

व्यक्ति दु:ख, दरिद्रता और भय से परेशान हो चाहकर भी या परीश्रम के उपरांत भी सफलता प्राप्त नहीं होरही हों तो उपरोक्त मंत्र का प्रयोग करें।

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति हेतु:

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥

अर्थातः- मन की इच्छा के अनुसार चलनेवाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसारसागर से तारनेवाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो।

शक्ति प्राप्ति हेतु:

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थातः- तुम सृष्टि, पालन और संहार करने वाली शक्ति भूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

रक्षा प्राप्ति हेतु:

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन न: पाहि चापज्यानि:स्वनेन च॥

अर्थातः- देवि! आप शूल से हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हमलोगों की रक्षा करें।

देह को सुरक्षित रखने हेतु एवं उसे किसी भी प्रकार कि चोट या हानी या किसी भी प्रकार के अस्त्र-सस्त्र से सुरक्षित रखने हेतु इस मंत्र का श्रद्वा से नियम पूर्वक जाप करें।

विद्या प्राप्ति एवं मातृभाव हेतु:

विद्या: समस्तास्तव देवि भेदा: स्त्रिय: समस्ता: सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुति: स्तव्यपरा परोक्ति:॥

अर्थातः- देवि! विश्वकि सम्पूर्ण विद्याएँ तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। जगत् में जितनी स्त्रियाँ हैं, वे सब तुम्हारी ही मूर्तियाँ हैं। जगदम्ब! एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? तुम तो स्तवन करने योग्य पदार्थो से परे हो।

समस्त प्रकार कि विद्याओं की प्राप्ति हेतु और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति के लिये इस मंत्रका पाठ करें।

प्रसन्नता की प्राप्ति हेतु:

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीडये लोकानां वरदा भव॥

अर्थातः- विश्व की पीडा दूर करनेवाली देवि! हम तुम्हारे चरणों पर पडे हुए हैं, हमपर प्रसन्न होओ। त्रिलोकनिवासियों की पूजनीय परमेश्वरि! सब लोगों को वरदान दो।

आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति हेतु:

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

अर्थातः- मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि मेरे शत्रुओं का नाश करो।

महामारी नाश हेतु:

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

अर्थातः- जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा- इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें मेरा नमस्कार हो।

रोग नाश हेतु:

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

अर्थातः- देवि! तुमहारे प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवाछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरणमें गये हुए मनुष्य दूसरोंको शरण देनेवाले हो जाते हैं।

विश्व की रक्षा हेतु:

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

अर्थातः- जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों के हृदय में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जारूप से निवास करती हैं, उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं। देवि! आप सम्पूर्ण विश्व का पालन कीजिये।

विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश हेतु:

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

अर्थातः- शरणागत की पीडा दूर करनेवाली देवि! हमपर प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण जगत् की माता! प्रसन्न होओ। विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। देवि! तुम्हीं चराचर जगत् की अधीश्वरी हो।

विश्व के पाप-ताप निवारण हेतु:

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः। पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्॥

अर्थातः- देवि! प्रसन्न होओ। जैसे इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हमारी रक्षा की है, उसी प्रकार सदा हमें शत्रुओं के भय से बचाओ। सम्पूर्ण जगत् का पाप नष्ट कर दो और उत्पात एवं पापों के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाले महामारी आदि बडे-बडे उपद्रवों को शीघ्र दूर करो।

विश्व के अशुभ तथा भय का विनाश करने हेतु:

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तु मलं बलं च। सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥

अर्थातः- जिनके अनुपम प्रभाव और बल का वर्णन करने में भगवान् शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका सम्पूर्ण जगत् का पालन एवं अशुभ भय का नाश करने का विचार करें।

सामूहिक कल्याण हेतु:

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्ति समूहमूर्त्या। तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥

अर्थातः- सम्पूर्ण देवताओं की शक्ति का समुदाय ही जिनका स्वरूप है तथा जिन देवी ने अपनी शक्ति से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियों की पूजनीया उन जगदम्बा को हम भक्ति पूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हमलोगों का कल्याण करें।

कैसे करें मंत्र जाप :-

नवरात्रि के प्रतिपदा के दिन संकल्प लेकर प्रातःकाल स्नान करके पूर्व या उत्तर दिशा कि और मुख करके दुर्गा कि मूर्ति या चित्र की पंचोपचार या दक्षोपचार या षोड्षोपचार से पूजा करें।

शुद्ध-पवित्र आसन ग्रहण कर रुद्राक्ष, स्फटिक, तुलसी या चंदन कि माला से मंत्र का जाप 1, 5, 7, 11 माला जाप पूर्ण कर अपने कार्य उद्देश्य कि पूर्ति हेतु मां से प्राथना करें। संपूर्ण नवरात्रि में जाप करने से मनोवांच्छित कामना अवश्य पूरी होती हैं।

उपरोक्त मंत्र के विधि-विधान के अनुसार जाप करने से मां कि कृपा से व्यक्ति को पाप और कष्टों से छुटकारा मिलता हैं और मोक्ष प्राप्ति का मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सुगम प्रतित होता हैं।

***

जब देवी दुर्गा ने महिसाहसुर का वध किया

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

दशहरा पर्व से जुड़ी शास्त्रोक्त कथा के अनुसार देवी दुर्गा ने महिसाहसुर का वध किया था।

मान्यता हैं की महिसासुर नामक असुरन ने कठोर तप-ध्यान से देवताओं को प्रसन्न कर लिया और उनसे अजय होने का वरदान प्राप्त कर लिया की कोई भी देव या दानव उसपर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। वरदान प्राप्त होते हि महिसासुर स्वर्ग लोक के देवताओं को परेशान करने लगा और पृथ्वी पर भी उत्पात मचाने लगा। महिसासुर एक बार स्वर्ग पर अचानक आक्रमण कर दिया और इंद्र को परास्त कर स्वर्ग लोक पर विजय प्राप्त करली, तथा स्वर्ग लोक से सभी देवताओं को खदेड़ दिया। देवगण नें परेशान होकर ब्रम्हा, विष्णु और महेश से सहायता के लिए प्राथना की। तब सारे देवताओं ने मिलकर फिर से महिसासुर को परास्त करने के लिए युद्ध किया परंतु देवता फिर हार गये। कोई उपाय न पाक देवताओं ने उसके विनाश के लिए देवी दुर्गा की रचना की। ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के सृजन में सारे देवताओं का एक समान योगदान था। महिसासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र-शस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे, जिस्से देवी दुर्गा शक्तिशाली बन गई। महिसासुर दुर्गा देवी कि सुन्दरता पर मोहित होकर उनसे विवाह करना चाहता था। देवी दुर्गा इस शर्त पर उससे विवाह करने को तैयार हुई कि यदि महिसासुर उन्हें द्वन्द्ध युद्ध में हरा देगा तो वह उससे विवाह कर लेगी। महिसासुर ने शर्त मानली और युद्ध के लिये तैयार होगाया। देवी दुर्गा ने महिषासुर पर आक्रमण कर उससे नौ दिनों तक युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध कर देवताओं को महिसासुर के भय से मुक्त कर दिया।

शास्त्र-पुराणों में उल्लेख हैं की देवी दुर्गा और महिसासुर का युद्ध नौ रातो तक चला था, तब से नौ दिनों तक यह नवरात्र का त्यौहार मनाने कि परंपरा चली आरही हैं और दसवें दिन को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है।

आद्यशक्ति का नाम दुर्गा केसे पड़ा?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रोक्त मतानुसार पुरातन काल में दुर्गम नामक दैत्य हुआ। उसने ब्रह्माजी को प्रसन्न कर सभी वेदों को अपने वश में कर लिया, जिससे देवताओं का बल क्षीण हो गया। जिस्से दुर्गम ने देवताओं को पराजित कर स्वर्ग पर कब्जा कर लिया। तब देवताओं को देवी भगवती का स्मरण कर शक्ति का आह्वान किया।

देवताओं के आह्वान पर देवी प्रकट हुईं। देवीने देवताओं से उन्हें बुलाने का कारण पूछा। तब देवताओं ने बताया कि दुर्गम नामक दैत्य ने वेदताओं पर विजय प्राप्त कर स्वर्ग लोक पर अपना अधिकार कर लिया है। फिर देवताओं ने दुर्गम से मुक्ति का अनुरोध किता। देवताओं की बात सुनकर देवी ने उन्हें दुर्गम का वध करने का आश्वासन दिया।

यह बात जब दैत्यों के राजा दुर्गम को पता चली तो उसने देवताओं पर पुन: आक्रमण कर दिया। तब देवी भगवती ने देवताओं की रक्षा की तथा दुर्गम की सेना का संहार कर दिया। सेना का संहार होते देख दुर्गम स्वयं देवी से युद्ध करने आया। तब देवी भगवती ने काली, तारा, छिन्नमस्ता, श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, बगला आदि कई सहायक शक्तियों का आह्वान कर उन्हें भी युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। भयंकर युद्ध में भगवती ने दुर्गम का वध कर दिया। मान्यता हैं की दुर्गम नामक दैत्य का वध करने के कारण भगवती का नाम दुर्गा के नाम से भी विख्यात हुआ!

पापांकुशा एकादशी व्रत 09-अक्टूबर-2019

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पापांकुशा एकादशी व्रत 09 अक्टूबर 2019

आश्विन : शुक्ल पक्ष

अर्जुन बोले - "हे भगवन् ! आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है ! तथा उसकी विधि क्या है ! और उसने कौन से फल की प्राप्ति होती है !, यह सब कृपा पूर्वक सविस्तार से कहिए।

श्री कृष्ण भगवान् बोले - "हे अर्जुन ! आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम पापांकुशा है। इसका व्रत करने से समस्त पाप नष्ट होते हैं और करने वाला अक्षय पुण्य का भागी होता है। इस एकादशी के दिन मनवांछित फल की प्राप्ति के लिए भगवान् विष्णु की पूजा करनी चाहिए। इस पूजन के द्वारा मनुष्य को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। हे अर्जुन ! जो मनुष्य कठिन तपस्याओं के द्वारा फल प्राप्ति करते हैं, वह फल इस एकादशी के दिन क्षीर-सागर में शेषनाग

पर शयन करने वाले विष्णु भगवान् को नमस्कार कर देने से मिल जाता है और मनुष्य को यम के दु:ख नहीं भोगने पड़ते।

हे अर्जुन ! हजार अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ का फल इस एकादशी के फल के सोलहवें हिस्से के बराबर भी नहीं होता है अर्थात् इस एकादशी व्रत के समान संसार में अन्य कोई व्रत नहीं है। इस एकादशी के समान विश्व में पवित्र तिथि नहीं है। जो मनुष्य एकादशी व्रत नहीं करते हैं, उन्हें पाप घेरे रहते हैं।

यदि कोई मनुष्य किसी कारणवश केवल इस एकादशी का उपवास भी करता है तो उसे यम के दर्शन नहीं होते।

इस एकादशी के व्रत से मनुष्य को स्वस्थ शरीर और सुन्दर स्त्री तथा धन-धान्य मिलता है और अन्त में वह स्वर्ग का अधिकारी हो जाता है। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत में रात्रि-जागरण करते हैं, उन्हें बिना किसी विघ्न के स्वर्ग मिलता है।

जो मनुष्य इस एकादसी का व्रत करते हैं, उनके मातृपक्ष के दस पुरुष, पितृपक्ष के दस पुरुष और स्त्री पक्ष के दस पुरुष, विष्णु का भेष धारण करके तथा सुन्दर आभूषणों से युक्त होकर विष्णु लोक को जाते हैं।

जो मनुष्य आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की पापांकुशा एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करते हैं, उन्हें हरिलोक मिलता है।

जो मनुष्य एकादशी के दिन भूमि, गौ, अन्न, जल, उपानह, वस्त्र, छत्र आदि का दान करते हैं, उन्हें यम के दर्शन नहीं करने पड़ते। दरिद्री मनुष्य को भी यथाशक्ति कुछ दान देकर

कुछ पुण्य अवश्य ही अर्जित करना चाहिए।

जो मनुष्य तालाब, बगीचा, धर्मशाला, प्याऊ, आदि बनवाते हैं, उन्हें नरक के दुःख नहीं भोगने पड़ते। वह मनुष्य इस लोक में नीरोगी, दीर्घायु वाले, पुत्र तथा धन-धान्य से पूर्ण होकर सुख भोगते हैं तथा अन्त में स्वर्ग लोक को जाते हैं। उन्हें दुर्गति नहीं भोगनी पड़ती।

इस एकादशी व्रत का नियम पालन दशमी तिथि की रात्रि से ही शुरू करना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का पालन करें। एकादशी के दिन सुबह नित्य कर्मों से निवृत्त होकर साफ वस्त्र पहनकर भगवान विष्णु की शेषशय्या पर विराजित प्रतिमा के सामने बैठकर व्रत का संकल्प लें। इस दिन यथा संभव उपवास करें। उपवास में अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए। संभव न हो तो व्रती एक समय फलाहार कर सकता है। इसके बाद भगवान 'पद्मनाभ' की पूजा विधि-विधान से करनी चाहिए। यदि व्रत करने वाला पूजन करने में असमर्थ हों तो पूजन किसी योग्य ब्राह्मण से भी करवाया जा सकता है।

व्रती को भगवान विष्णु को पंचामृत से स्नान कराना चाहिए। स्नान के पश्चयात उनके चरणामृत को व्रती अपने और परिवार के सभी सदस्यों के अंगों पर छिड़के और उस चरणामृत का पान करे।

इसके बाद भगवान को गंध, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य आदि पूजन सामग्री अर्पित करें। 'विष्णु सहस्त्रनाम' का जप एवं उनकी कथा सुनें। रात्रि को भगवान विष्णु की मूर्ति के समीप हो शयन करना चाहिए और दूसरे दिन यानी द्वादशी के दिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान देकर आशीर्वाद प्राप्त लेना चाहिए। इस प्रकार पापांकुशा एकादशी का व्रत करने से अनंत दिव्य फलों की प्राप्ति होती है।

***

शरद पूर्णिमा 13-अक्टूबर-2019

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिंदू पंचांग के अनुसार पूरे वर्ष में बारह पूर्णिमा आती हैं। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा अपने पूर्ण आकार में होता है। पूर्णिमा पर चंद्रमा का अतुल्य सौंदर्य देखते ही बनता है। विद्वानो के अनुसार पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पूर्ण आकार में होने के कारण वर्ष में आने वाली सभी पूर्णिमा पर्व के समान हैं। लेकिन इन सभी पूर्णिमा में आश्विन मास कि पूर्णिमा सबसे श्रेष्ठ मानी गई है। यह पूर्णिमा शरद ऋतु में आने के कारण इसे शरद पूर्णिमा भी कहते हैं। शरद ऋतु की इस पूर्णिमा को पूर्ण चंद्र का अश्विनी नक्षत्र से संयोग होता है। अश्विनी जो नक्षत्र क्रम में प्रथम नक्षत्र हैं, जिसके स्वामी अश्विनीकुमार है।

कथा के अनुशार च्यवन ऋषि को आरोग्य का पाठ और औषधि का ज्ञान अश्विनीकुमारों ने ही दिया था। यही ज्ञान आज हजारों वर्ष बाद भी हमारे पास अनमोल धरोहर के रूप में संचित है। अश्विनीकुमार आरोग्य के स्वामी हैं और पूर्ण चंद्रमा अमृत का स्रोत। यही कारण है कि ऐसा माना जाता है कि इस पूर्णिमा को ब्रह्मांड से अमृत की वर्षा होती है।

खीर का भोग

शरद पूर्णिमा की रात में गाय के दूध से बनी खीर को चंद्रमा कि चांदनी में रखकर उसे प्रसाद-स्वरूप ग्रहण किया जाता है। पूर्णिमा की चांदनी में 'अमृत' का अंश होता है, इस लिये मान्यता यह है कि ऐसा करने से चंद्रमा की अमृत की बूंदें भोजन में आ जाती हैं जिसका सेवन करने से सभी प्रकार की बीमारियां आदि दूर हो जाती हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी इसकी चांदनी के औषधीय महत्व का वर्णन मिलता है। रखकर दूध से बनी खीर को चांदनी के में असाध्य रोगों की दवाएं खिलाई जाती है।

शरद पूर्णिमा की कथा:

एक साहुकार के दो पुत्रियाँ थी। दोनो पुत्रियाँ शरद पुर्णिमा का व्रत रखती थी। परन्तु बडी पुत्री पूरा व्रत करती थी और छोटी पुत्री अधुरा व्रत करती थी। परिणाम यह हुआ कि छोटी पुत्री की सन्तान पैदा होते ही मर जाती थी। उसने पंडितो से इसका कारण पूछा तो उन्होने बताया की तुम पूर्णिमा का अधूरा व्रत करती थी जिसके कारण तुम्हारी सन्तान पैदा होते ही मर जाती हैं। पूर्णिमा का पुरा विधिपुर्वक करने से तुम्हारी सन्तान जीवित रह सकती हैं। उसने पंतिडतो कि सलाह पर पूर्णिमा का पूरा व्रत विधिपूर्वक किया। उसके लडका हुआ परन्तु शीघ्र ही मर गया । उसने लडके को लकडी के पट्टे पर लिटाकर ऊपर से कपडा ढक दिया। फिर बडी बहन को बुलाकर लाई और बैठने के लिए वही पट्टा दे दिया। बडी बहन जब पीढे पर बैठने लगी जो उसका घाघरा बच्चे का छू गया, बच्चा घाघरा छुते ही रोने लगा। बडी बहन बोली तुम मुझे कंलक लगाना चाहती थी। मेरे बैठने से यह मर जाता तब छोटी बहन बोली यह तो पहले से मरा हुआ था। तेरे ही भाग्य से यह पुनः जीवित हो गया हैं । तेरे पुण्य से ही यह अभी जीवित हुआ हैं। उसके बाद से शरद पुर्णिमा का पूरा व्रत करने का प्रचलन चल निकला।

शरद पूर्णिमा का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शरद पूर्णिमा ऋतु-परिवर्तन का विशेष प्रतीक माना जाता है। शरद पूर्णिमा के दिन से वर्षाऋतु की समाप्ति और शरद का प्रारंभ माना जाता है। हिन्दू संस्कृति में प्राचीनकाल से की सूर्य व चंद्रमा को देवता के रूप में पूजन किया जाता है। नौ ग्रहों में सूर्य एवं चंद्र को हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने उच्च स्थान दिया है। इन नौ ग्रहों में चंद्रमा को हमारे मन, शांति और शीतलता का प्रतीक माना गया है। इस कारण हैं की पुरातन काल से अबतक चंद्रमा पर अनेको साहित्य लिखे जाते रहे है। हजारों वर्ष पूर्व हमारें विद्वान ऋषि-मुनियों नें चंद्रमा का सूक्ष्म अध्ययन कर उसके हमारे जीवन पर पड़ने वाले विशेष प्रभावों को ज्ञात कर लिया था।

हिन्दू संस्कृति के अलावा विश्व के अन्य धर्मों की संस्कृति में भी चंद्रमा का विशेष महत्व माना गया हैं। हिन्दू में विभिन्न व्रत-पर्व मुख्यतः चंद्रमा पर ही आधारित हैं। विद्वानों के मतानुसार शरद पूर्णिमा की रात में चंद्रमा अपनी पूर्ण सोलह कलाओं से पूर्ण होता है।शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के बेहद नज़दीक होता है। शरद पूर्णिमा रात में साफ आकाश में चंद्रमा अपनी अमृतवर्षा करता है। एसी मान्यता हैं की चंद्रमा अमृतवर्षा से अनेकों बीमारियों का शमन होता हैं। विद्वानों के मतानुसार हैं की चंद्रमा की अमृतवर्षा से खाने-पीने की चिजों में विशेष गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। यही कारण हैं की हिन्दू संस्कृति में शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की रोशनी में रात्रि जागरण करने का, व चंद्रमा की चाँदनी में दूध से बनी खीर को रख कर उसे प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता रहा हैं। जैसे हमारे विद्वानों ने सदियों पहले यह ज्ञात कर लिया था की दूध अमृत हैं, ओर शरद पूर्णिमा की रात चंद्रमा की किरणों में भी अमृत होता हैं, चावल में भी एक विशेष प्रकार के गुण होते हैं। अतः चंद्रमां की किरणों, दूध ओर चावल इस तीनो के संयोजन से यह अमृत तत्व की वृद्धि होती हैं। अतः हमें इसका विशेष लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

कोजागरी पूर्णिमा 13-अक्टूबर-2019

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आश्विन मास की पूर्णिमा को 'कोजागर व्रत' रखा जाता हैं। इस लिये इस पूर्णिमा को कोजागरी पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस दिन व्यक्ति विधिपूर्वक स्नान करके व्रत-उपवास रखने का विधान हैं। इस दिन श्रद्धा भाव से ताँबे या मिट्टी के कलश पर वस्त्र से ढँकी हुई स्वर्णमयी लक्ष्मी की प्रतिमा को स्थापित किया जाता हैं। फिर लक्ष्मी जी कि भिन्न-भिन्न उपचारों से पूज-अर्चना करने का विधान हैं। सायंकाल में चन्द्रोदय होने पर सोने, चाँदी अथवा मिट्टी के घी से भरे हुए दीपक जलाने कि परंपरा हैं।

इस दिन घी मिश्रित खीर को पात्रों में डालकर उसे चन्द्रमा की चाँदनी में रखा जाता हैं। एक प्रहर (३ घंटे) खीर को चाँदनी में रखनेके बाद में उसे लक्ष्मीजी को सारी खीर अर्पण कि जाती हैं। तत्पश्चात भक्तिपूर्वक सात्विक ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएँ और उनके साथ ही मांगलिक गीत गाकर तथा मंगलमय कार्य करते हुए रात्रि जागरण किया जाता हैं। मान्यता हैं कि पूर्णिमा कि मध्यरात्रि में देवी महालक्ष्मी अपने हाथो में वर और अभय वरदान लिए भूलोक में विचरती हैं। इस दिन जो भक्तजन जाग रहा होता हैं उसे माता लक्ष्मी धन-संपत्ति प्रदान करती हैं।

करवा चौथ व्रत 17-अक्टूबर-2019

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक मास कि चतुर्थी के दिन विवाहित महिलाओं द्वारा करवा चौथ का व्रत किया जाता है। करवा का अर्थात मिट्टी के जल-पात्र कि पूजा कर चंद्रमा को अर्ध्य देने का महत्व हैं। इसीलिए यह व्रत करवा चौथ नाम से जाना जाता हैं। इस दिन पत्नी अपने पति की दीर्घायु के लिये मंगलकामना और स्वयं के अखंड सौभाग्य रहने कि कामना करती हैं। करवा चौथ के पूरे दिन पत्नी द्वारा उपवास रखा जाता हैं। इस दिन रात्रि को जब आकाश में चंद्रय उदय से पूर्व सोलह सृंगार कर चंद्र निकलने कि प्रतिक्षा करती हैं। व्रत का समापन चंद्रमा को अर्ध्य देने के साथ ही उसे छलनी से देखा जाता हैं, उसके बाद पति के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से महिलाएं अखंड सौभाग्यवती होती हैं, उसका पति दीर्घायु होता हैं।

यदि इस व्रत को पालन करने वाली पत्नी अपने पति के प्रति मर्यादा से, विनम्रता से, समर्पण के भाव से रहे और पति भी अपने समस्त कर्तव्य एवं धर्म का पालन सुचारु रुप से पालन करें, तो एसे दंपत्ति के जीवन में सभी सुख-समृद्धि से भरा जाता हैं।

कथा : एसी मान्यता हैं, कि भगवान श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को यह व्रत का महत्व बताया था। पांडवों के वनवास के दौरान अर्जुन तप करने के लिए इंद्रनील पर्वत पर चले गए। बहुत दिन बीत जाने के बाद भी जब अर्जुन नहीं लौटे तो द्रोपदी को चिंता होने लगी। जब श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को चिंतित देखा तो फौरन चिंता का कारण समझ गए। फिर भी श्रीकृष्ण ने द्रोपदी से कारण पूछा तो उसने यह चिंता का कारण श्रीकृष्ण के सामने प्रकट कर दिया। तब श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को करवाचौथ व्रत करने का विधान बताया। द्रोपदी ने श्रीकृष्ण से व्रत का विधि-विधान जान कर व्रत किय और उसे व्रत का फल मिला, अर्जुन सकुशल पर्वत पर तपस्या पूरी कर शीघ्र लौट आए।

पूजन-विधि: करवा चौथ के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान के स्वच्छ कपडे पहन कर करवा की पूजा-आराधना कर उसके साथ शिव-पार्वती कि पूजा का विधान हैं। क्योकि माता पार्वती नें कठिन तपस्या कर के शिवजी को प्राप्त कर अखंड सौभाग्य प्राप्त किया था। इस लिये शिव-पार्वती कि पूजा कि जाती हैं।

करवा चौथ के दिन चंद्रमा कि पूजा का धार्मिक और ज्योतिष दोनों ही द्रष्टि से महत्व है।

छांदोग्य उपनिषद् के अनुशार जो चंद्रमा में पुरुषरूपी ब्रह्मा कि उपासना करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे जीवन में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उसे लंबी और पूर्ण आयु कि प्राप्ति होती हैं।

ज्योतिष दृष्टि से चंद्रमा मन का कारक देवता हैं। अतः चंद्रमा चंद्रमा कि पूजा करने से मन की चंचलता पर नियंत्रित रहता हैं। चंद्रमा के शुभ होने पर से मन प्रसन्नता रहता हैं और मन से अशुद्ध विचार दूर होकर मन में शुभ विचार उत्पन्न होते हैं।

क्योकि शुभ विचार ही मनुष्य को अच्छे कर्म करने हेतु प्रेरित करते हैं। स्वयं के द्वारा किये गई गलती या एवं अपने दोषों का स्मरण कर पति, सास-ससुर और बुजुर्गो के चरणस्पर्श इसी भाव के साथ करें कि इस साल ये गलतियां फिर नहीं हों।

द्रोपदी ने भी किया था करवा चौथ का व्रत !

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुसार जब पांडव पुत्र अर्जुन नीलगिरी पर्वत पर तपस्या करने गए। तब किसी कारणसे अर्जुन को वहीं रूकना पड़ा। उस समय पांडवों पर अत्याधिक संकट आ पड़ा। तब चिंतित होकर द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया। श्रीकृष्ण प्रकट होने पर द्रौपदी ने पांडवों के कष्टों के निवारण का उपाय पूछा।

तब कृष्ण ने द्रौपदी को आश्वस्त करते हुए कहा मैं तुम्हारी चिंता एवं संकट का कारण जानता हूं। तुम्हें इन कष्टों के निवारण के लिए एक उपाय करना होगा। शीघ्र ही कार्तिक माह की कृष्ण चतुर्थी आने वाली है, उस दिन तुम पूर्ण विधि-विधान से इस करवा चतुर्थी का व्रत रखना। तुम भगवान शिव-पार्वती एवं गणेशजी की उपासना करना, तुम्हारे सारे कष्ट शीघ्र दूर हो जाएंगे। श्रीकृष्ण से व्रत का विधि-विधान जानकर द्रोपदी ने उसी प्रकार ही करवा चौथ का व्रत किया। जिस के फलस्वरुप शीघ्र ही द्रोपदी को अर्जुन के दर्शन हुए और द्रोपदी की सारी चिंताएं दूर हो गईं।

माता पार्वती नें भगवान शिव से पति की दीर्घायु एवं सुख-संपत्ति की कामना की विधि पूछी तब शिवजी ने माँ पार्वती को करवा चौथ व्रत की कथा सुनाई थी। जो करवा चौथ व्रत की कथा भगवान श्रीकृष्ण ने दौपदी को सुनाई थी वह इस प्रकार हैं...

करवा नाम की एक पतिव्रता धोबिन अपने पति के साथ तुंग भद्रा नदी के किनारे स्थित गांव में रहती थी। उसका पति बूढ़ा और निर्बल था। एक दिन जब धोबी नदी के किनारे कपड़े धो रहा था तभी वहां अचानक एक मगरमच्छ आया, और धोबी के पैर को अपने दांतों में दबाकर खींचने लगा। धोबी यह देख घबराया और जब उससे कुछ कहते नहीं बना तो वह अपनी पत्नी को करवा..! करवा..! कहकर पुकारने लगा।

पति की पुकार सुनकर उसकी पत्नी करवा वहां पहुंची, तो मगरमच्छ उसके पति को यमलोक पहुंचाने ही वाला था। तब करवा ने मगर को एक धागे से बांध दिया और मगरमच्छ को लेकर यमराज के द्वार पहुंची। वहाँ करवा ने यमराज से अपने पति की रक्षा करने की गुहार लगाई और साथ ही मगरमच्छ को उसके इस कार्य के लिए कठिन से कठिन दंड देने का आग्रह कर बोली- हे भगवन्! मगरमच्छ ने मेरे पति के पैर पकड़ लिए है। आप मगरमच्छ को इस अपराध का दंड दें। करवा की विनती सुन यमराज ने कहा अभी मगर की आयु शेष नहीं हुई है, मैं उसे अभी यमलोक नहीं भेज सकता। इस पर करवा ने यमराज से कहा यदि आपने मेरे पति को बचाने में मेरी सहायता नहीं कि तो मैं आपको श्राप दे दूंगी और नष्ट कर दूँगी।

करवा का साहस देख यमराज डर गए और मगर को यमलोक में भेज दिया। साथ ही करवा के पति को दीर्घायु होने का वरदान दिया। तब से कार्तिक कृष्ण की चतुर्थी को करवा चौथ व्रत का प्रचलित हैं।

यह करवा चौथ का व्रत आज भी विवाहित स्त्रीयां विधि-विधान के साथ करती है, और भगवान से अपने पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं।

धार्मिक कार्यों में कैसे करें माला चयन ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

साधाना मे मंत्र जप के लिये माला का विशेष महत्व होता है। विभिन्न प्रकार के कार्य की सिद्धि हेतु माला का चयन अपने कार्य उद्देश्य के अनुशार करने से साधक को अपने कार्य की सिद्धि जल्द प्राप्त होती हैं, क्योकी माला का चयन जिस इष्ट की साधना करनी हो, उस देवता से संबंधित पदार्थ से निर्मित माला का प्रयोग अत्याधिक प्रभाव शाली माना गया हैं।

देवी- देवता कि विषेश कृपा प्राप्ति के लिए उपयुक्त माला का चयन करना चाहिए-

लाल चंदन- (रक्त चंदन माला) गणेश, पुष्टि कर्म, दूर्गा, मंगल ग्रह कि शांति के लिए उत्तम है।

श्वेत चंदन- (सफेद चंदन माला) - लक्ष्मी एवं शुक्र ग्रह कि प्रसन्नता हेतु।

तुलसी- विष्णु, राम व कृष्ण कि पूजा अर्चना हेत॥

मूंग- लक्ष्मी, गणेश, हनुमान, मंगल ग्रह कि शांति के लिए उत्तम है।

मोती- लक्ष्मी, चंद्रदेव कि प्रसन्नता हेतु।

कमल गटटा- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

हल्दी - बगलामुखी एवं बृहस्पति (गुरु) कि प्रसन्नता हेतु।

काली हल्दी- दुर्भाग्य नाश, मां काली कि प्रसन्नता हेतु।

स्फटिक - लक्ष्मी, सरस्वती, भैरवी की आराधना के लिए श्रेष्ठ होती है।

चाँदी - लक्ष्मी, चंद्रदेव कि प्रसन्नता हेतु।

रुद्राक्ष - शिव, हनुमान कि प्रसन्नता हेतु।

नवरत्न - नवग्रहो कि शांति हेतु।

सुवर्ण- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

अकीक - (हकीक) कि माला का प्रयोग उसके रंगो के अनुरुप किया जाता हैं।

रुद्राक्ष एवं स्फटिक की माला सभी देवी- देता की पूजा उपासना में प्रयोग कियाजा सकता हैं।

विद्वानो ने मतानुशार रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती हैं। रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जाप करने से नवग्रहों के प्रभाव भी स्वतः शांत होने लगते हैं और मनुष्य के अनंत कोटी पातको का शमन होता हैं।

ग्रह शान्ति हेतु माला चयन:

1) सूर्य के लिए माणिक्य की माला, गारनेट, माला रुद्राक्ष, बिल्व की लकड़ी से बनी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
2) चन्द्र के लिए मोती, शंख, सीप की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
3) मंगल के लिए मूंगे या लाल चंदन की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
4) बुध के लिए पन्ना या कुशामूल की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
5) बृहस्पति के लिए हल्दी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
6) शुक्र के लिए स्फटिक की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
7) शनि के लिए काले हकीक या वैजयन्ती की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
8) राहु के लिए गोमेद या चन्द की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।
9) केतु के लिए हसुनिया या लाजवर्त की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

कार्तिक स्नान का आध्यात्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हेमाद्रि के अनुसार

किसी भी शुभकर्म या धार्मिक कार्य इत्यादि करने से पूर्व स्नान का विशेष महत्व होता है । इसके अलावा आरोग्य को बढाने और उसके रक्षण के लिये भी नित्य स्नान करना लाभदायक सिद्ध होता है ।

विशेष रूप से माघ, वैशाख और कार्तिक माह का नित्य स्नान अधिक महत्वपूर्ण होता है ।

मदन पारिजात के अनुसार

कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेंद्रिय:।

जपन् हविष्यभुक्छान्त: सर्वपापै: प्रमुच्यते॥

अर्थात् : कार्तिक मास में जितेन्द्रिय रहकर नित्य स्नान कर एवं हविष्य (जौ, गेहूँ, मूँग, तथा दूध-दही और घी इत्यादि) का एकबार भोजन करे तो सब पाप दूर हो जाते हैं।

इस व्रत को आश्विन मास की पूर्णिमा से प्रारंभ करके 31 वें दिन कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन समाप्त करे। स्नान के लिये घरके बर्तनों मे रखे पानी की अपेक्षा कुँआ, बावली या तालाब आदि उत्तम होते हैं और कुँए आदि के पानी की अपेक्षा पवित्र तीर्थों का स्नान अति उत्तम हैं ।

पवित्र तीर्थ स्नान पर स्नान से पूर्व पानी में प्रवेश करने से पूर्व अपने हाथ - पाँव जलाशय के बाहार स्वच्छ करलें। तत्पश्चात शिखा बंधक कर जल एवं कुश से संकल्प करने के पश्चात ही स्नान हेतु प्रवेश करें।

अंगिरा के अनुसार संकल्प हेतु कुश

विना दर्भेश्च यत् स्नानं यच्च दानं विनोदकम्।

असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत्॥

अर्थात् : स्नानमें कुश, दानमें संकल्प का और जप में संख्या न हो तो ये सब फलदायक नहीं होते ।

पुरातन काल से ही हिन्दू धर्म की परंपरा रही हैं की हमारे यहाँ प्रातः धार्मिक तिर्थ की पवित्र नदि, तालाव इत्यादि के जल से स्नान किया जाता हैं। विभिन्न प्रकार के व्रत-स्नान-दानादि धार्मिक कार्य किये जाते हैं। कार्तिक मास में संध्या काल दीपक जलानें की परंपरा हैं।

अहोई अष्टमी 21-अक्टूबर-2019

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अहोई अष्टमी व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन किया जाता है। विद्वानों के मतानुसार पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अहोई अष्टमी व्रत में स्त्रीयां अपनी संतान की लम्बी आयु और सुखमय जीवन की कामना से यह व्रत में दिन भर उपवास रखती हैं और सायंकाल तारों का दय के समय होई का पूजन किया जाता है। तारों को करवा से अर्घ्य देने का विधान है। पूजन हेतु होई को गेरु आदि के द्वारा दीवार पर बनाई जाती है अथवा किसी मोटे वस्त्र पर होई काढकर पूजा के समय उसे दीवार पर टांग दिया जाता है।

होई के चित्रांकन में ज्यादातर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है। उसी के पास साही तथा उसके बच्चों की आकृतियां बना दी जाती हैं।

विभिन्न अंचलों में अहोईमाता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार अंतर हो जाता है। धनाढ्य घर की स्त्रीयां चांदी की होई बनवा कर उसका पूजन करती हैं। जमीन पर गोबर से लीपकर कलश की स्थापना होती है। अहोईमाता की पूजन करके उन्हें दूध-चावल का भोग लगाया जाता है। तत्पश्चात एक पाटे पर जल से भरा लोटा रखकर अहोईअष्टमी की कथा सुनी जाती है। पौराणिक ग्रंथों में अहोईअष्टमी की कथ का उल्लेख मिलता हैं।

कथा : प्राचीन काल में एक साहुकार था, जिसकी एक बेटी, सात बेटे और सात बहुएं थी। साहुकार बेटी दीपावली में ससुराल से मायके आई थी। दीपावली में घर को लीपने के लिए घर की सातों बहुएं मिट्टी लाने जंगल में गई तो साहुकार बेटी भी उनके साथ हो ली। साहुकार की बेटी जहां मिट्टी निकाल रही थी उस स्थान पर स्याहु (स्याही) नामक जीव अपनी सात बेटों से साथ रहती थी। मिट्टी निखालते हुए ग़लती से साहूकार की बेटी की खुरपी के चोट से स्याहु (स्याही) का एक बच्चा मर गया। इस पर क्रोधित होकर स्याहू बोली मैं तुम्हारी कोख बांधूंगी।

स्याहु (स्याही) की वाणी सुनकर साहूकार की बेटी, अपनी सातों भाभीयों को बारी-बारी से विनती करती हैं कि वह उसके बदले अपनी कोख बंधवा लें। तब सबसे छोटी भाभी ननद के बदले अपनी कोख बंधवाने के लिए तैयार हो जाती है। कथा कहती हैं, इसके फल स्वरुप छोटी भाभी के जो बच्चे होते हैं वे सात दिन बाद मर जाते हैं। सात पुत्रों की इस प्रकार मृत्यु होने के बाद उसने गाँव के पंडित को बुलवाकर इसका कारण पूछा। पंडित ने सुरही गाय की सेवा करने की सलाह दी।

सुरही गाय बहु की सेवा से प्रसन्न होती है और उसे स्याहु (स्याही) के पास ले जाती है। रास्ते में थक जाने पर दोनों आराम करने लगते हैं अचानक साहुकार की छोटी बहू की नज़र एक तरफ जाती हैं, वह देखती है कि एक सांप गरूड़ पंख के बच्चे को डंसने जा रहा है और वह सांप को मार देती है। इतने में गरूड़ पंख वहां आ जाता है और खून बिखरा हुआ देखकर उसे लगता है कि छोटी बहु ने उसके बच्चे के मार दिया है इस पर वह छोटी बहू को चोंच मारना शुरू कर देता है। छोटी बहू इस पर कहती है कि उसने तो उसके बच्चे की जान बचाई है। गरूड़ पंख इस पर खुश होती है और सुरही सहित उन्हें स्याहु (स्याही) के पास पहुंचा देती है।

वहां स्याहु (स्याही) छोटी बहू की सेवा से प्रसन्न होकर उसे सात पुत्र और सात बहु होने का अशीर्वाद देती है। स्याहु (स्याही) के आशीर्वाद से छोटी बहु का घर पुत्र और पुत्र वधुओं से हरा भरा हो जाता है।

अहोईअष्टमी के व्रत में चन्द्रोदय-व्यापिनी कार्तिक कृष्ण अष्टमी को चुना जाता है। 21 अक्टूबर 2019 रात्रिव्यापिनी अष्टमी होने से शास्त्रीय निर्देश के अनुसार अहोई अष्टमी का व्रत इसी दिन करना चाहिए।

रमा एकादशी (रम्भा एकादशी) व्रत कथा 24-अक्टूबर-2019

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कार्तिक : कृष्ण पक्ष एकादशी

अर्जुन ने भगवान् श्री कृष्ण से कहा हे भगवन् ! कृप्या मुझे कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइए। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इसमें किस देवता का पूजन किया जाता है । इस एकादशी का व्रत करने से क्या फल मिलता है ? कृपा करके यह सब विस्तारपूर्वक बताएं।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले हे अर्जुन ! कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा ह। इसके व्रत से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं ।

व्रत की कथा तुम ध्यान से सुनों

प्राचीनकाल में मुचुकुन्द नाम का एक राजा राज्य करता था । इन्द्र, वरूण, कुबेर आदि देवगण उसके मित्र थे । वह बड़ा सत्यवादी तथा भगवान् विष्णु का भक्त था । उसका राज्य सभी प्रकार से संपन्न था । राजा की चन्द्रभागा नामक एक कन्या थी जिसका विवाह उसने राजा चन्द्रसेन के पुत्र सोभन से करवा दिया । चन्द्रभागा राजा एकादशी का व्रत बड़े ही नीति-नियम के साथ करता था और अपने राज्य में सभी लोग यथा संभव कठोरता से इस नियम का पालन करते थे । एक बार की बात है कि सोभन कार्तिक महीने में अपने ससुराल आया था। उसी दौरान अतिपुण्यदायिनी रमा एकादशी आ गई । राज्य के नियम के अनुसार इस दिन सभी व्रत रखते थे । राजा की कन्या चन्द्रभागा ने सोचा कि मेरे पति तो व्रत-कर्म इत्यादि कार्यों में बड़े कमजोर हैं, वे एकादशी का व्रत कैसे करेंगे ! जबकि पिता के यहां तो सभी को व्रत करने का नियम है ।

मेरे पति ने यदि राजाज्ञा मानी, तो उन्हें बहुत कष्ट होगा । नियमानुसार राजा ने आज्ञा जारी की कि सारी प्रजा विधि-विधान पूर्वक एकादशी का व्रत करे । जब दशमी आई तब राज्य में ढिंढोरा पिटा, उसे सुनकर सोभन अपनी पत्नी के पास गया और बोला हे प्रिये ! तुम मुझे कुछ उपाय बतलाओ क्योंकि मैं व्रत नहीं कर सकता, यदि मैं व्रत करुंगा तो जीवित नहीं रह सका ।

पति की बात पर चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! मेरे पिताजी के राज्य में एकादशी के दिन कोई भी भोजन नहीं कर सकता । यहां तक कि प्राणी-पशु-पक्षी आदि भी घास, अन्न, जल आदि ग्रहण नहीं करते; फिर भला मनुष्य कैसे भोजन कर सकता हैं ? यदि आप व्रत नहीं कर सकते तो किसी दूसरे राज्य में चले जाइए । क्योंकि यदि आप यहां रहें तो आपको व्रत अवश्य ही करना पड़ेगा ।

चन्द्रभागा बात पर सोभन ने कहा हे प्रिये ! तुम्हारा सुझाव उचित है । किन्तु मैं व्रत के डर से किसी दूसरे स्थान पर नहीं जाऊंगा अब मैं यह व्रत अवश्य ही करुंगा, परिणाम चाहे कुछ भी हो, भाग्य में लिखा कौन मिटा सकता है ।

उसने एकादशी का व्रत किया लेकिन दिन बीतते-बीतते सोभन भूख और प्यास से अत्यन्त व्याकुल होने लगा । सूर्य अस्त होया और रात्रि जागरण का समय आ गया। लेकिन रात्रि सोभन को अत्याधिक कष्ट देने वाली थी । दूसरे दिन का सूर्योदय होने से पूर्व ही भूख-प्यास से सोभन के प्राण निकल गए ।

राजा ने सोभन के मृत शरीर को जल-प्रवाह करा दिया और अपनी पुत्री को आज्ञा दी कि वह सती न हो कर भगवान् विष्णु पर भरोसा रखे ।

चन्द्रभागा अपने पिता की आज्ञानुसार सती नहीं हुई । वह अपने पिता के घर रहकर नीति-नियम से एकादशी के व्रत करने लगी ।

उधर रमा एकादशी के प्रभाव से सोभन को जल से निकाल लिया गया और भगवान् विष्णु की कृपा से उसे नया जीवन प्राप्त हुवा और उसे मन्दराचल पर्वत पर धन-धान्य से युक्त देवपुर नाम का एक उत्तम नगर राजा बना दिया गया । सोभन स्वर्ण तथा रत्नजड़ित सिंहासन पर सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण

धारण किए बैठता और गन्धर्व तथा अप्सरा नृत्य कर उसकी स्तुति करतेथे । उस समय राजा सोभन इन्द्र के समान प्रतीत हो रहा था ।

उस समय मुचुकुन्द नगर का सोमशर्मा नाम का एक ब्राह्मण तीर्थयात्रा के लिए निकला। जो घूमते-घूमते सोभन के राज्य में जा पहुंचा, सोभन को देखा । वह ब्राह्मण सोभनको अपने राज्य के राजा का जमाई जानकर उसके निकट गया । राजा सोभन ब्राह्मण को देख आसन से उठ खड़ा हुआ और अपने ससुर तथा स्त्री चन्द्रभागा के कुशल-मंगल पूछने लगा ।

सोमशर्मा बोला हे राजन् ! हमारे राजा तथा आपकी पत्नी चन्द्रभागा दोनों कुशल है । अब आप अपना वृत्तान्त बतलाइए । आपने तो रमा एकादशी के दिन अन्न-जल ग्रहण न करने के कारण प्राण त्याग दिए थे । मुझे बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा सुंदर नगर आपको किस प्रकार प्राप्त हुआ ?

सोभन बोला हे ब्राह्मण देव ! यह सब कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी के व्रत का फल है । इसी से मुझे यह सुंदर नगर प्राप्त हुआ है, लेकिन यह अस्थिर है ।

इस पर ब्राह्मण बोला हे राजन् ! यह अस्थिर क्यों है और स्थिर किस प्रकार हो सकता है, आप मुझे समझाइए । यदि इसके स्थिर करने के लिए मैं कुछ कर सका तो वह उपाय मैं अवश्य ही करुंगा ।

सोभन बोला हे देव ! मैंने वह व्रत विवश होकर तथा श्रद्धारहित किया था । उसके प्रभाव से मुझे यह अस्थिर नगर प्राप्त हुआ हैं, लेकिन यदि आप इस वृत्तान्त को में पत्नी चन्द्रभागा से कहोगे तो वह इसको स्थिर कर सकती है ।

ब्राह्मण अपने नगर लौटकर उसने चन्द्रभागा से समस्त वृत्तान्त कहा । इस पर राजकन्या चन्द्रभागा बोली हे ब्राह्मण देव ! आप क्या वह सब आप देखकर आये हैं ! या अपना स्वप्न में देखा दृश्य कह रहे हैं ?

ब्राह्मण बोला हे पुत्री ! मैंने तेरे पति सोभन तथा उसके नगर को प्रत्यक्ष देखा है, परन्तु वह नगर अस्थिर है । तूम कोई ऐसा उपाय करो जिससे कि वह स्थिर हो जाय ।

चन्द्रभागा बोली हे महाराज ! आप मुझे उस नगर में ले चलिए, मैं अपने पति को देखना चाहती हूं । मैं अपने व्रत के प्रभाव से उस नगर को स्थिर कर लूंगी ।

चन्द्रभागा के बात को सुनकर ब्राह्मण उसे वामदेवजी के आश्रम में ले गया । वामदेवजी ने उसके वृत्तान्त को सुनकर चन्द्रभागा का मन्त्रों से अभिषेक किया । चन्द्रभागा मन्त्रों तथा व्रत के प्रभाव से दिव्य देह धारण करके पति के पास गई । सोभन ने अपनी स्त्री चन्द्रभागा को देखकर उसे प्रसन्नतापूर्वक आसन पर अपने पास बैठा लिया ।

चन्द्रभागा बोली हे प्राणनाथ ! अब आप मेरे एकादशी व्रत के पुण्य को सुनिए, जब मैं अपने पिता के गृह में आठ वर्ष की थी, तब ही से मैं पूर्ण विधि-विधान से एकादशी का व्रत कर रही हूं । उन्हीं व्रतों के प्रभाव से आपका यह नगर स्थिर हो जाएगा जो अब प्रलय के अन्त तक स्थिर रहेगा। चन्द्रभागा दिव्यरुप धारण करके तथा दिव्य वस्त्र-अलंकारों से सुशोभित होकर अपने पति के साथ मन्दराचल पर्वत पर सुखपूर्वक रहने लगी ।

हे पार्थ ! यह रमा एकादशी का विशेष माहात्म्य है । जो मनुष्य रमा एकादशी के व्रत को विधि-विधान से करते हैं, उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य रमा एकादशी का माहात्म्य सुनते हैं, वह अन्त समय विष्णुलोक को जाते हैं ।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दु:खदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्रेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।
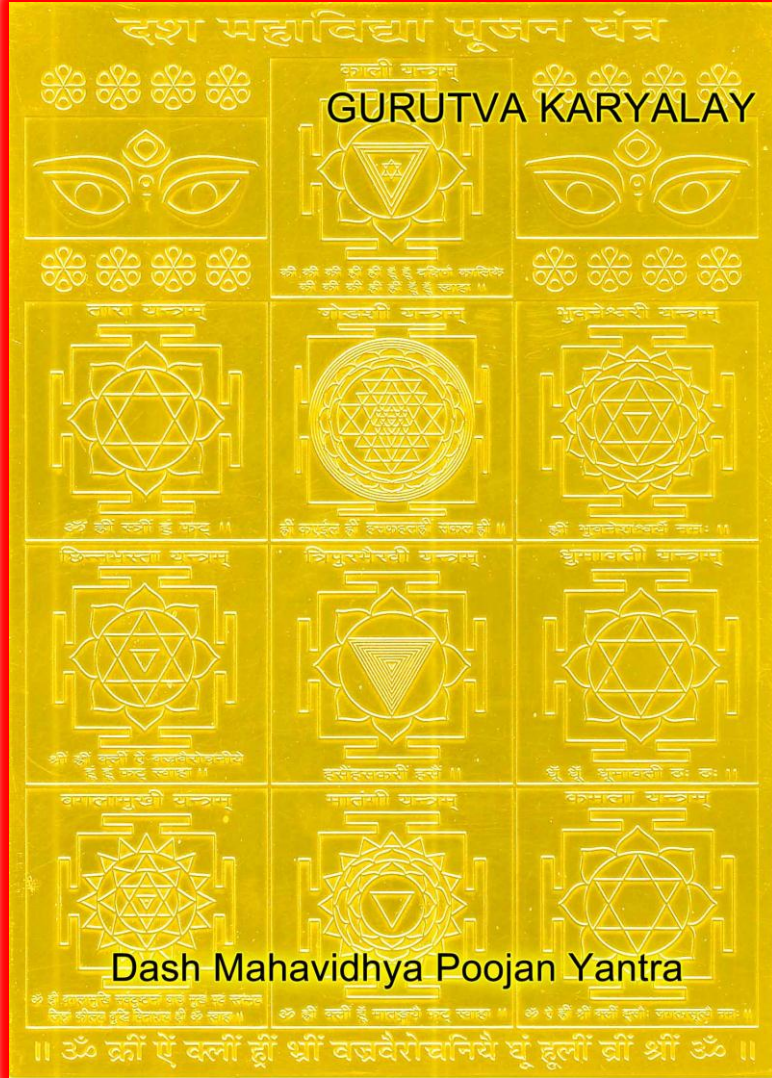
दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा			
पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online** | **Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	550	1” X 1”	370	1” X 1”	325
2” X 2”	910	2” X 2”	640	2” X 2”	550
3” X 3”	1450	3” X 3”	1050	3” X 3”	910
4” X 4”	2350	4” X 4”	1450	4” X 4”	1225
6” X 6”	3700	6” X 6”	2800	6” X 6”	2350
9” X 9”	9100	9” X 9”	4600	9” X 9”	4150
12” X12”	12700	12” X12”	9100	12” X12”	9100

अक्टूबर 2019 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	मंगल	आश्विन	शुक्ल	तृतीया	14:03	स्वाति	14:20	वैधृति	08:23	गर	14:03	तुला	-
2	बुध	आश्विन	शुक्ल	चतुर्थी	11:51	विशाखा	12:51	प्रीति	26:40	विष्टि	11:51	तुला	07:10
3	गुरु	आश्विन	शुक्ल	पंचमी	10:25	अनुराधा	12:09	आयुष्मान	24:48	बालव	10:25	वृश्चिक	-
4	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	षष्ठी	09:51	जेष्ठा	12:18	सौभाग्य	23:38	तैतिल	09:51	वृश्चिक	12:19
5	शनि	आश्विन	शुक्ल	सप्तमी	10:08	मूल	13:18	शोभन	23:07	वणिज	10:08	धनु	-
6	रवि	आश्विन	शुक्ल	अष्टमी	11:13	पूर्वाषाढ़	15:03	अतिगंड	23:10	बव	11:13	धनु	21:36
7	सोम	आश्विन	शुक्ल	नवमी	12:56	उत्तराषाढ़	17:24	सुकर्मा	23:41	कौलव	12:56	मकर	-
8	मंगल	आश्विन	शुक्ल	दशमी	15:07	श्रवण	20:11	धृति	24:30	गर	15:07	मकर	-
9	बुध	आश्विन	शुक्ल	एकादशी	17:33	धनिष्ठा	23:11	शूल	25:28	विष्टि	17:33	मकर	09:42
10	गुरु	आश्विन	शुक्ल	द्वादशी	20:03	शतभिषा	26:13	गंड	26:28	बव	06:48	कुंभ	-
11	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	त्रयोदशी	22:28	पूर्वाभाद्रपद	29:9	वृद्धि	27:23	कौलव	09:17	कुंभ	22:27
12	शनि	आश्विन	शुक्ल	चतुर्दशी	24:40	उत्तराभाद्रपद	-	ध्रुव	28:8	गर	11:36	मीन	-
13	रवि	आश्विन	शुक्ल	पूर्णिमा	26:37	उत्तराभाद्रपद	07:52	व्याघात	28:41	विष्टि	13:41	मीन	-
14	सोम	कार्तिक	कृष्ण	प्रतिपदा	28:16	रेवति	10:19	हर्षण	29:1	बालव	15:29	मीन	10:21
15	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	29:37			वज्र	29:5	तैतिल	16:59	मेष	-

16	बुध	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	-	भरणी	14:20	सिद्धि	28:54	वणिज	18:09	मेष	20:46
17	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	06:37	कृतिका	15:51	व्यतिपात	28:24	विष्टि	06:37	वृष	-
18	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	07:15	रोहिणि	16:58	वरियान	27:34	बालव	07:15	वृष	-
19	शनि	कार्तिक	कृष्ण	पंचमी	07:28	मृगशिरा	17:40	परिग्रह	26:22	तैतिल	07:28	वृष	05:24
20	रवि	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	07:13	आद्रा	17:51	शिव	24:44	वणिज	07:13	मिथुन	-
21	सोम	कार्तिक	कृष्ण	सप्तमी-अष्टमी	06:44-29:09	पुनर्वसु	17:31	सिद्ध	22:39	बालव	17:52	मिथुन	11:41
22	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	नवमी	27:18	पुष्य	16:38	साध्य	20:07	तैतिल	16:17	कर्क	-
23	बुध	कार्तिक	कृष्ण	दशमी	24:56	आश्लेषा	15:12	शुभ	17:08	वणिज	14:10	कर्क	15:13
24	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	एकादशी	22:07	मघा	13:17	शुक्ल	13:45	बव	11:34	सिंह	-
25	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	द्वादशी	18:59	पूर्वाफाल्गुनी	10:59	ब्रह्म	10:03	कौलव	08:35	सिंह	16:23
26	शनि	कार्तिक	कृष्ण	त्रयोदशी	15:40	उत्तराफाल्गुनी	08:27	वैधृति	26:8	वणिज	15:40	कन्या	-
27	रवि	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्दशी	12:19	चित्रा	27:16	विषकुंभ	22:11	शकुनि	12:19	कन्या	1632
28	सोम	कार्तिक	कृष्ण	अमावस्या/प्रतिपदा	09:08/30:16	स्वाति	24:59	प्रीति	18:24	नाग	09:08	तुला	-
29	मंगल	कार्तिक	शुक्ल	द्वितीया	27:53	विशाखा	23:10	आयुष्मान	14:57	बालव	17:00	तुला	17:36
30	बुध	कार्तिक	शुक्ल	तृतीया	26:10	अनुराधा	21:58	सौभाग्य	11:58	तैतिल	14:57	वृश्चिक	-
31	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	चतुर्थी	25:13	जेष्ठा	21:30	शोभन	09:32	वणिज	13:36	वृश्चिक	21:32

अक्टूबर 2019 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	मंगल	आश्विन	शुक्ल	तृतीया	14:03	तृतीय नवरात्र, सिंदूर तृतीया, 14:03 पश्चयात अपराह्नकालीन वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चंद्रोस्त 20:16 बजे), माना चतुर्थी (प.बंगाल, ओड़ीसा), रथोत्सव चतुर्थी,
2	बुध	आश्विन	शुक्ल	चतुर्थी	11:51	सूर्योदय व्यापिनी चतुर्थ नवरात्र, वरदविनायक चतुर्थी व्रत 11:51 तक, माना चतुर्थी (प.बंगाल, ओड़ीसा), रथोत्सव चतुर्थी, महात्मा गांधी जयंती, शास्त्री जयंती,
3	गुरु	आश्विन	शुक्ल	पंचमी	10:25	पंचम नवरात्र, उपांग ललिता पंचमी व्रत,
4	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	षष्ठी	09:51	छठा नवरात्र, स्कन्द (कुमार) षष्ठी व्रत, बिल्वाभिमंत्रण षष्ठी, शारदीय दुर्गा पूजा प्रारम्भ, गजगौरी व्रत, तपषष्ठी (ओड़ीसा),
5	शनि	आश्विन	शुक्ल	सप्तमी	10:08	सप्तम नवरात्र, माँ सरस्वती आह्वान, शारदीय दुर्गापूजा (प.बंगाल), पत्रिका-प्रवेश, महासप्तमी व्रत, महानिशा पूजा, भानु-सप्तमी पर्व (सूर्यग्रहण तुल्य फलप्रद),
6	रवि	आश्विन	शुक्ल	अष्टमी	11:13	अष्टम नवरात्र, श्रीदुर्गा अष्टमी व्रत, महाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णाष्टमी व्रत, अन्नपूर्णा माता दर्शन-पूजन एवं परिक्रमा (काशी), भद्रकाली अष्टमी, सरस्वती पूजन, सूर्य सिद्धान्तानुसार महानिशा पूजन, कुमारिका-पूजन,
7	सोम	आश्विन	शुक्ल	नवमी	12:56	नवम नवरात्र, दुर्गा महानवमी व्रत, दुर्गा नवमी, सरस्वती विसर्जन, त्रिशूलनी पूजन (मिथिलांचल), एकवीरा पूजा, नवरात्र व्रत पूर्ण,
8	मंगल	आश्विन	शुक्ल	दशमी	15:07	विजया दशमी, दशहरा, शमी एवं अपाजिता-पूजा, सीमोल्लंघन, शस्त्र पूजन, बौद्धावतार दशमी, साईंबाबा महासमाधि दिवस, माधवाचार्य जयंती, श्रीमहाकालेश्वर की सवारी (उज्जयिनी), विजय मुहूर्त में प्रस्थान, संयुक्त राष्ट्र दिवस

9	बुध	आश्विन	शुक्ल	एकादशी	17:33	पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप,
10	गुरु	आश्विन	शुक्ल	द्वादशी	20:03	पद्मनाभ द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, पक्षवर्धिनी महाद्वादशी व्रत,
11	शुक्र	आश्विन	शुक्ल	त्रयोदशी	22:28	प्रदोष व्रत,
12	शनि	आश्विन	शुक्ल	चतुर्दशी	24:40	वाराह चतुर्दशी, शाकम्भरी देवी मेला
13	रवि	आश्विन	शुक्ल	पूर्णिमा	26:37	स्नान-दान-व्रत हेतु उत्तम आश्विनी पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, कोजागिरी लक्ष्मी पूजा, लक्ष्मी एवं इन्द्र पूजन, महारास पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि जयंती, श्रीसत्यनारायण व्रत-कथा, कुमार पूर्णिमा (ओड़ीसा), नवान्न पूर्णिमा, डाकोर जी का मेला (गुजरात), कार्तिक स्नान प्रारंभ,
14	सोम	कार्तिक	कृष्ण	प्रतिपदा	28:16	पवित्र कार्तिक मास प्रारंभ, दामोदर मास प्रारंभ, शास्त्रोक्त मत से चातुर्मास के व्रती के लिए कार्तिक में दाल खाना वर्जित, कार्तिक मास के लिए आकाशदीप-दान प्रारंभ, कार्तिक में मासपर्यन्त तुलसीदल से श्रीहरि की पूजा करना उत्तम, तुलसी माता को पूरे मास दीप-दान करें।
15	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	द्वितीया	29:37	अशून्य शयन व्रत,
16	बुध	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	-	-
17	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	तृतीया	06:37	सुबह 06:37 बजे पश्चयात संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चं. उदय 20:16), करवाचौथ व्रतोत्सव, दशरथ चतुर्थी (प.बंगाल)
18	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	07:15	तुला संक्रान्ति रात 01:19 बजे, तुला संक्रान्ति पुण्य काल सुबह 06:23 से सुबह 08:18 तक (01 घण्टा 54 मिनट)
19	शनि	कार्तिक	कृष्ण	पंचमी	07:28	
20	रवि	कार्तिक	कृष्ण	षष्ठी	07:13	-
21	सोम	कार्तिक	कृष्ण	सप्तमी-अष्टमी	06:44-29:09	कालाष्टमी व्रत, कराष्टमी (महाराष्ट्र), अहोई अष्टमी व्रत, बहुलाष्टमी, दाम्पत्याष्टमी व्रत, श्रीराधाकुण्ड अष्टमी

22	मंगल	कार्तिक	कृष्ण	नवमी	27:18	-
23	बुध	कार्तिक	कृष्ण	दशमी	24:56	-
24	गुरु	कार्तिक	कृष्ण	एकादशी	22:07	रमा (रम्भा) एकादशी व्रत,
25	शुक्र	कार्तिक	कृष्ण	द्वादशी	18:59	गोवत्स द्वादशी (गौ-बछड़ा बारस) व्रत 18:59 बजे तक, पश्चयात धनत्रयोदशी, धनतेरस, धन्वन्तरि जयंती, प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्र प्रारंभ, यमपंचक-दीपदान प्रारंभ
26	शनि	कार्तिक	कृष्ण	त्रयोदशी	15:40	सूर्योदय व्यापिनी धनत्रयोदशी, धनतेरस 15:40 बजे तक , पश्चयात मासिक शिवरात्रि व्रत(शिव चतुर्दशी), नरकहरा चतुर्दशी (नरका चौदस), काली चतुर्दशी, काली चौदस, काळीचौदस, श्रीहनुमान जयंती, माँ धूमावती जयंती (तांत्रिक पंचांगानुसार), यम तर्पण, रुपचतुर्दशी (रात्रि के अंतिम प्रहर में अभ्यंग स्नान)
27	रवि	कार्तिक	कृष्ण	चतुर्दशी	12:19	12:19 बजे पश्चयात दीपावली, दीपोत्सव, श्रीगणेश-लक्ष्मी-कुबेर का पूजन, लक्ष्मी पूजा, कमला महाविद्या जयंती, कार्तिकी अमावस्या, गौरी-केदार व्रत (द.भा.), श्रीमहावीर स्वामी निर्वाण उत्सव (जैन), स्वामी रामतीर्थ की जन्मतिथि एवं पुण्यतिथि, दयानंद स्मृति दिवस, भौमवती अमावस,
28	सोम	कार्तिक	कृष्ण	अमावस्या/ प्रतिपदा	09:08/ 30:16	सूर्योदय व्यापिनी कार्तिकी अमावस्या स्नान-दान हेतु उत्तम, 09:08 बजे पश्चयात अन्नकूट, गोवर्द्धन पूजन, बलि पूजा, गो संवर्धन सप्ताह प्रारंभ, गुजराती नववर्ष सम्वत् 2076 प्रारंभ, भगवान महावीर निर्वाण सम्वत् 2546 प्रारंभ, नेपाली नववर्ष सम्वत् 1140 प्रारंभ,
29	मंगल	कार्तिक	शुक्ल	द्वितीया	27:53	भइया दूज, भाई बीज, नवीन चंद्र दर्शन, यमद्वितीया स्नान, चित्रगुप्त पूजन,
30	बुध	कार्तिक	शुक्ल	तृतीया	26:10	-
31	गुरु	कार्तिक	शुक्ल	चतुर्थी	25:13	वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चन्द्रोस्त 20:23 बजे), दूर्वागणपति व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत प्रारंभ (मिथिलांचल), 3 दिन की छठपूजा शुरू- नहाय खाय

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‍भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‍भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

अक्टूबर 2019 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग		त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)	
2	दोपहर 12:52 से अगले दिन सूर्योदय तक	20	संध्या 05:52 से अगले दिन सूर्योदय तक
3	सूर्योदय से दोपहर 12:10 तक	29	सूर्योदय से रात 11:11 तक
6	दोपहर 03:03 से अगले दिन सूर्योदय तक	विघ्नकारक भद्रा	
7	संध्या 05:25 से अगले दिन सूर्योदय तक	2	रात 00:42 से अगले दिन 11:40 तक (स्वर्ग)
13	सूर्योदय से सुबह 07:52 तक	5	सुबह 09:51 से रात 10:17 तक (पाताल)
15	सूर्योदय से दोपहर 12:30 तक	9	प्रातः 04:03 से संध्या 05:19 तक (पृथ्वी)
16	दोपहर 02:21 से अगले दिन सूर्योदय तक	13	रात 00:36 से बजे दोपहर 01:39 तक (पृथ्वी)
21	संध्या 05:32 से अगले दिन सूर्योदय तक	16	संध्या 06:19 से अगले दिन 06:48 तक (स्वर्ग)
22	दोपहर 04:38 से अगले दिन सूर्योदय तक	20	सुबह 07:30 से रात 07:11 तक (स्वर्ग)
25	सूर्योदय से दिन 11:00 तक	23	दोपहर 02:25 से देर रात 01:09 तक (पृथ्वी)
30	सूर्योदय से रात 09:59 तक	26	दोपहर 03:46 से देर रात 02:04 तक (पाताल)
		31	दोपहर 01:25 से देर रात 01:01 तक (पाताल)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach …………………………………	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………………………………..	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach …………………………	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………………………………	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach …………………………………	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach …………………………………	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………..	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ………………………………	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………………………………	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach …………………………………	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………………………………	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………………………………..	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ……………………………	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ……….……	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach …………………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………………………………….	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………………………………	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach …………………….	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach …………………………..	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ……………………………...	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ……………………………….	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ……………	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………………………………………	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………………………	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……………	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach …………………………..	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ………………………………………	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach …………………………	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………………………………..	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……………………..	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………………………………..	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ………………………	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach …………………………..	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ………………………..	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ………………………………..	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……………………………...	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach …………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……………………………..	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ………………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ………………………………..	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach …………………………….	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach …………………………………..	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……………………………...	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ………………………………...	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……………………………..	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ………………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach …………………………..	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ……………………………….	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach …………………………….	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ……………………...	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

अक्टूबर 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो 100% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।

जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

OCT -2019